झरोखा

भाग – 2

(सेतु पाठ्यक्रम पर आधारित हिंदी की पाठ्यपुस्तक)

स्तर – II

कक्षा – 4 एवं 5

2022

शिक्षा का अधिकार

समग्र शिक्षा

सबको शिक्षा, अच्छी शिक्षा

SCERT

स्वाध्यायान्मा प्रमदः

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद

वरुण मार्ग, डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली–110024

ISBN: 978-93-85943-31-7

प्रथम संस्करण: 2015

मार्च, 2022 (संशोधित संस्करण)

© राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, दिल्ली

4700 Copies

प्रकाशन:

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद

वरूण मार्ग, डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली - 110024

मुद्रक:-

मैसर्स राज प्रिंटर्स

ए-9, सैक्टर बी-2, ट्रोनिका सिटी, गाजियाबाद (उ.प्र.)

Rajanish Singh
Director

State Council of Educational Research and Training
(An autonomous Organisation of GNCT of Delhi)
Varun Marg, Defence Colony, New Delhi-110024
Tel.: +91-11-24331356, Fax : +91-11-24332426
E-mail : dir12scert@gmail.com

Date : 22/3/22

D.O. No. : F10(13)/DR/DIR/SCERT/421

सन्देश

शिक्षा सभी बच्चों का मौलिक अधिकार है। अच्छी शिक्षा सदैव बच्चों के उज्जवल भविष्य का निर्माण करती है। यह बच्चों को ज्ञानात्मक सूचनाएं प्रदान करने के साथ बच्चे के मानसिक, शारीरिक और आत्मिक स्तर को सुधारने में भी मदद करती है। शिक्षा प्राप्ति में पुस्तकों का महत्वपूर्ण योगदान है।

इसी को ध्यान में रखकर राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली ने विशेष प्रशिक्षण केंद्रों के विद्यार्थियों के लिए 18 पाठ्य-पुस्तकों का निर्माण किया है। इन पाठ्य-पुस्तकों का मुख्य उद्देश्य यह है कि 'बच्चे विद्यालय में एवं विद्यालय के बाहर सीखने के लिए प्रोत्साहित हों और उनमें आत्मविश्वास की भावना जागृत हो।' बच्चों की आवश्यकतानुसार इन पुस्तकों में कुछ महत्वपूर्ण बदलाव किये गए है जिससे बच्चों को सरलता एवं रोचकता का अनुभव होगा।

आशा है यह पठन सामग्री बच्चों का मार्गदर्शन कर उनके समग्र विकास में मदद करेगी।

(रजनीश सिंह)

SCERT
स्वाध्यायान्मा प्रमदः

Dr. Nahar Singh
Joint Director (Academic)

State Council of Educational Research and Training
(An autonomous Organisation of GNCT of Delhi)
Tel. : +91-11-24336818, 24331355, Fax : +91-11-24332426
Tel.: +91-11-24331355, Fax : +91-11-24332426
E-mail : jdscertdelhi@gmail.com

Date : 22/03/2022

D.O. No. : F.11(2)JDB/Acad/Misc./SCERT/2021-22/2187

सन्देश

शिक्षा का अधिकार कानून 2009 के अंतर्गत 6 से 14 वर्ष तक के बच्चों के लिए निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा का प्रावधान है। इसी कानून की धारा 4 के अनुसार विद्यालयी शिक्षा से वंचित बच्चों को विशेष प्रशिक्षण केंद्रों में शिक्षा लेने का अवसर प्रदान कर उन्हें आयु अनुसार कक्षा के उपयुक्त बनाना है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-२०२० के अनुसार प्रत्येक 3 से 18 आयु वर्ग के बच्चे को गुणवत्तापूर्ण व समतामूलक शिक्षा प्रदान करने का पूर्ण दायित्व राज्य सरकार का है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति बच्चों में साक्षरता और संख्या ज्ञान जैसी 'बुनियादी क्षमताओं' के साथ-साथ 'उच्चतर स्तर' की तार्किक और समस्या-समाधान संबंधी संज्ञानात्मक क्षमताओं का विकास करने पर बल देने के साथ-साथ शिक्षार्थियों के सभी जीवन पक्षों और क्षमताओं के संतुलित विकास पर भी ज़ोर देती है।

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली द्वारा विशेष प्रशिक्षण केंद्र (एस. टी.सी.) के विद्यार्थियों हेतु जिस शिक्षण-अधिगम सामग्री को विकसित किया गया था, उनमें नई शिक्षा नीति के आधार पर छात्रों के समग्र विकास के लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए सुधार किये गए हैं। इससे बच्चों का सर्वांगीण एवं सर्वोत्कृष्ट विकास होगा जिसके द्वारा बच्चों के ज्ञान एवं कौशल में वृद्धि कर उन्हें परिष्कृत नागरिक बनाया जा सकेगा।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के निहित लक्ष्यों के संदर्भ में पाठ्य-पुस्तक को आदर्श बनाने के लिए सभी शिक्षकों का धन्यवाद्।

मुझे पूर्ण आशा है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में निमित उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए विभिन्न कक्षा स्तरीय, पाठ्य पुस्तकें विशेष प्रशिक्षण केंद्रों पर अध्ययनरत बच्चों के लिए अत्यधिक उपयोगी सिद्ध होंगी।

सभी बच्चों के लिए मेरी शुभकामनायें।

(डॉ नाहर सिंह)

प्राक्कथन

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के व्यापक उद्देश्यों के संदर्भ में नैतिकता, तर्कसंगतता, सहानुभूति और संवेदनशीलता के साथ 21वीं सदी के लिए अनिवार्य कौशलों में महारत हासिल करना वास्तव में महत्वपूर्ण है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एवं सतत विकास एजेंडा 2030 सभी के लिए समावेशी और समान गुणवत्ता-युक्त शिक्षा सुनिश्चित करने और जीवन-पर्यंत शिक्षा के अवसरों को बढावा दिये जाने के व्यापक लक्ष्य के साथ आज हमारे सामने है। इस नीति के जरिये स्कूल स्तर पर शिक्षा प्रणाली में व्यापक सुधार किये गए है। विद्यालय की वर्तमान रूपरेखा 5+3+3+4 के आधार पर तैयार की गयी है जिसमें 12 साल की स्कूली शिक्षा और 3 वर्ष की आंगनवाड़ी/प्री-स्कूलिंग को शामिल किया गया है। नीति में यह परिकल्पना की गई है कि विद्यालयी शिक्षा से वंचित बच्चों को जल्द से जल्द शैक्षिक क्षेत्र में वापस लाना और छात्रों को स्कूल छोड़ने से रोकने के लिए 2030 तक, पूर्वस्कूली शिक्षा से माध्यमिक स्तर तक 100% सकल नामांकन अनुपात प्राप्त करना सर्वोच्च प्राथमिकता होगी।

शिक्षा का अधिकार कानून 2009 की धारा 4 के अंतर्गत विद्यालयी शिक्षा से वंचित बच्चों को विशेष प्रशिक्षण केंद्रों में शिक्षा ग्रहण करने का प्रावधान है। इसका उद्देश्य उन्हें आयु-अनुसार कक्षा के अनुरूप शैक्षिक एवं बौद्धिक स्तर पर तैयार करना है। इसी लक्ष्य की प्राप्ति की ओर कदम बढ़ाते हुए राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली ने विशेष प्रशिक्षण केंद्रों में ज्ञानार्जन करने वाले विद्यार्थियों के लिए विकसित पाठ्यपुस्तकों में आवश्यक सुधार किए हैं जिससे कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति के उद्देश्यों को प्राप्त किया जा सकें।

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली, द्वारा विकसित पाठ्यक्रम पर आधारित इन पुस्तकों का निर्माण अति सरल भाषा का प्रयोग करते हुए किया गया है। इन पाठ्य पुस्तकों को पाठ्यक्रम के अनुसार मूल रूप में ही रखा गया है जिसमें चार स्तर हैं। प्राथमिक कक्षाओं के लिए स्तर एक एवं स्तर दो तथा उच्च प्राथमिक कक्षाओं के लिए स्तर तीन एवं स्तर चार हैं। प्राथमिक स्तर पर चार विषय (हिंदी, अंग्रेजी, गणित एवं पर्यावरण अध्ययन) की पुस्तकें एवं उच्च प्राथमिक स्तर पर पाँच विषय (हिंदी, अंग्रेजी, गणित, सामाजिक अध्ययन एवं विज्ञान) की पुस्तकों का निर्माण किया गया है।

मैं इन पुस्तकों के निर्माण एवं पुनरीक्षण में योगदान देने वाले समस्त शिक्षकों के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ। मैं आशा करती हूँ कि ये पाठ्यपुस्तकें विशेष प्रशिक्षण केंद्रों के शिक्षकों एवं छात्रों के लिए उपयोगी सिद्ध होंगी। ये पुस्तकें केंद्रों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों का समग्र विकास करने में सक्रिय भूमिका निभा सकेंगी।

पुस्तकों में सुधार हेतु आपके अनमोल सुझाव सदैव वांछनीय हैं।

डॉ बिंदु सक्सेना
असिस्टेंट प्रोफेसर
विज्ञान विभाग
पाठ्यक्रम और शिक्षाशास्त्र संभाग
राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली

शिक्षकों के लिए सुझाव

1. प्रत्येक पाठ में दिए गए निर्देशों का उपयोग करें। संभव हो तो एक पाठ के निर्देश अन्य पाठों में भी इस्तेमाल करें।

2. जिन प्रश्नों के साथ लिखने की जगह नहीं है, वे कक्षा में चर्चा करने के लिए हैं। यदि कोई बच्चा इस स्तर पर पहुँच गया है कि उनके उत्तर लिख सकता है तो कॉपी में उन प्रश्नों के उत्तर लिखवाए जा सकते हैं।

3. प्रारंभ में बच्चे अनुमान और आपकी सहायता से लिखेंगे। उनके उत्तर अलग-अलग और स्पष्ट हो सकते हैं। यह सीखने की प्रक्रिया का एक पड़ाव-भर है। इससे चिंतित न हों। धीरे-धीरे बच्चे प्रगति करेंगे।

4. कुछ रचनाओं के साथ अभ्यास नहीं दिए गए हैं। ये स्व-अध्ययन के लिए हैं। आप चाहे तो उपयुक्त समय पर इनसे संबंधित अभ्यास स्वयं भी बना सकते हैं और बच्चों से भी बनवा सकते हैं।

5. कविताएँ-कहानियाँ रटवाने या याद करवाने के लिए नहीं हैं बल्कि बातचीत करने ओर भाषा सीखने का माध्यम हैं। हो सकता है किसी कविता या कहानी से शुरू में बच्चा केवल एक शब्द सीखें। इसलिए इन्हें जितनी बार चाहे, उतनी बार इस्तेमाल करें। बार-बार सुनें और सुनाएँ।

6. दी गई गतिविधियों का उद्देश्य भाषायी कौशलों का विकास है। इसलिए केवल कुछ बनवाकर गतिविधि को छोड़ न दें। उसका संबंध शब्दों, वाक्यों से जोड़े। जैसे, नाव बनवाकर उसपर 'नाव' शब्द लिखवाना।

7. सभी बच्चे सीखने के अलग-अलग स्तर पर होंगे इसलिए ज़रूरी नहीं है कि हर बच्चे से हर अभ्यास करवाया जाए। उनके स्तर के अनुसार अभ्यासों का चयन करें। यदि बच्चा एक शब्द में भी उत्तर लिखता है तो यह प्रशंसनीय है।

संरक्षक

श्री एच. राजेश प्रसाद - प्रधान सचिव (शिक्षा), दिल्ली
श्री रजनीश सिंह - निदेशक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, दिल्ली

शैक्षणिक सलाहकार

डॉ. नाहर सिंह - संयुक्त निदेशक(शैक्षिक), राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, दिल्ली

पुस्तक निर्माण समिति

नोडल अधिकारी/समन्वयक

डॉ. शारदा कुमारी - वरिष्ठ प्रवक्ता, मंडलीय शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, आर.के. पुरम्
लक्ष्मी पाण्डेय - प्रवक्ता, मंडलीय शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, आर.के. पुरम्

लेखक समूह

अक्षय कुमार दीक्षित - अध्यापक, सर्वोदय विद्यालय फतेहपुर बेरी, नई दिल्ली
डॉ. उषा शर्मा - एसो, प्रोफेसर, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान
तनु श्री घई - अध्यापिका, प्रेसीडियम विद्यालय, अशोक विहार, दिल्ली
वीरेन्द्र कुमार चन्दोरिया - असिस्टेंट-प्रोफेसर, दिल्ली विश्वविद्यालय
डॉ. सुनीता मिश्रा - असिस्टेंट-प्रोफेसर, इंस्टिट्यूट ऑफ एवं इक्नोमी, दिल्ली

पुस्तक पुनरीक्षण समिति (2021-22)

डॉ. बिंदु सक्सेना (नोडल अधिकारी) - असिस्टेंट प्रोफेसर, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, दिल्ली
सहयोगकर्ता - सुश्री भगवती, बी.आर.पी., राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, दिल्ली

पुनरीक्षण समूह

डॉ. कुमकुम भारद्वाज - असिस्टेंट प्रोफेसर, मंडलीय शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, दिलशाद गार्डन दिल्ली।
डॉ. लक्ष्मी पाण्डेय - प्रवक्ता, मंडलीय शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, कड़कड़डूमा, दिल्ली।
डॉ. ममता यादव - प्रवक्ता, मंडलीय शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, कड़कड़डूमा, दिल्ली।

प्रकाशन अधिकारी

डॉ. मुकेश यादव - राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, दिल्ली

प्रकाशन समूह

श्री नवीन कुमार - एससीईआरटी, दिल्ली
सुश्री राधा - एससीईआरटी, दिल्ली
सुश्री नेहा रिज़वाना - बी.आर.पी., एससीईआरटी, दिल्ली
सुश्री फ़ोज़िआ - बी.आर.पी., एससीईआरटी, दिल्ली

अनुक्रमणिका

क्रम सं.	अध्याय	पेज नं0
1	कोई लाके मुझे दे	01
2	दोस्त की पोशाक	04
3	राख की रस्सी	08
4	मन के भोले-भाले बादल	12
5	7,00,000 लोग बचाए गए	16
6	बहादुर बित्तो	17
7	पापा ने पेशे का चुनाव किया	21
8	दिल्ली के तालाब और बावड़ियाँ	26
9	कदंब का पेड़	31
10	बंदर-बाँट	35
11	सुनीता की पहिया कुर्सी	42
12	ये भी तो है दिल्ली में	48
13	पानी रे पानी	54
14	बाघ आया उस रात	59
15	मिर्च का मज़ा	62
16	दो बैलों की कथा	65
17	जीव जन्तुओं का अद्भुत संसार	70
18	रावण के पुतले (तातारपुर)	72
19	सिगड़ी मछली सूखी क्यों नहीं?	74
20	यमुना	77
21	इंसानियत	80
22	चींटी और कबूतर	85
23	प्यारा हिन्दुस्तान	86
24	नई रोशनी	89
25	क्षितिज से आगे	94
26	पद	101
27	फूल भी और फल भी	104
28	दो सौवा गोल/हॉकी और ध्यानचंद	107

कोई लाके मुझे दे

1

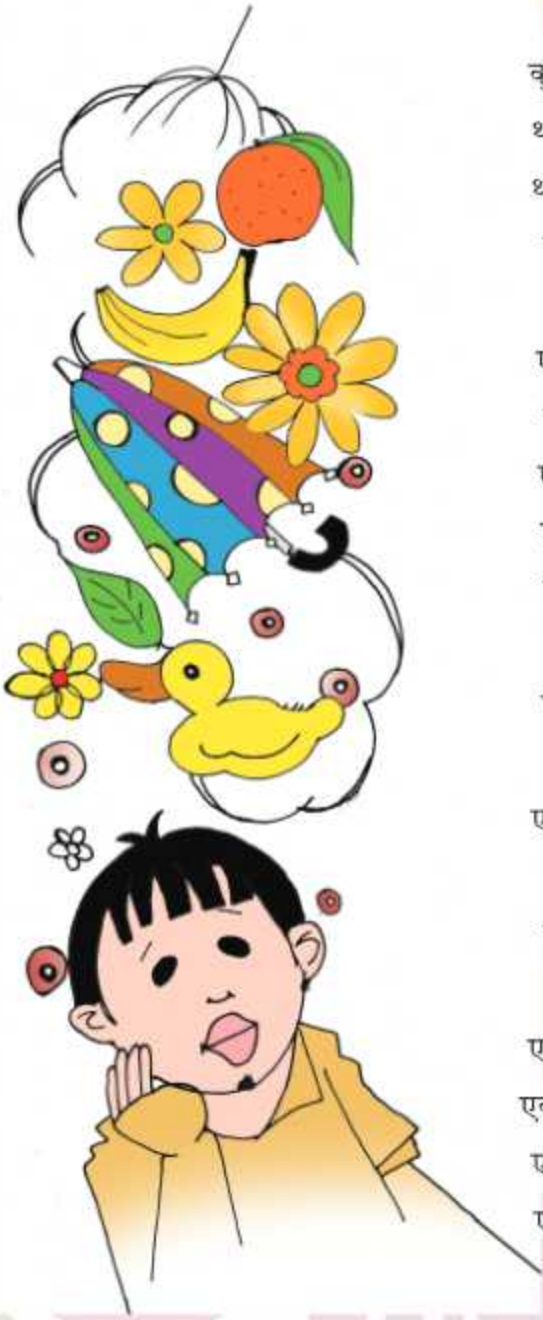

कुछ रंग भरे फूल
कुछ खट्टे-मीठे फल
थोड़ी बाँसुरी की धुन
थोड़ा जमुना का जल
कोई लाके मुझे दे!

एक सोना जड़ा दिन
एक रूपों भरी रात
एक फूलों भरा गीत
एक गीतों भरी बात
कोई लाके मुझे दे!

एक छाता छाँव का
एक धूप की घड़ी
एक बादलों का कोट
एक दूब की छड़ी
कोई लाके मुझे दे!

एक छुट्टी वाला दिन
एक अच्छी-सी किताब
एक मीठा-सा सवाल
एक नन्हा-सा जवाब
कोई लाके मुझे दे!

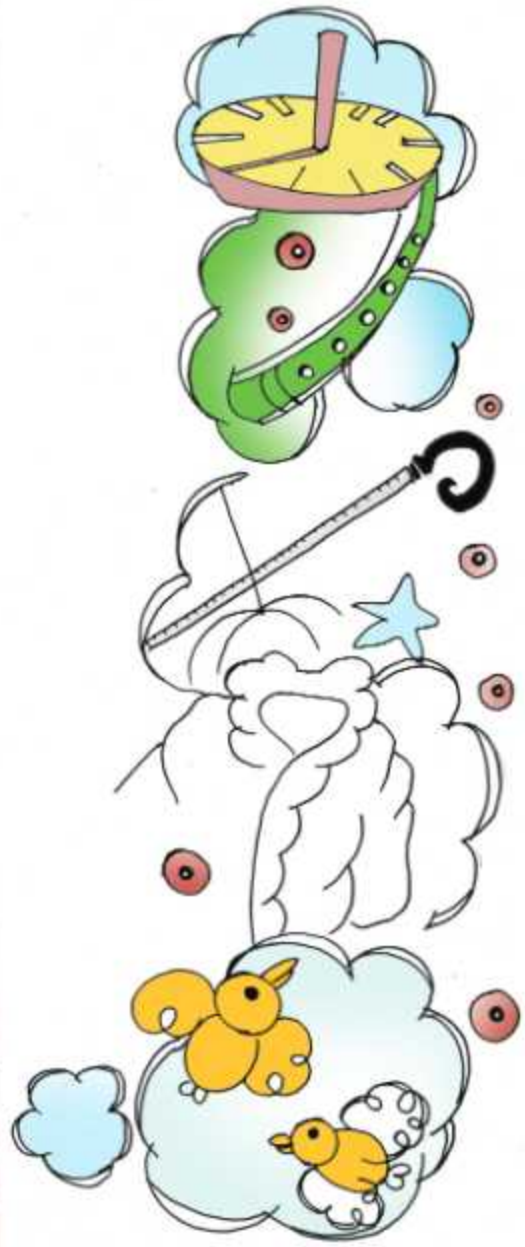

कविता से

1. इस कविता में नीचे लिखी चीज़ों में से क्या-क्या लाकर देने की बात कही गई है। सही (√)और गलत (×) का निशान लगाइए–

   (क) रंग भरे फूल

   (ख) खट्टे-मीठे फल

   (ग) सोना जड़ा दिन

   (घ) फूलों की माला

   (ङ) छाता छाँव का

   (च) सोने की छड़ी

   (छ) रोएँदार कोट

   (ज) गीतों भरी बात

   (झ) तारों भरी रात

   (ञ) बाँसुरी की धुन

2. कविता में कौन-सी नदी का जल लाने की बात कही गई है? सही उत्तर पर (√) का निशान लगाइए-

   (क) गंगा (ख) कावेरी (ग) यमुना (घ) नर्मदा

छुट्टी है

1. आप छुट्टी वाले दिन क्या-क्या करते हैं? सूची बनाइए-
2. छुट्टी वाले दिन आप घर के किन-किन कामों में बड़ों की सहायता करते हैं?

आपकी पसंद

1. आपको अपने लिए कुछ माँगना हो, तो आप क्या-क्या माँगेंगे और क्यों?
2. आपको अपने घर के सदस्यों के लिए कुछ माँगना हो तो किसके लिए क्या माँगेंगे और क्यों?

   दादी के लिए ....

   ....

   ....

   ....

खट्टे-मीठे फल

1. कविता में खट्टे-मीठे फलों की बात है। दी गई सूची में फलों के नाम और उनके स्वाद लिखिए :

फल	खट्टा	मीठा
.....	.....	.....
.....	.....	.....
.....	.....	.....
.....	.....	.....
.....	.....	.....
.....	.....	.....
.....	.....	.....

किताबों की बात

1. आपके विद्यालय के पुस्तकालय में बहुत-सी किताबें होंगी। इनमें से आपने जो किताबें पढ़ी हैं, उनके नाम लिखिए।

   .....

   .....

2. आपको इनमें से कौन-सी किताब सबसे अच्छी लगी? कारण भी बताइए-

छाते की बात

1. छाता धूप और बरसात में तो बचाता है। छाते से और कौन-कौन से काम लिए जा सकते हैं?
2. आप बरसात से बचने के लिए छाते के अतिरिक्त और किन-किन चीज़ों का उपयोग करते हैं?
3. ज़रा सोचकर बताइए कि 'छाता' शब्द कैसे बना होगा?

कुछ खास शब्द

खट्टे-मीठे फल

यहाँ पर 'खट्टे-मीठे' शब्द फल के बारे में कुछ खास बात बता रहे हैं। जो शब्द किसी की विशेषता बताते हैं, ऐसे शब्दों को 'विशेषण' कहते हैं। कविता में आए ऐसे ही कुछ अन्य विशेषण शब्दों को बताइए-

कोई लाके मुझे दे

कविता में यह पंक्ति बार-बार आई है। इस पंक्ति के स्थान पर आप कोई अन्य पंक्ति सुझाइए-

दोस्त की पोशाक 2

एक बार नसीरूद्दीन अपने बहुत पुराने दोस्त जमाल साहब से मिले। अपने पुराने दोस्त से मिलकर वे बड़े खुश हुए। कुछ देर गपशप करने के बाद उन्होंने कहा, ''चलो दोस्त, मोहल्ले में घूम आएँ।''

जमाल साहब ने जाने से मना कर दिया और कहा, ''अपनी इस मामूली-सी पोशाक में मैं लोगों से नहीं मिल सकता।''

नसीरूद्दीन ने कहा, ''बस इतनी सी बात!''

नसीरूद्दीन तुरंत उनके लिए अपनी एक भड़कीली अचकन निकालकर लाए और कहा, ''इसे पहन लो। इसमें तुम खूब अच्छे लगोगे। सब देखते रह जाएँगे।'' बनठनकर दोनों घूमने निकले। दोस्त को लेकर नसीरूद्दीन पड़ोसी के घर गए। नसीरूद्दीन ने पड़ोसी से कहा, ''ये हैं मेरे खास दोस्त, जमाल साहब। आज कई सालों बाद इनसे मुलाकात हुई है। वैसे जो अचकन इन्होंने पहन रखी है, वह मेरी है।''

यह सुनकर जमाल साहब पर तो मानो घड़ों पानी पड़ गया। बाहर निकलते ही मुँह बनाकर उन्होंने नसीरूद्दीन से कहा, ''तुम्हारी कैसी अकल है! क्या यह बताना ज़रूरी था कि यह अचकन तुम्हारी है? तुम्हारा पड़ोसी सोच रहा होगा कि मेरे पास अपने कपड़े हैं ही नहीं।''

नसीरूद्दीन ने माफ़ी माँगते हुए कहा, ''गलती हो गई। अब ऐसा नहीं कहूँगा।''

अब नसीरूद्दीन उन्हें हुसैन साहब से मिलवाने ले गए। हुसैन साहब ने गर्मजोशी से उनका स्वागत सत्कार किया। जब जमाल साहब के बारे में पूछा तो नसीरूद्दीन ने कहा, ''जमाल साहब मेरे पुराने दोस्त हैं और इन्होंने जो अचकन पहनी है वह इनकी अपनी ही है।''

जमाल साहब फिर नाराज़ हो गए। बाहर आकर बोले, ''झूठ बोलने को किसने कहा था तुमसे?''

''क्यों?'' नसीरूद्दीन ने कहा, ''तुमने जैसा चाहा, मैंने वैसा ही तो कहा।''

''पोशाक की बात कहे बिना काम नहीं चलता क्या? उसके बारे

में न कहना ही अच्छा है'', जमाल साहब ने समझाया।

जमाल साहब को लेकर नसीरूद्दीन आगे बढ़े। तभी एक अन्य पड़ोसी मिल गए। नसीरूद्दीन ने जमाल साहब का परिचय उनसे करवाया, ''मैं आपका परिचय अपने पुराने दोस्त से करवा दूँ। यह हैं जमाल साहब और इन्होंने जो अचकन पहनी है उसके बारे में मैं चुप ही रहूँ तो अच्छा है।''

अलग से

कहानी में दिए गए चित्रों को ध्यान से देखिए। चित्र की उन चीज़ों के नाम लिखिए जिनके बारे में कहानी में कुछ नहीं कहा गया है।

.....

.....

.....

तुम्हारे सवाल

कहानी के बारे में कोई पाँच प्रश्न बनाकर लिखिए। उनके उत्तर भी लिखिए-

.....

.....

.....

.....

.....

करके दिखाइए-

नीचे कुछ वाक्य लिखे हैं। तुम्हें इनका अभिनय करना है।

- मुँह बनाकर शिकायत करना
- नाराज़ होना
- बनठनकर घूमने के लिए निकलना
- देखते ही रह जाना
- स्वागत करना

चित्र बनाइए-

नीचे दिए गए मुहावरों को पढ़कर किसी एक के बारे में एक चित्र बनाइए-

- दीया तले अँधेरा
- ऊँट के मुँह में जीरा
- ईद का चाँद
- दिन में तारे नज़र आना

मिलते-जुलते

झूठा-जूठा

इन शब्दों को बोलकर देखो। इनमें बहुत थोड़ा-सा अंतर है। आपने देखा कि झ की जगह ज लगाने से शब्द का मतलब बदल गया। अब आप नीचे दिए गए शब्दों से मिलती-जुलती आवाज़ वाले शब्द लिखिए–

घड़ा..... राज .....

सजा ..... घूम .....

खोल ..... बुरा .....

आपके दोस्त

(क) जब आप अपने दोस्त से मिलते हो तो क्या-क्या करते हो?

.....

.....

.....

(ख) अपने दोस्त के बारे में लिखिए–

- उसका नाम क्या है .....
- उसकी उम्र क्या है .....
- उसके भाई बहन कितने हैं .....
- वह कहाँ रहता है? .....

एक या अनेक?

जमाल साहब नाराज़ हो गए। इस कहानी में जितने भी लोग हैं, उन सबके लिए बहुवचन का प्रयोग किया गया है। बहुवचन का मतलब है एक से अधिक। जब हम किसी के बारे में आदर से कुछ कहते हैं, तब भी बहुवचन का ही प्रयोग करते हैं। जैसे–

पिताजी आ गए।

नीचे दिए गए वाक्यों को इसी तरह बदलकर लिखिए।

- ताऊ सो रहा है।
- माँ कार चला रही है।
- यह मेरा मामा है।
- तू कहाँ जा रहा है?

राख की रस्सी 3

लोनपो गार तिब्बत के मंत्री थे। वे अपनी चालाकी और हाज़िरजवाबी के लिए दूर-दूर तक मशहूर थे। कोई उनके सामने टिकता न था। चैन से जिंदगी चल रही थी। मगर जब से उनका बेटा बड़ा हुआ था उनके लिए चिंता का विषय बना हुआ था। कारण यह था कि वह बहुत भोला था। होशियारी उसे छूकर भी नहीं गई थी। लोनपो गार ने सोचा, ''मेरा बेटा बहुत सीधा-सादा है। मेरे बाद इसका काम कैसे चलेगा!'' एक दिन लोनपो गार ने अपने बेटे को सौ भेड़ें देते हुए कहा, ''तुम इन्हें लेकर शहर जाओ। मगर इन्हें मारना या बेचना नहीं। इन्हें वापस लाना सौ जौ के बोरों के साथ। वरना मैं तुम्हें घर में नहीं घुसने दूँगा।'' इसके बाद उन्होंने बेटे को शहर की तरफ़ रवाना किया।

लोनपो गार का बेटा शहर पहुँच गया। मगर इतने बोरे जौ खरीदने के लिए उसके पास रुपए ही कहाँ थे। वह इस समस्या पर सोचने-विचारने के लिए सड़क किनारे बैठ गया। मगर कोई हल उसकी समझ में ही नहीं आ रहा था। वह बहुत दुखी था। तभी एक लड़की उसके सामने आ खड़ी हुई। ''क्या बात है? तुम इतने दुखी क्यों हो?'' लोनपो गार के बेटे ने अपना हाल कह सुनाया। ''इसमें इतना दुखी होने की कोई बात नहीं। मैं इसका हल निकाल देती हूँ।'' इतना कहकर लड़की ने भेड़ों के बाल उतारे और उन्हें बाज़ार में बेच दिया। जो रुपए मिले उनसे जौ के सौ बोरे खरीद कर उसे घर वापस भेज दिया।

लोनपो गार के बेटे को लगा कि उसके पिता बहुत खुश होंगे। मगर उसकी आपबीती पर उन्होंने ध्यान नहीं दिया। वे उठकर कमरे से बाहर चले गए। दूसरे दिन उन्होंने अपने बेटे को बुलाकर कहा, ''पिछली बार भेड़ों के बाल उतारकर बेचना मुझे ज़रा भी पसंद नहीं आया। अब तुम दोबारा उन्हीं भेड़ों को लेकर जाओ। उनके साथ जौ के सौ बोरे लेकर ही लौटना।''

एक बार फिर निराश लोनपो गार का बेटा शहर में उसी जगह जा बैठा। न जाने क्यों उसे यकीन था कि वह लड़की

उसकी मदद के लिए ज़रूर आएगी। और हुआ भी कुछ ऐसा ही, वह लड़की आई। उससे उसने अपनी मुश्किल कह सुनाई, ''अब तो बिना जौ के सौ बोरों के मेरे पिता मुझे घर में नहीं घुसने देंगे।'' लड़की सोचकर बोली, ''एक तरीका है।'' उसने भेड़ों के सींग काट लिए। उन्हें बेचकर जो रुपए मिले उनसे सौ बोरे जौ खरीदे। बोरे लोनपो गार के बेटे का सौंपकर लड़की ने उसे घर भेज दिया।

भेड़ें और जौ के बोरे पिता के हवाले करते हुए लोनपो गार का बेटा खुश था। उसने विजयी भाव से सारी कहानी कह सुनाई। सुनकर गार बोले, ''उस लड़की से कहो कि हमें नौ हाथ लंबी राख की रस्सी बनाकर दे।'' उनके बेटे ने लड़की के पास जाकर पिता का संदेश दोहरा दिया। लड़की ने एक शर्त रखी, ''मैं रस्सी बना तो दूँगी। मगर तुम्हारे पिता को वह गले में पहननी होगी।'' लोनपो गार ने सोचा ऐसी रस्सी बनाना ही असंभव है। इसलिए लड़की की शर्त मंजूर कर ली।

अगले दिन लड़की ने नौ हाथ लंबी रस्सी ली। उसे पत्थर के सिल पर रखा और जला दिया। रस्सी जल गई, मगर रस्सी के आकार की राख बच गई। इसे वह सिल समेत लोनपो गार के पास ले गई और उसे पहनने के लिए कहा। लोनपो गार रस्सी देखकर चकित रह गए। वे जानते थे कि राख की रस्सी को गले में पहनना तो दूर, उठाना भी मुश्किल है। हाथ लगाते ही वह टूट जाएगी। लड़की की समझदारी के सामने उनकी अपनी चालाकी धरी रह गई। बिना वक्त गँवाए लोनपो गार ने अपने बेटे की शादी का प्रस्ताव लड़की के सामने रख दिया। धूमधाम से उन दोनों की शादी हो गई।

कहानी में

सही उत्तर चुनिए–

(क) लोनपो गार कौन था?

1 मंत्री 2 मंत्री का पुत्र

3 राजा 4 राजा का पुत्र

(ख) लोनपो गार ने क्या किया था?

1 सौ भेड़ें दी थीं 2 सौ भेड़ें मँगाई थीं

3 सौ भेड़ें ली थीं 4 सौ भेड़े बेची थीं

(ग) कहानी में क्या नहीं हुआ था?

1 भेड़ों के बाल काटे गए 2 भेड़ों का दूध बेचा गया

3 भेड़ों के सींग काटे गए 4 भेड़ों से कमाई की गई

राख की रस्सी

कहानी में राख की रस्सी का ज़िक्र है। आपने किन-किन चीज़ों से बनी रस्सी देखी है? सूची बनाइए-

संज्ञा

किसी के नाम को संज्ञा कहते हैं। कहानी में से पाँच संज्ञा शब्द चुनकर लिखिए-

....

कहानी में दिए गए चित्र देखकर तिब्बत के लोगों के कपड़ों के बारे में एक अनुच्छेद लिखिए-

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

भेड़ से भेड़िया

भेड़ शब्द में इ की मात्रा और या जोड़ने से एक नया शब्द बन गया है। इसी तरह नीचे दिए गए शब्दों में कुछ जोड़कर नए शब्द बनाइए-

फिर	लगा .....
बार	बाल .....
कहा	कर .....
धूम	और .....

क्रम से

कहानी में से चुनकर कुछ शब्द नीचे दिए गए हैं। इन्हें वर्णमाला के क्रम में लगाओ। वर्णमाला के क्रम का मतलब है, पहले क, फिर ख, फिर ग आदि।

कहा जगह बोली पिता चकित

शादी

आप कभी-न-कभी किसी शादी में ज़रूर गए होंगे। उस शादी के बारे में बताइए–

किसकी शादी थी–

क्या पहनकर गए–

क्या-क्या खाया–

कितनी देर रुके–

कैसा लगा–

सौंपना

''बोरे लोनपो गार के बेटे को सौंपकर'' सौंपने का मतलब होता है किसी को कुछ दे देना। किसी को कुछ सौंपने के बाद वह चीज़ लेने वाले की ज़िम्मेदारी हो जाती है कि वह उसे सँभालकर रखे।

क्या आपने कभी किसी को कुछ सौंपा है? कब? किसे? क्या? क्यों? बताइए–

शर्त

कहानी में कौन किसकी शर्त पूरी नहीं कर सका/सकी? बताइए–

.....

.....

.....

पहेली

नीचे दिए गए डिजाइन के अक्षरों से शब्द बनाइए। उन शब्दों का कुछ-न-कुछ मतलब होना चाहिए।

ब

क च

म

ल द

र

आप इन अक्षरों के साथ कोई भी मात्रा लगा सकते हैं?

मन के भोले-भाले बादल

4

झब्बर-झब्बर बालों वाले
गुब्बारे से गालों वाले
लगे दौड़ने आसमान में
झूम-झूमकर काले बादल।

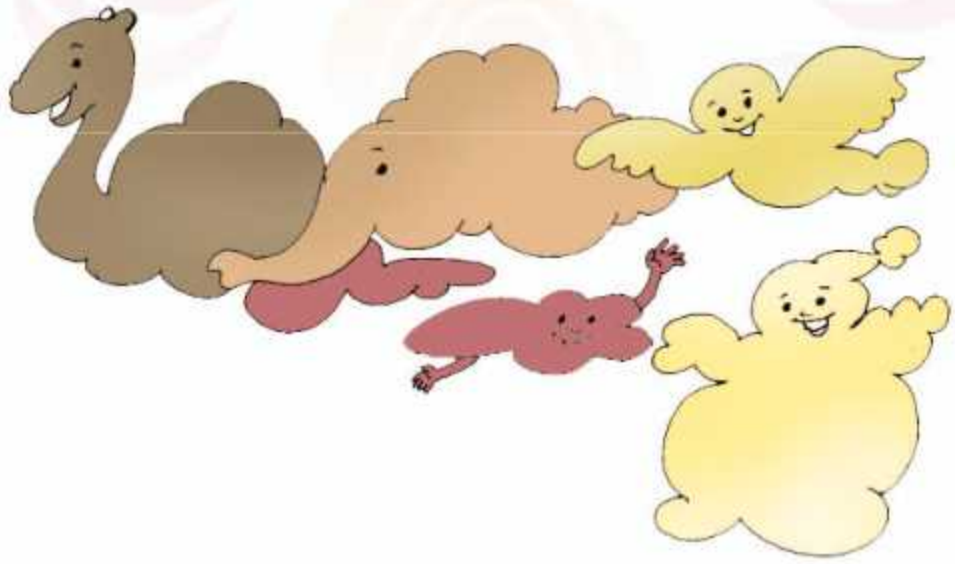

कुछ जोकर-से तोंद फुलाए
कुछ हाथी-से सूँड उठाए
कुछ ऊँटों-से कूबड़ वाले
कुछ परियों-से पंख लगाए

आपस में टकराते रह-रह
शेरों से मतवाले बादल।
कुछ तो चलते हैं तूफानी
कुछ रह-रह करते शैतानी
कुछ अपने थैलों से चुपके
झर-झर-झर बरसाते पानी

नहीं किसी की सुनते कुछ भी
ढोलक-ढोल बजाते बादल।

रह-रहकर छत पर आ जाते
फिर चुपके ऊपर उड़ जाते
कभी-कभी ज़िद्दी बन करके
बाढ़ नदी-नालों में लाते

फिर भी लगते बहुत भले हैं
मन के भोले-भाले बादल।

कविता में से

कविता में से चुनकर ऐसे शब्द लिखिए :

(क) जिनमें एक ही अक्षर दो बार आया हो।

(ख) जिनमें 'ऐ' की मात्रा आई हो।

(ग) जो किसी वस्तु का नाम हों।

(घ) जो किसी काम के बारे में बताते हों।

(ङ) जिनमें कोई मात्रा न हो।

कौन कैसा

दिए गए उदाहरण को देखकर खाली स्थान भरिए–

	कैसा	कौन
सूरज-सी	.....	.....
चंदा-सी	.....	.....
हाथी-सा	.....	.....
ढोलक-सी	.....	.....
बर्फ़-सा	.....	.....
शेर-सा	.....	.....

बारिश की आवाज़ें

झर-झर-झर बरसाते पानी

पानी के बरसने की आवाज़ है झर-झर-झर। पानी बरसने की कुछ और आवाज़ें लिखिए-

.....

.....

कैसे-कैसे बादल

तरह-तरह के बादलों के चित्र बनाइए-

काले-काले डरावने | हल्के फुल्के सुहाने | गुब्बारे जैसे

भोला

कविता में बादलों को भोला कहा गया है। कविता में बादलों को 'भोला' के अलावा कुछ और भी कहा गया है। कविता को पढ़कर बताइए–

भोला बादल | शै..... बादल | तू..... बादल

म..... बादल | जि..... बादल

तूफ़ानी बादल

कभी-कभी बादल तूफ़ान भी ले आते हैं।

पाठ पाँच में इसी तरह का एक समाचार दिया गया है। इसे पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) तूफ़ान का नाम क्या है?

(ख) तूफ़ान कहाँ आया था?

(ग) इस तूफ़ान में कितने लोग बचाए गए?

(घ) ऐसा शब्द खोजो जिसका मतलब होता है अंदाज़ा।

(***संकेत***-वह शब्द अ अक्षर से शुरू होता है।)

विद्यार्थी प्रगति पत्रक

शिक्षक/शिक्षिका विगत पाठों में छात्र की प्रगति को निम्न तालिका में अंकित करें। सीखने के प्रतिफल लिखने के लिए पुस्तक के अंत में दी गई सूची से विवरण लें।

क्र. सं.	सीखने के प्रतिफल	3	2	1
		सक्षम है	सहायता से करता/ करती है	सुधार की आवश्यकता है
1.	.....			
2.	.....			
3.	.....			
4.	.....			
5.	.....			
6.	.....			
7.	.....			
8.	.....			
9.	.....			
10.	.....			

7,00,000 लोग बचाए गए 5

200 कि.मी. की रफ़्तार से आया तूफान

1999 के बाद दूसरा सबसे बड़ा चक्रवाती तूफ़ान बताया जा रहा पेलिन शनिवार रात ओडिशा पहुँच गया। हालाँकि तट से टकराते समय इसकी रफ़्तार अनुमान से कुछ कम 200 किलोमीटर प्रति घंटा रही।

पेलिन की वजह से ओडिशा के तटीय ज़िलों में तमाम पेड़ और मकान गिर गए। बिजली के खंभे उखड़ने से अँधेरा छा गया। दर्जनों गाँव पानी में डूब गए। तूफ़ान से पहले ओडिशा में पानी बारिश से सात लोगों की मौत हो गई। इससे पहले, एक जहाज में सवार 18 मछुआरे लहरों में फँस गए थे। इस तूफान के कारण 12 लाख से ज़्यादा लोगों के प्रभावित होने की आशंका है।

बहादुर बित्तो

6

एक किसान था। उसकी बीवी का नाम था–बित्तो। एक दिन किसान ने बित्तो से कहा–सुबह जब मैं खेत में हल चला रहा था तो एक शेर ने आकर कहा–किसान-किसान! अपना बैल मुझे दे दे वरना मैं तुझे खा जाऊँगा।

बित्तो ने उससे पूछा–तूने क्या जवाब दिया?

किसान ने कहा–मैंने कहा, तू यहीं रुक, मैं घर जाकर अपनी गाय ले आता हूँ। अगर तू बैल खा लेगा तो हम लोग भूखों मर जाएँगे।

यह सुनकर बित्तो को बहुत गुस्सा आया। उसने किसान को फटकारा–घर की गाय शेर को खिलाते तुझे शर्म नहीं आती? अगर गाय चली गई तो घर में न दूध, न लस्सी। बच्चे रोटी किस चीज़ के साथ खाएँगे?

बित्तो को एक तरकीब सूझी। उसने कहा–तुम फ़ौरन खेत में जाकर शेर से कहो कि मेरी बित्तो तुम्हारे खाने के लिए एक घोड़ा लेकर आ रही है।

किसान डरता-डरता शेर के पास गया। उसने कहा–शेर राजा! हमारी गाय तो बड़ी मरियल है। उससे तुम्हारा क्या बनेगा! मेरी बीवी अभी तुम्हारे लिए एक मोटा-ताज़ा घोड़ा लेकर आ रही है।

बित्तो ने सिर पर बड़ा-सा पग्गड़ बाँधा और हाथ में दराँती लेकर घोड़े पर सवार हो गई। घोड़ा दौड़ाती वह खेत पर पहुँची और ज़ोर से चिल्लाई–अरे किसान! तू तो कहता था कि तूने चार शेरों को फाँस कर रखा है। यहाँ तो सिर्फ़ एक ही है। बाकी कहाँ गए? फिर वह घोड़े से उतरकर शेर की तरफ बढ़ी और कहने लगी–अच्छा, कोई बात नहीं, नाश्ते में एक ही शेर काफ़ी है।

इतना सुनना था कि शेर डर के मारे काँपने लगा और भाग खड़ा हुआ।

यह देखकर बित्तो बोली–देखा, इसे कहते हैं हिम्मत! तुम तो इतने डरपोक हो कि घर की गाय शेर के हवाले कर रहे थे।

उधर मारे भूख के शेर की आँतें छटपटा रही थीं। एक भेड़िए ने पूछा–महाराज, क्या मामला है? आप आज बहुत उदास दिखाई दे रहे हैं!

शेर ने कहा–कुछ न पूछो, आज मुश्किल से जान बची है। आज एक ऐसी राक्षसी से पाला पड़ गया जो रोज सुबह चार शेरों का नाश्ता करती है।

यह सुनकर भेड़िया बहुत हँसा। वह सुबह झाड़ी में छिपकर सारा तमाशा देख रहा था। उसने कहा–भोले बादशाह! वह तो बित्तो थी, जिसे आपने राक्षसी समझ लिया था। आप इस बार फिर कोशिश करके देखिए। अगर बैल आपके हाथ न आए तो मेरा नाम भेड़िया नहीं।

बहुत कहने-सुनने पर शेर किसान के खेत में जाने के लिए तैयार हो गया। लेकिन उसने भेड़िए से कहा–तुम अपनी पूँछ मेरी पूँछ से बाँध लो।

दोनों जने पूँछ बाँधकर चल पड़े। उन्हें देखते ही किसान के होश-हवास गुम हो गए। वह डर से थर-थर काँपने लगा। लेकिन बित्तो बिल्कुल नहीं घबराई। भेड़िए के पास जाकर उसने कहा–क्यों रे भेड़िए, तू तो अभी वादा करके गया था कि तू अपनी पूँछ से चार शेर बाँधकर लाएगा! लेकिन तू तो सिर्फ़ एक ही शेर लाया है! वह भी मरियल-सा! भला इसे खाकर मेरी भूख मिट सकती है? खैर, इस वक्त यही सही। इतना कहकर बित्तो आगे बढ़ी।

शेर के होश-हवास उड़ गए। उसने समझा कि भेड़िए ने उसके साथ धोखा किया है। वह फ़ौरन वहाँ से भागा। भेड़िया बहुत चीखा-चिल्लाया, लेकिन शेर ने एक न सुनी। तेज़ी से भागता चला गया।

किसान और बित्तो आराम से रहने लगे। उन्हें मालूम था कि अब शेर उनके खेत की तरफ़ फिर कभी नहीं आएगा।

कहानी के बारे में

1. शेर किसान के पास कितनी बार गया था?
2. शेर किसान से क्या-क्या लेने गया था?
3. किसान के परिवार में कौन-कौन थे?

रूप बदलकर

नीचे दिए गए शब्दों को बदलकर लिखिए-

औरत –	आदमी	घोड़ा –	
शेर –		बैल –	
बच्चा –		राजा –	

राज और राज़

राज और राज़ को ध्यान से देखो। ज के नीचे जो बिंदी लगी है, उसे नुक्ता कहते हैं। इसके कारण ज की आवाज़ बदल जाती है। ज़ वाले और शब्द लिखिए-

.....

शेर और घोड़ा

शेर और घोड़े में कई अंतर होते हैं। ध्यान से सोचकर नीचे लिखिए-

	शेर	घोड़ा
खाना		
घर		
आदतें		

वरना

शेर ने किसान से कहा–अपना बैल मुझे दे दो वरना मैं तुझे खा जाऊँगा।

वरना शब्द का इस्तेमाल करते हुए तीन वाक्य बनाइए-

.....

.....

.....

नाम

कहानी में से चुनकर नाम लिखिए-

कोई व्यक्ति .....

कोई वस्तु .....

कोई जगह .....

कोई पशु .....

इ और ई

किसान, बित्तो, सिर, दिल, कि इन सभी शब्दों में इ की मात्रा लगी है।

दराती नदी नीला की इन सभी शब्दों में ई की मात्रा लगी है।

आप भी इन दोनों मात्राओं वाले पाँच-पाँच शब्द कहानी में से चुनकर लिखिए।

चिल्लाई

चिल्लाई शब्द चिल्ला में ई जोड़कर बना है। आप भी इसी तरह ई वाले कुछ शब्द लिखिए-

इ	ई
.....	.....
.....	.....
.....	.....
.....	.....
.....	.....

कहानी में दिए गए पहले चित्र को देखो। बताओ, इस चित्र में क्या हो रहा है?

पापा ने पेशे का चुनाव किया 7

पापा जब छोटे थे, तो उनसे अकसर पूछा जाता था : ''बड़े होकर तुम क्या बनना चाहते हो?'' पापा के पास जवाब हमेशा तैयार होता। मगर उनका जवाब हर बार अलग-अलग होता था। शुरू-शुरू में पापा चौकीदार बनना चाहते थे। उन्हें यह सोचना बहुत अच्छा लगता था कि जब सारा शहर सोता होता है, चौकीदार जागता है। और उन्हें यह सोचना अच्छा लगता था कि जब हर कोई सोया हुआ हो, वह शोर मचा सकते हैं। उन्हें पक्का यकीन था कि बड़े होकर वह चौकीदार ही बनेंगे। लेकिन तभी अपने चटकदार हरे ठेले को लिए आइसक्रीम वाला आ गया। भई वाह वह ठेले को लिए-लिए घूम सकते हैं और जितना मन चाहे, उतनी आइसक्रीम भी खा सकते हैं!

''मैं एक आइसक्रीम बेचूँगा, तो एक खुद खाऊँगा,'' पापा ने सोचा। ''और छोटे बच्चों को तो मैं मुफ़्त आइसक्रीम दिया करूँगा।''

जब पापा के माता-पिता ने यह सुना कि वह आइसक्रीम बेचनेवाला बनना चाहते हैं, तो उन्हें बहुत हैरानी हुई। उन्हें यह बात मज़ेदार लगी और वे खूब हँसे। फिर एक दिन रेलवे स्टेशन पर पापा ने एक अजीब आदमी को देखा। वह आदमी इंजनों और डिब्बों से खेल रहा था। लेकिन ये डिब्बे और इंजन खिलौने नहीं, बल्कि असली थे, असली! कभी वह प्लेटफ़ार्म पर उछलकर आ जाता, तो कभी डिब्बों के नीचे चला जाता। वह कोई बहुत ही अजीब और मज़ेदार खेल खेल रहा था।

''यह कौन है?'' पापा ने पूछा।

''यह शंटिंग करने वाला है,'' उन्हें बताया गया।

''शंटिंग किसे कहते हैं?'' पापा ने पूछा।

''जब रेलगाड़ी अपनी यात्रा पूरी कर लेती है तो उसे अगली यात्रा के लिए तैयार करना होता है। रेलगाड़ी की साफ़-सफ़ाई की जाती है। इंजन को घुमाकर ईंधन-पानी भरा जाता है। इसे शंटिंग कहते हैं।'' पापा को बताया गया।

बस पापा तो पता चल गया कि वह क्या बनेंगे। वह तो रेलगाड़ी के डिब्बों की शंटिंग करेंगे! इससे भी ज़्यादा

दिलचस्प और क्या हो सकता है? ज़ाहिर है कि कुछ भी नहीं। जब पापा ने कहा कि वह शंटिंग करने वाला बनेंगे, तो किसी ने उनसे पूछा :

''मगर आइसक्रीम बेचने का क्या होगा?''

यह सचमुच समस्या थी। पापा ने शंटिंग करने वाला बनने की सोच ली थी, मगर आइसक्रीम बेचने का चटकदार हरा ठेला भी वह नहीं गँवाना चाहते थे। आखिर उन्होंने रास्ता निकाल लिया।

''मैं शंटिंग करने वाला और आइसक्रीम बेचने वाला, दोनों बनूँगा!''

हर किसी को अचंभा हुआ। मगर पापा ने सारी बात को बड़ी अच्छी तरह साफ़ कर दिया :

''इसमें क्या मुश्किल है! आइसक्रीम मैं सुबह बेचा करूँगा। कुछ देर आइसक्रीम बेचने के बाद मैं स्टेशन चला जाया करूँगा। वहाँ मैं कुछ डिब्बों की शंटिंग करूँगा और फिर जाकर कुछ आइसक्रीम और बेच आऊँगा। इसके बाद मैं फिर स्टेशन चला जाऊँगा और कुछ डिब्बों की शंटिंग कर लूँगा और इसके बाद जाकर कुछ आइसक्रीम और बेच लूँगा। इसमें ज़्यादा मुश्किल नहीं होगी, क्योंकि अपना ठेला मैं स्टेशन के पास ही खड़ा करूँगा और इसलिए गाड़ियों के लिए मुझे ज़्यादा दूर नहीं जाना पड़ेगा।''

हर कोई फिर हँस पड़ा। पापा गुस्से में आकर बोले :

''अगर तुम मेरी हँसी उड़ाओगे, तो मैं साथ में चौकीदार भी बन जाऊँगा। आखिर रात में करने को होता भी क्या है!''

सभी कुछ तय हो गया। लेकिन फिर पापा को वायुयान-चालक बनने की सूझी। इसके बाद उन्होंने अभिनेता बनने की सोची। इसके अलावा वह जहाज़ी भी बनना चाहते थे। या कम-से-कम वह चरवाहा बनकर लाठी हिलाते हुए गायों के पीछे घूमते रहने में अपने दिन बिताना तो चाहते ही थे। आखिर उन्होंने तय किया कि वह असल में जो बनना चाहते हैं, वह है कुत्ता। उस दिन वह दिन भर चारों हाथ-पैरों पर इधर-उधर भागते हुए अजनबियों पर भौंकते रहे। एक बूढ़ी महिला ने उनके सिर को सहलाना चाहा, तो पापा ने उन्हें काटने की कोशिश तक की। पापा ने भौंकना तो बड़ी अच्छी तरह से सीख लिया, लेकिन बहुत कोशिश करने पर भी अपने पैर से कान के पीछे खुजाना नहीं सीख पाए। उन्होंने सोचा कि अगर वह बाहर जाकर अपने पालतू कुत्ते के साथ बैठ जाएँ, तो शायद वह कान के पीछे खुजाना ज़्यादा जल्दी सीख जाएँगे। और यही असल में उन्होंने किया भी। उसी वक्त एक अजनबी फ़ौजी अफ़सर उधर से गुज़रा। वह खड़ा होकर पापा को देखने लगा। वह उन्हें कुछ देर तक देखता रहा और फिर उसने पूछा :

''क्या कर रहे हो तुम?''

''मैं कुत्ता बनना चाहता हूँ,'' पापा ने जवाब दिया।

तब उस अजनबी ने कहा :

''क्या तुम इंसान नहीं बनना चाहते?''

''इंसान मैं काफ़ी दिन रह चुका!'' पापा ने कहा।

''अगर तुम कुत्ते भी नहीं बन सकते तो तुम कैसे आदमी हो? क्या आदमी ऐसा ही होता है?''

''अच्छा, फिर वह कैसा होता है?'' पापा ने पूछा।

''इसके बारे में तुम अपने आप सोचो!'' अफ़सर ने कहा और वहाँ से चला गया। वह न तो हँसा और न मुस्कराया। सोचने लगे। वह सोचते ही रहे। अफ़सर ने उन्हें कोई बात भी नहीं समझाई थी, पर अचानक ही यह बात पापा की समझ में आ गई कि वह रोज़-रोज़ अपना इरादा नहीं बदल सकते। अगली बार जब उनसे यही सवाल पूछा गया, तो उन्हें अफ़सर की बात याद आ गई, और उन्होंने कहा :

''मैं इंसान बनना चाहता हूँ!''

इस पर कोई भी नहीं हँसा और पापा समझ गए कि यही सबसे अच्छा जवाब है। आज भी वह यही समझते हैं। पहली बात तो यही है कि हमें अच्छा आदमी बनना चाहिए। वायुयान-चालक, चरवाहा और आइसक्रीम बेचनेवाला-हर किसी के लिए यही बात सबसे महत्वपूर्ण है।

बातचीत के लिए

1. कहानी के कुछ वाक्य नीचे दिए जा रहे हैं। इन्हें कहानी के अनुसार क्रम में लगाइए-

(क) पापा के पास जवाब हमेशा तैयार होता। ☐

(ख) आखिर उन्होंने रास्ता निकाल ही लिया। ☐

(ग) बस पापा को पता चल गया कि वह क्या बनेंगे। ☐

(घ) लेकिन फिर पापा को वायुयान चालक बनने की सूझी। ☐

(ङ) पापा ने भौंकना बहुत अच्छी तरह सीख लिया। ☐

(च) शुरू-शुरू में पापा चौकीदार बनना चाहते थे। ☐

(छ) मैं एक आइसक्रीम बेचूँगा तो एक खुद खाऊँगा। ☐

(ज) पापा ने शंटिंग करनेवाला बनने की सोच ली थी। ☐

(झ) वह रोज़-रोज़ अपना इरादा नहीं बदल सकते। ☐

(ञ) पहली बात तो यही है कि हमें अच्छा आदमी बनना चाहिए। ☐

2. पापा चौकीदार और आईसक्रीम वाला दोनों एक साथ क्यों बनना चाहते थे?
3. एक अच्छा इंसान बनना क्या होता है?

आपकी बात

1. आप बड़े होकर क्या बनाना चाहते हैं और क्यों?
2. आपके घर के बड़े लोग कौन-से काम करते हैं? आपको उनमें से किसका काम सबसे ज़्यादा आकर्षित करता है?

पापा जब बच्चे थे

1. अपने पिता से उनमें बचपन की कोई मज़ेदार घटना के बारे में पूछकर कक्षा में बताइए-
2. अपने पिता से उनके बचपन की नीचे लिखी बातें पूछिए–
   - उनके दोस्तों के नाम
   - उनके विद्यालय का नाम
   - उनकी पसंद की किताब
   - उनका मनपसंद खेल
   - उनके शौक
3. आप अपने घर की बोली में अपने पिता जी को क्या कहकर बुलाते हैं?
4. अपने दादा-दादी जी से पापा के बचपन की किसी शरारत के बारे में पूछिए और फिर पिताजी को बताइए।
5. आपको अपने पिताजी की कौन-सी बात सबसे अच्छी लगती है?

अहा! आइसक्रीम

1. आपको भी आइसक्रीम बहुत अच्छी लगती होगी। पत्र-पत्रिकाओं में कुछ आइसक्रीम के विज्ञापन काटकर अपनी कॉपी में चिपकाएँ तथा इन पर मज़ेदार वाक्य लिखें-
2. मालूम करें कि आइसक्रीम शब्द कैसे बना?

भौं-भौं

पापा ने कुत्तों की नकल की और दिनभर कुत्ता बनकर घूमते रहे। अपने आसपास के इन जानवरों को गौर से देखो और लिखो कि ये कैसी हरकतें करते हैं–

- गाय
- भैंस
- कुत्ता
- बकरी
- सूअर

चौकीदार

'चौकी' और 'दार' इन दो शब्दों के मेल से बना है शब्द चौकीदार। इसी प्रकार 'दार' शब्द लगाकर कुछ अन्य शब्द बनाइए-

चरवाहा

भेड़-बकरी चराने वाले को 'चरवाहा' कहते हैं। बताइए इन्हें क्या कहते हैं?

- ❖ लोहे के बरतन बनाने वाला .....
- ❖ लकड़ी का काम कराने वाला .....
- ❖ पुताई करने वाला .....
- ❖ कपड़े सिलने वाला .....
- ❖ सोने-चाँदी के गहने बनाने वाला .....
- ❖ दूध बेचने वाला .....

पापा

यह शब्द प और आ (ा) की मात्रा को दो बार इस्तेमाल करने से बना है। ऐसे ही कुछ और शब्द बनाइए जिनमें आ (ा) की मात्रा दो बार लगे।

दिल्ली के तालाब और बावड़िया

8

छपाका!

पानी में कोई बरतन गिरे या तैरने के लिए कोई तैराक कूदे, यही आवाज़ आती है न? आपमें से कई लड़के-लड़कियाँ तो तैरना जानते ही होंगे, जिन्हें अभी तैरना नहीं आता, उन्होंने भी कभी ना कभी तैराकी देखी तो होगी ही। दिल्ली में हज़ारों सालों से लोग तैरने के लिए तालाबों, यमुना नदी और बावड़ियों का इस्तेमाल करते रहे हैं। क्या आपने यमुना नदी या किसी तालाब-बावड़ी को कभी अपनी आँखों से देखा है?

दिल्ली में नदी तो एक ही है लेकिन तालाब और बावड़ियाँ बहुत सारी हैं। सैकड़ों सालों पहले दिल्ली में हर गाँव में तालाब या बावड़ी हुआ करती थी। तालाब तो नीची ज़मीन में पानी भरने से अपने आप भी बन जाते हैं लेकिन बावड़ियों को खास तौर से बनवाया जाता था। बावड़ी का मतलब है सीढ़ियों वाला कुआँ। बावड़ी जैसे ही कुछ और नाम भी आपने ज़रूर सुने होंगे जैसे हौज़, जोहड़, सर, सरोवर, सर्वर, ताल, तलैया, पोखर, डिग्गी, कुंड, ताल आदि।

पुराने समय के लोग बावड़ी बनाने में बहुत माहिर थे। बावड़ी बनाने के लिए बहुत गहराई तक धरती को खोदा जाता था। गहराई तक खोदने से धरती के भीतर का पानी निकलने लगता था और पूरी बावड़ी में भर जाता था। बावड़ी के आस-पास सीढ़ियाँ बनवाई जाती थीं ताकि पानी भरने में आसानी हो जाए। किसी-किसी बावड़ी में तो पानी इतनी गहराई से निकलता था कि उस तक पहुँचने के लिए सौ-सौ सीढ़ियाँ होती थीं। बावड़ी के चारों तरफ़ लंबे-लंबे गलियारे और रास्ते हुआ करते थे। सुंदर खंभों, कमरों और गुंबदों से उसे सजाया जाता था। बावड़ी की दीवारों पर थोड़ी-थोड़ी ऊंचाई पर सुंदर मूर्तियाँ या चित्र उकेरे जाते थे। ये चित्र सुंदरता तो बढ़ाते ही थे, साथ ही लोगों को एक ज़रूरी बात भी बताते थे। इनसे लोगों को ये पता चलता था कि बावड़ी में कितना पानी भरा है। वे इस तरह हिसाब लगाते थे ''घोड़े वाली मूर्ति पूरी डूब गयी है। चिंता की कोई बात नहीं, साल भर के लिए पानी की कोई कमी नहीं रहेगी।'' या ''पानी तो अभी हाथी तक भी नहीं पहुँचा। इस साल पानी कम रहेगा।''

लोग तालाबों और बावड़ियों की पूजा भी करते थे और उनकी देखभाल भी सब मिलजुलकर किया करते थे। आखिर इनसे ही तो पानी की ज़रूरतें पूरी हुआ करती थीं। उस ज़माने में आजकल की तरह घरों में नल नहीं होते थे। लोग तालाबों और बावड़ियों से ही पानी लिया करते थे। तालाबों के पानी से ही आस-पास के खेतों की सिंचाई भी हो जाया

करती थी। इसीलिए तालाब और बावड़ियाँ बनवाना पुण्य का काम माना जाता था। सिर्फ धनवान लोग और राजा-महाराजा ही नहीं बल्कि गाँव वाले भी मिलकर तालाब और बावड़ियाँ बनवाया करते थे। इनके किनारे पर नीम, आम, जामुन या दूसरे पेड़-पौधे लगवाया करते थे।

तालाब और बावड़ियों के किनारों पर हर समय चहल-पहल रहा करती थी। लोग वहाँ बैठकर आराम करते, खेलते, गप्पें मारते और काम-काज भी करते थे। हर बावड़ी और तालाब के पास साल में एक बार मेला ज़रूर लगता था। मेलों में आस-पास के गाँव वाले भी आया करते थे। आज भी जहाँ कहीं तालाब और बावड़ियाँ हैं वहाँ मेले ज़रूर लगते हैं। उदाहरण के लिए, दिल्ली में कटवारिया सराय नाम की जगह पर जो तालाब था, वहाँ बहुत बड़ा मेला लगता था जिसे 'रामकला का मेला' कहते हैं। तालाब तो अब बहुत छोटा-सा रह गया है लेकिन वहाँ मेला अभी भी हर साल लगता है।

सैकड़ों साल पहले दिल्ली में कितने तालाब और बावड़ियाँ थीं, इसका हिसाब लगाना बहुत मुश्किल है। पुराने समय की एक किताब में लिखा है कि उस समय दिल्ली में 350 तालाब थे। आज़ादी से पहले अंग्रेजों ने दिल्ली के तालाब भरवाने शुरू कर दिए थे। उन्होंने तालाबों को मिट्टी से भरकर उनके ऊपर बाज़ार और बस्तियाँ बना दीं।

आज उन तालाबों और बावड़ियों का कोई निशान भी बाकी नहीं है। ज़्यादातर तालाब और बावड़ियाँ तो बिलकुल सूख गई हैं क्योंकि लोगों ने उनमें कूड़ा-कचरा डालकर उनको बर्बाद कर दिया। लोगों को तो पता तक नहीं होता कि उनके घर के पास कोई बावड़ी है। हो सकता है, आज जिस जगह पर तुम्हारा घर या स्कूल है उस जगह पर कभी कोई तालाब हुआ करता हो।

किसी-किसी जगह के नाम से पता चलता है कि उस जगह पर कभी कोई तालाब या बावड़ी रही होगी। खारी बावली नाम की जगह का नाम सुना है तुमने? आज वहाँ पर कोई बावड़ी नहीं है, लेकिन नाम से पता चलता है कि वहाँ कोई बावड़ी थी जिसका पानी खारा था। इसलिए उस जगह का नाम ही खारी बावली पड़ गया।

खुशी की बात यह है कि अब आप जैसे बच्चे और बाकी समझदार लोग बावड़ियों को बचाने और सँवारने के लिए काम करने लगे हैं। इसलिए दिल्ली की बावड़ियाँ अब फिर से सुंदर हो गई हैं और पानी से भरने लगी हैं। ऐसी ही एक बावड़ी है अग्रसेन की बावड़ी।

इस बावड़ी को लगभग 700 साल पहले बनाया गया था। यह बावड़ी बिलकुल सूख गई थी लेकिन अब इसमें फिर से पानी आ गया है और अब यह बिलकुल ठीक हालत में है। यह दिल्ली के जंतर-मंतर के बिलकुल पास ही है। कभी वहाँ जाओ तो इसे भी ज़रूर देखना।

दिल्ली के महरौली इलाके के बारे में आप सब जानते ही होंगे। यहाँ पर विश्व प्रसिद्ध कुतुबमीनार है। क्या आप जानते हैं कि महरौली में बहुत-सी बावड़ियाँ भी है।

दिल्ली के महरौली इलाके को तो बावड़ियों की बस्ती ही कहना चाहिए। यहाँ अनेक बावड़ियाँ हैं जिनमें से दो तो बहुत मशहूर हैं। एक है गंधक की बावली। इस बावली के पानी में गंधक है। गंधक का इस्तेमाल कई तरह की बीमारियों के इलाज में होता है। कहा जाता है कि इस बावड़ी में नहा लेने से खुजली और फोड़े-फुंसी ठीक हो जाते थे। इसीलिए लोग आज भी इस बावड़ी पर आते हैं।

महरौली में बनी दूसरी बावड़ी का नाम है 'राजों की बाय'। पुराने समय में छोटे तालाब को बाय कहते थे। राज कहते हैं कारीगरों को। इस बावड़ी को राज लोग इस्तेमाल करते थे। इसलिए इस बावड़ी का नाम पड़ गया 'राजों की बाय'। इसे 500 साल पहले बनवाया गया था।

एक और मशहूर बावड़ी है 'हज़रत निजामुद्दीन की बावड़ी'। इसे दिल्ली के प्रसिद्ध संत हज़रत निज़ामुद्दीन ने बनवाया था। इस बावड़ी के बारे में एक किस्सा बड़ा मशहूर है। कहते हैं कि जिस ज़माने में यह बावड़ी बन रही थी, उसी समय दिल्ली का राजा तुगलकाबाद का किला बनवा रहा था। जो मज़दूर दिन में तुगलकाबाद के किले में काम करते थे, वही मज़दूर रात को बावड़ी की खुदाई का काम करते थे। सुल्तान को ऐसा लगा कि मज़दूर पूरे मन से किले का काम नहीं कर रहे हैं। वे दिन में काम करते वक्त ऊँघते रहते थे। सुल्तान ने पूछा, ''किले का काम इतना धीरे क्यों चल रहा है?''

उसे पता चला कि मज़दूर रात को जागकर मशालों की रोशनी में बावड़ी की खुदाई करते हैं। इस बात को जानने के बाद बादशाह ने नाराज़ होकर तेल की बिक्री बंद करवा दी ताकि रात को मशालें ना जलाई जा सकें। इस बात की जानकारी जब संत हज़रत निजामुद्दीन को दी गई तो उन्होंने कहा ''पानी को ही दीयों में भरकर जलाओ, दीये पानी से ही जलने लगेंगे!''

कहते हैं कि सचमुच पानी से ही मशालें जलने लगीं और बावड़ी का काम पूरा हो गया।

इस बावड़ी को बने हुए 700 साल बीत चुके हैं लेकिन आज भी यह पानी से लबालब भरी है। समय-समय पर इसकी सफ़ाई करवाई जाती है। इसमें आज भी तुम्हारे जैसे बच्चे तैराकी करने आते हैं। वे बहुत ऊँचाई से पानी में छलांग लगाते हैं और ज़ोर से आवाज़ आती है।

छपाक!!

अभ्यास

कितना समझे

(क) बावड़ी और कुएँ का चित्र बनाकर उनमें कोई दो अंतर लिखिए।

(ख) तालाबों का पानी किन-किन कामों में प्रयोग किया जाता था?

(ग) इस पाठ में आपने दिल्ली की बहुत-सी बावड़ियों के बारे में पढ़ा है। उनमें से या अपने घर के पास की किसी एक बावड़ी के बारे में बताइए।

खोजबीन

नीचे एक जाली दी गई है। इसमें पानी के कुछ स्रोतों के नाम छिपे हैं। उन्हें खोजकर लिखिए-

ता	ल	सा	द	ग	डि
ला	ज	बा	व	ड़ी	ग्गी
ब	ल	रो	व	र	पा
जो	र	व	न	हौ	ज़
ह	पा	पो	ख	र	नी
ड़	नी	ला	र	कुं	ड

आपकी बात

(क) आपने कभी कोई मेला ज़रूर देखा होगा। उस मेले के बारे में बताइए।

(ख) किसी जगह का नाम कैसे पड़ जाता है, इसके दो उदाहरण आपने इस पाठ में पढ़े हैं। आप अनुमान से बताइए कि आपके मोहल्ले का नाम कैसे रखा गया होगा?

बूझो

नीचे दिए गए वाक्यों को पढ़कर शब्द लिखिए-

(क) सीढ़ियों वाला कुँआ — बावड़ी

(ख) पानी में कुछ गिरने पर आवाज़ होती है — .....

(ग) तालाबों के किनारे लगते हैं — .....

(घ) यमुना इस शहर में बहती है — .....

(ङ) बावड़ियाँ सूखने का कारण — .....

अलग-अलग

नीचे दिए गए वाक्य को पाँच वाक्यों में बदलकर लिखिए–

लोग वहाँ बैठकर आराम करते, खेलते, गप्पे मारते और काम-काज भी करते थे।

कटे हुए शब्द

नीचे दिए गए वाक्यों को देखिए। ऐसा लग रहा है कि इसके शब्द ऊपर और नीचे से कट से गए हैं। इन्हें पूरा कीजिए-

पुराने समय क लाग बावड़ा बनान म बहत माहर थ। बावड़ा बनान क लिए बहत गहराई तक धरता का खादा जाता था।

साथी शब्द

''यह पानी से लबालब भरी है।''

लबालब शब्द पानी या पानी जैसी बहने वाली चीज़ों के लिए ही प्रयोग में लाया जाता है। कुछ ऐसे शब्द बताइए जिनके साथ लबालब का प्रयोग किया जा सकता हैं?

.....

विद्यार्थी प्रगति पत्रक

शिक्षक/शिक्षिका विगृत पाठों में छात्र की प्रगति को निम्न तालिका में अंकित करें। सीखने के प्रतिफल लिखने के लिए पुस्तक के अंत में दी गई सूची से विवरण लें।

क्र. सं.	सीखने के प्रतिफल	3	2	1
		सक्षम है	सहायता से करता/ करती है	सुधार की आवश्यकता है
1.	....			
2.	....			
3.	....			
4.	....			
5.	....			
6.	....			
7.	....			
8.	....			
9.	....			
10.	....			

कदंब का पेड़ 9

यह कदंब का पेड़ अगर माँ, होता यमुना-तीरे,
मैं भी उस पर बैठ कन्हैया बनता धीरे-धीरे।
ले देती यदि मुझे बाँसुरी तुम दो पैसे वाली,
किसी तरह नीचे हो जाती यह कदंब की डाली।

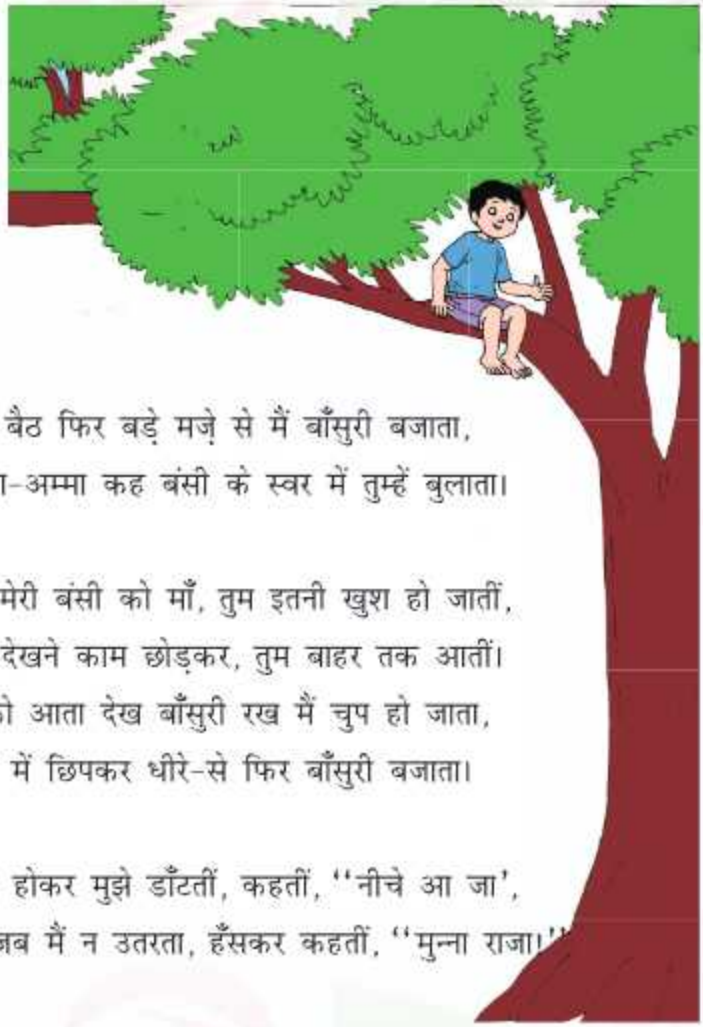

तुम्हें नहीं कुछ कहता, पर मैं चुपके-चुपके आता,
उस नीची डाली से अम्मा, ऊँचे पर चढ़ जाता।

वहीं बैठ फिर बड़े मज़े से मैं बाँसुरी बजाता,
अम्मा-अम्मा कह बंसी के स्वर में तुम्हें बुलाता।

सुन मेरी बंसी को माँ, तुम इतनी खुश हो जातीं,
मुझे देखने काम छोड़कर, तुम बाहर तक आतीं।
तुमको आता देख बाँसुरी रख मैं चुप हो जाता,
पत्तों में छिपकर धीरे-से फिर बाँसुरी बजाता।

गुस्से होकर मुझे डाँटतीं, कहतीं, ''नीचे आ जा',
पर जब मैं न उतरता, हँसकर कहतीं, ''मुन्ना राजा।''

नीचे उतरो मेरे भैया! तुम्हें मिठाई दूँगी,
नए खिलौने, माखन, मिसरी, दूध मलाई दूँगी।''

मैं हँसकर सब से ऊपर की टहनी पर चढ़ जाता,
एक बार माँ कह पत्तों में वहीं कहीं छिप जाता।
बहुत बुलाने पर भी माँ, जब मैं न उतरकर आता,
तब माँ, माँ का हृदय तुम्हारा बहुत विकल हो जाता।

तुम अंचल पसारकर अम्मा, वहीं पेड़ के नीचे,
ईश्वर से कुछ विनती करतीं, बैठी आँखें मीचे।
तुम्हें ध्यान में लगी देख मैं धीरे-धीरे आता,
और तुम्हारे फैले अंचल के नीचे छिप जाता।

तुम घबराकर आँख खोलतीं, फिर भी खुश हो जातीं,
जब अपने मुन्ना राजा को गोदी में ही पातीं।
इसी तरह कुछ खेला करते हम-तुम धीरे-धीरे
माँ, कदम्ब का पेड़ अगर यह होता यमुना-तीरे।

बातचीत के लिए

1. मैं भी उस पर बैठ कन्हैया बनता धीरे-धीरे
   बालक कन्हैया क्यों बनना चाह रहा है?
2. किसी तरह नीचे हो जाती यह कदंब की डाली
   कदंब की डाली के नीचे हो पाने से क्या होगा?
3. मुझे देखने काम छोड़कर, तुम बाहर तक आतीं
   माँ सारा काम-धाम छोड़कर बाहर तक क्यों आ जातीं?
4. मैं हँसकर सबसे ऊपर की टहनी पर चढ़ जाता
   बालक सबसे ऊपर टहनी पर क्यों चढ़ना चाहता है?
5. माँ का हृदय तुम्हारा बहुत विकल क्यों हो जाता
   माँ का हृदय क्यों विकल हो जाता?
6. ईश्वर के कुछ विनती करतीं, बैठी आँखें नीचे
   माँ ईश्वर से क्या विनती करतीं?
7. तुम घबराकर आँख खोलतीं, फिर भी खुश हो जातीं
   माँ क्यों खुश हो जातीं?

माँ के साथ

1. आपने भी अपनी माँ के साथ लुका-छिपी ज़रूर की होगी? कब और कहाँ, अपने साथियों को बताइए।
2. आपकी माँ आपको मनाने के लिए क्या-क्या करती हैं?
3. आप अपनी माँ के साथ क्या-क्या खेल खेलते हैं?
4. माँ के साथ खेलना किस प्रकार अच्छा लगता होगा? क्यों?
5. आप अपनी घर की बोली में अपनी माँ को क्या कहकर बुलाते हैं?
6. आपको अपनी माँ की कौन-सी बातें बहुत अच्छी लगती हैं?
7. आपकी माँ प्यार के साथ-साथ कभी-न-कभी डाँटती भी ज़रूर होंगी। आपको माँ से किस बात पर डाँट पड़ती है?
8. आप अपनी माँ की किन-किन कामों में सहायता करते हैं?

याद है

इस किताब में यमुना और बाँसुरी की बात पहले भी किसी कविता में आई है। उस कविता का शीर्षक लिखिए। यह भी बताइए कि दोनों कविताओं में से कौन-सी कविता आपको ज़्यादा अच्छी लगी? कारण भी बताइए-

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

पेड़-पौधे

1. क्या आपने कदंब का पेड़ देखा है? इस पेड़ के बारे में जानकारी प्राप्त करें। इसका चित्र भी इकट्ठा करें।

2. आपके घर तथा विद्यालय में कौन-कौन से पेड़-पौधे लगे हैं? उनकी सूची बनाइए। यह भी बताइए कि इनमें से कौन-कौन-से पेड़-पौधे आपने लगाए हैं?
3. आप इन पेड़े-पौधों की देखभाल कैसे करते हैं?

बाँसुरी

1. आपने बाँसुरी के अलावा और कौन-कौन से वाद्य-यंत्रों के नाम सुने हैं?
2. इनमें से कौन-कौन से वाद्ययंत्र आपने देखें हैं?
3. क्या आपको कोई वाद्य-यंत्र बजाना आता है?

तुकबंदी

यमुना-तीरे

धीरे-धीरे

इस कविता में इसी प्रकार समान तुकबंदी वाले कई शब्द आए हैं। कविता में से ऐसे शब्दों को छाँटकर लिखिए।

बंसी-बाँसुरी

बंसी शब्द में अनुस्वार (ं) तथा बाँसुरी शब्द में अनुनासिक (ँ) है। नीचे लिखे शब्दों में सही चिह्न लगाइए–

अचल, कस, सारगी, आचल, चद्रमा, चाद, ऊचा, सहया, बास, सास, हाडी, गगा, बूद, ताबा, जग, झडा

बंदर-बाँट 10

बाल-नाटिका

स्थान : यह नाटक किसी खुली जगह पर या किसी बड़े कमरे में खेला जा सकता है।

पात्र-पोशाक : इसके तीन पात्र हैं—एक बंदर, दो बिल्लियाँ। सात-आठ बरस का लड़का बंदर का, पाँच-छह बरस की लड़कियाँ बिल्ली का पार्ट कर सकती हैं।

बंदर के लिए चाहिए—पीला चूड़ीदार पाजामा, कुर्ता और दुपट्टा, जो कमरे में पूंछ-सी निकालकर बाँधा जा सकता है; और मुँह पर लगाने के लिए बंदर का चेहरा जिसमें आँखों और मुँह की जगह इतने बड़े छेद हों जिनसे देखा-बोला जा सके।

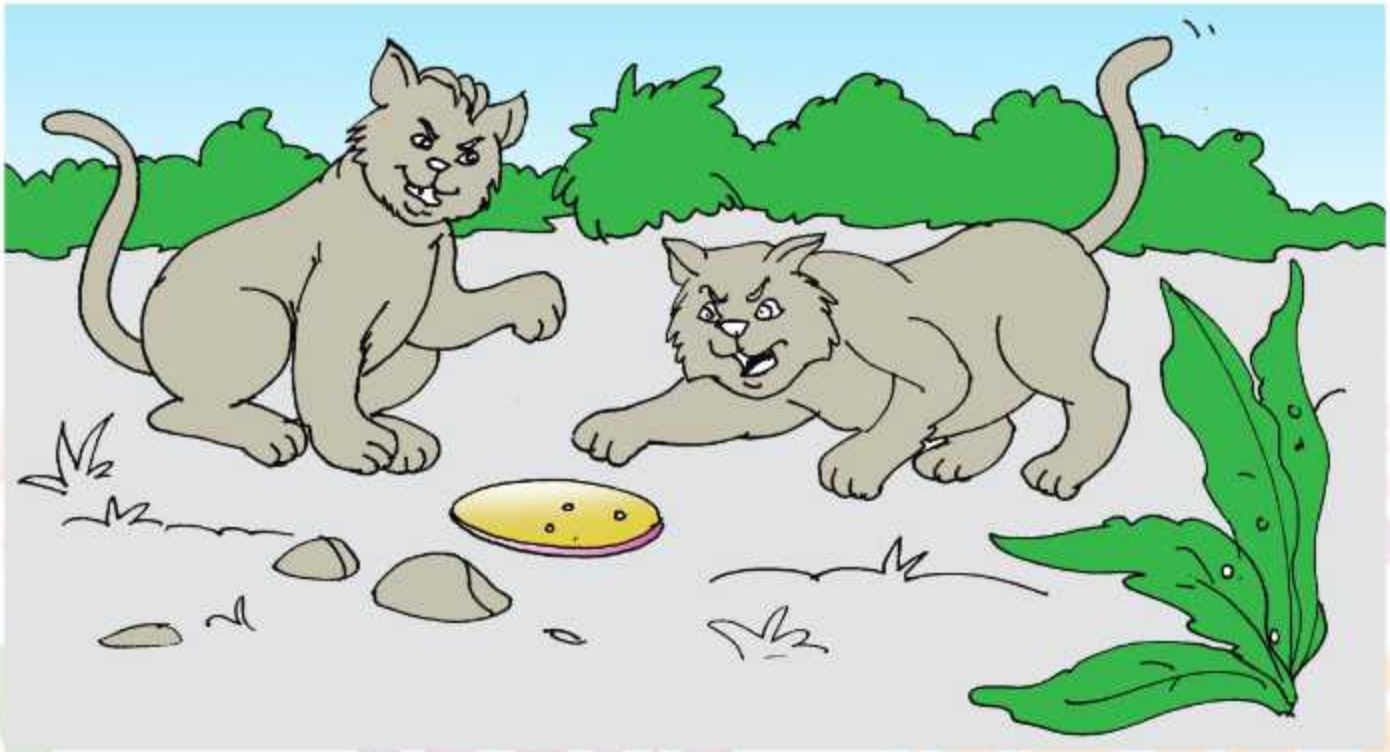

बिल्लियों के लिए चाहिए–काली-सफ़ेद सलवारें, कमीज़ें, दुपट्टे जो कमर में पूँछ-सी निकालकर बाँधे जा सकते हैं; और मुँह पर लगान के लिए काले-सफ़ेद बिल्लियों के चेहरे जिनमें आँखों और मुँह की जगह इतने बड़े छेद हों जिनसे देखा-बोला जा सके।

सामान : एक मेज़, एक बड़ा मेज़पोश या बड़ी चादर, डबलरोटी का एक टुकड़ा, एक छोटी तराज़ू।

[पहला दृश्य-कोई कमरा]

(कमरे के बीच में एक मेज़ है, जिस पर मेज़पोश ऐसे पड़ा है कि आगे से ढका है, मेज़ पर एक डबलरोटी का टुकड़ा है। मेज़ के नीचे एक तराज़ू रखा है, पर दिखाई नहीं देता।

(म्याऊँ-म्याऊँ की आवाज़ होती है और दाहिनी तरफ़ से काली बिल्ली और बाईं तरफ़ से सफ़ेद बिल्ली प्रवेश करती है।)

काली बिल्ली : बिल्ली बहन, नमस्ते!

सफ़ेद बिल्ली : नमस्ते बहन, नमस्ते!

काली बिल्ली : अच्छी तो हो?

सफ़ेद बिल्ली : अच्छी क्या हूँ, भूखी हूँ।

काली बिल्ली : मैं भी भूखी।

सफ़ेद बिल्ली : खाने को कुछ ढूँढ़ रही हूँ।

काली बिल्ली : उसी खोज में मैं भी निकली।

सफ़ेद बिल्ली : मुझे महक रोटी की आती।

काली बिल्ली : हाँ, मेरी भी नाक बताती, पास कहीं है।

सफ़ेद बिल्ली : रखी मेज़ पर है वह रोटी।
लपकूँ? कोई आ न जाए तो .....

काली बिल्ली : तू डर; मैं तो लेने चली....
(काली बिल्ली लपकती है और रोटी लेकर भागने लगती है)

सफ़ेद बिल्ली : ठहर, कहाँ भागी जाती है रोटी लेकर, रोटी मेरी।

काली बिल्ली : रोटी तेरी! कैसे तेरी? रोटी मेरी।

सफ़ेद बिल्ली : मैं न दिखाती तो तू जाती?

काली बिल्ली : अच्छा, क्या मैं खुद न देखती?
क्या मेरी दो आँखें नहीं हैं?
डरती थी उस तक जाने में!
जा, डरपोक कहीं की, जा भाग, रोटी मेरी।

सफ़ेद बिल्ली : रोटी, कहे दे रही, मेरी।
मैं ले जाने तुझे न दूँगी।

काली बिल्ली : देख, राह से मेरी हट जा।
ले जाऊँगी, तुझे न दूँगी।

सफ़ेद बिल्ली : देखूँ, कैसे ले जाती है!
जो पहले देखे हक उसका है रोटी पर!

काली बिल्ली : पहले दौड़े, दौड़ के ले ले पहले उसका हक रोटी पर।
रोटी पर पहला हक मेरा।

सफ़ेद बिल्ली : मैं कहती हूँ, रोटी मेरी।

काली बिल्ली : मैं कहती हूँ, रोटी मेरी।

(दोनों झगड़ती हैं, 'रोटी मेरी', 'रोटी मेरी' कहकर एक-दूसरे पर गुर्राती हैं)

[बंदर का प्रवेश]

बंदर : क्यों तुम दोनों झगड़ रही हो?
तुम कहती हो रोटी मेरी। (सफ़ेद बिल्ली से)
तुम कहती हो रोटी मेरी। (काली बिल्ली से)
रोटी किसकी?

इसका फ़ैसला करूँगा।

चलो कचहरी, मेरे पीछे-पीछे आओ।

(बंदर दोनों से छीनकर रोटी अपने हाथ में लेकर चलता है, दोनों बिल्लियाँ पीछे-पीछे जाती हैं।)

[दूसरा दृश्य-बंदर की कचहरी]

(बंदर मेज़ पर बैठा है। रोटी का टुकड़ा सामने रखा है। दोनों बिल्लियाँ मेज़ के सामने इधर-उधर खड़ी हैं।)

बंदर : (सफ़ेद बिल्ली से) बोलो, तुमको क्या कहना है?

सफ़ेद बिल्ली : श्रीमन्, पहले मैंने ही रोटी देखी थी, इससे रोटी का पूरा हक मेरा बनता है।

बंदर : (काली बिल्ली से) बोलो, तुमको क्या कहना है?

काली बिल्ली : श्रीमन्, पहले मैं झपटी थी रोटी लेने, इससे रोटी पर मेरा हक पूरा बनता।

बंदर : (सफ़ेद बिल्ली से) एक आँख से देखी थी, या दो आँखों से?

सफ़ेद बिल्ली : दो आँखों, दोनों आँखों से।

बंदर : (काली बिल्ली से) एक टाँग से झपटी थी या दोनों टाँगों से?

काली बिल्ली : दो टाँगों से, दोनों टाँगों से।

बंदर : तुम दोनों का था गवाह भी?

दोनों बिल्लियाँ : कहीं न कोई

कहीं न कोई।

बंदर : बात बराबर। बात बराबर।

है मेरा फ़ैसला कि रोटी तोड़-तोड़कर तुम्हें बराबर दे दी जाए।

मेरे पास धरम-काँटा है।

(बंदर मेज़ के नीचे से तराजू निकालकर लाता है। रोटी को दो हिस्सों में तोड़कर दोनों पलड़ों पर रखता है और तराजू उठाता है। एक पलड़ा नीचे रहता है, दूसरा ऊपर)

बंदर : यह टुकड़ा कुछ भारी निकला।

इसमें से थोड़ा खा करके हल्का कर दूँ। (खाता है) (फिर तराजू उठाता है। अब पहला पलड़ा ऊपर हो जाता है, दूसरा नीचे)

बंदर : अब यह टुकड़ा भारी निकला।

अब इसको थोड़ा खा करके हल्का कर दूँ।

(फिर तराजू उठाता है। अब पहला पलड़ा नीचे हो जाता है, दूसरा ऊपर)

बंदर : अब यह टुकड़ा भारी निकला।

टुकड़े भी कितने खोटे हैं
एक दूसरे को छोटा दिखलाने में ही लगे हुए हैं।
मुँह थक गया बराबर करते।
और तराजू उठा-उठाकर हाथ थक गया।
(बिल्लियों को बंदर की चालाकी का पता चल गया और व हाथ मलती हुई बड़ी उदासी से एक-दूसरे को देखती हैं।)

सफ़ेद बिल्ली : आप थक गए,
अब न उठाएँ और तराजू!

काली बिल्ली : बचा-खुचा जो, उसको दे दें;
हम आपस में बाँट खाएँगी।

बंदर : नहीं, नहीं, तुम फिर झगड़ोगी।
मैं झगड़े की जड़ को ही काटे देता हूँ।
बचा-खुचा भी खा लेता हूँ।

(इतना कहकर बची-खुची रोटी भी बंदर खा जाता है और तराजू लेकर भाग जाता है)

दोनों बिल्लियाँ : आपस में झगड़ा कर बैठीं
बुद्धि अपनी खोटी।
अब पछताने से क्या होता,
बंदर हड़पा रोटी।

नाटक से

(क) इस नाटक का नाम बंदर-बाँट क्यों है?
(ख) इस नाटक में बिल्लियाँ क्यों लड़ रही थीं?
(ग) उनके झगड़े का फ़ायदा किसने उठाया?

आगे पीछे

मुझे महक रोटी की आती
इस वाक्य को इस तरह भी लिख सकते हैं–
मुझे रोटी की महक आती।
तुम भी इसी तरह नीचे दिए गए वाक्यों को बदलकर लिखिए–
(क) उसी खोज में मैं भी निकली।
मैं भी .....
(ख) रखी मेज़ पर है वह रोटी।

वह रोटी .....

(ग) मैं ले जाने तुझे न दूँगी।

.....

(घ) जो पहले देखे हक उसका है रोटी पर।

.....

(ङ) डरती थी उस तक जाने में।

.....

नाटक में दिए गए रोटी के चित्र को देखिए। उसके बारे में अपने मन से ये बातें बताइए-

(1) उसका नाम .....

(2) उसका आकार .....

(3) उसका रंग .....

(4) उसका स्वाद .....

उ और ऊ

टुकड़ा	दूसरा
मुँह	तराज़ू

इन शब्दों को पढ़िए। एक तरफ़ लिखे शब्दों में उ की मात्रा है, दूसरी तरफ़ वाले शब्दों में ऊ की मात्रा है। दोनों मात्राओं की आवाज़ों में अंतर को पहचानिए।

अब उ और ऊ की मात्राओं वाले पाँच-पाँच शब्द नाटक में से चुनकर लिखिए-

उ .....

ऊ .....

अभिनय

इस नाटक का या इसके किसी हिस्से का अपनी कक्षा में अभिनय करके दिखाइए-

सोच

इस चित्र को देखकर बताइए कि बिल्ली क्या सोच रही होगी?

.....

.....

.....

.....

.....

उलटे-सीधे

नीचे दिए गए शब्दों के अक्षर उलट-पुलट किए गए हैं। इन्हें ठीक करके लिखिए-

कालनिकल	.....	मराक	.....
हिदानी	.....	कना	.....
हबन	.....	दरचा	.....
गीभा	.....	मानसा	.....

सुनीता की पहिया कुर्सी 11

सुनीता सुबह सात बजे सोकर उठी। कुछ देर तो वह अपने बिस्तर पर ही बैठी रही। वह सोच रही थी कि आज उसे क्या-क्या काम करने हैं। उसे याद आया कि आज तो बाज़ार जाना है। सोचते ही उसकी आँखों में चमक आ गई। सुनीता आज पहली बार अकेले बाज़ार जाने वाली थी।

उसने अपनी टाँगों को हाथ से पकड़ कर खींचा और उन्हें पलंग से नीचे की ओर लटकाया। फिर पलंग का सहारा लेती हुई अपनी पहिया कुर्सी तक बढ़ी। सुनीता चलने-फिरने के लिए पहिया कुर्सी की मदद लेती है। आज वह सभी काम फुर्ती से निपटाना चाहती थी। हालाँकि कपड़े बदलना, जूते पहनना आदि उसके लिए कठिन काम हैं। पर अपने रोज़ाना के काम करने के लिए उसने स्वयं ही कई तरीके ढूँढ़ निकाले हैं।

आठ बजे तक सुनीता नहा-धो कर तैयार हो गई।

माँ ने मेज़ पर नाश्ता लगा दिया था।

''माँ, अचार की बोतल पकड़ाना'', सुनीता ने कहा।

''अलमारी में रखी है। ले लो'', माँ ने रसोईघर से जवाब दिया।

सुनीता खुद जाकर अचार ले आई।

नाश्ता करते-करते उसने पूछा, ''माँ, बाज़ार से क्या-क्या लाना है?''

''एक किलो चीनी लानी है। पर क्या तुम अकेले सँभाल लोगी?''

''पक्का'', सुनीता ने मुस्कुराते हुए कहा।

सुनीता ने माँ से झोला और रुपए लिए। अपनी पहिया कुर्सी पर बैठकर वह बाज़ार की ओर चल दी।

सुनीता को सड़क की जिंदगी देखने में मज़ा आता है। चूँकि आज छुट्टी है इसलिए हर जगह बच्चे खेलते हुए दिखाई दे रहे हैं। सुनीता थोड़ी देर रुककर उन्हें रस्सी कूदते, गेंद खेलते देखती रही। वह थोड़ी उदास हो गई। वह भी उन बच्चों के साथ खेलना चाहती थी। खेल के मैदान में उसे एक लड़की दिखी, जिसकी माँ उसे वापस लेने के लिए आई थी। दोनों एक-दूसरे को टुकुर-टुकुर देखने लगे।

फिर सुनीता को एक लड़का दिखा। उस बच्चे को बहुत सारे बच्चे ''छोटू-छोटू'' बुलाकर चिढ़ा रहे थे। उस लड़के का कद बाकी बच्चों से बहुत छोटा था। सुनीता को यह सब बिलकुल अच्छा नहीं लगा।

रास्ते में कई लोग सुनीता को देखकर मुस्कुराए, जबकि वह उन्हें जानती तक नहीं थी। पहले तो वह मन ही मन खुश हुई परंतु फिर सोचने लगी, ''ये सब लोग मेरी तरफ़ भला इस तरह क्यों देख रहे हैं?''

खेल के मैदान वाली छोटी लड़की सुनीता को दोबारा कपड़ों की दुकान के सामने खड़ी मिली। उसकी माँ कुछ कपड़े देख रही थी।

''तुम्हारे पास यह अजीब-सी चीज़ क्या है?'' उस लड़की ने सुनीता से पूछा।

''यह तो बस एक...,''

सुनीता जवाब देने लगी परंतु उस लड़की की माँ ने गुस्से में आकर लड़की को सुनीता से दूर हटा दिया।

''इस तरह का सवाल नहीं पूछना चाहिए फ़रीदा! अच्छा नहीं लगता!'' माँ ने कहा।

''मैं दूसरे बच्चों से अलग नहीं हूँ'' सुनीता ने दुखी होकर कहा। उसे फ़रीदा की माँ का व्यवहार समझ में नहीं आया।

अंत में सुनीता बाज़ार पहुँच गई। दुकान में घुसने के लिए उसे सीढ़ियों पर चढ़ना था। उसके लिए यह कर पाना बहुत मुश्किल था। आसपास के सब लोग जल्दी में थे। किसी ने उसकी तरफ़ ध्यान नहीं दिया।

अचानक जिस लड़के को ''छोटू'' कहकर चिढ़ाया जा रहा था वह उसके सामने आकर खड़ा हो गया।

''मैं अमित हूँ'', उसने अपना परिचय दिया, ''क्या मैं तुम्हारी कुछ मदद करूँ?''

''मेरा नाम सुनीता है'', सुनीता ने राहत की साँस ली और मुस्कुराकर बोली, ''पीछे के पैडिल को पैर से ज़रा दबाओगे?''

''हाँ, हाँ, ज़रूर'' कहते हुए अमित ने पहिया-कुर्सी को टेढ़ा करके उसके अगले पहियों को पहली सीढ़ी पर रखा। फिर उसने पिछले पहियों को भी ऊपर चढ़ाया। सुनीता ने अमित को धन्यवाद दिया और कहा, अब मैं दुकान तक खुद पहुँच सकती हूँ।''

दुकान में पहुँचकर सुनीता ने एक किलो चीनी माँगी। दुकानदार उसे देखकर मुसकुराया। चीनी की थैली पकड़ने के लिए उसने हाथ आगे बढ़ाया ही था कि दुकानदार ने थैली उसकी गोदी में रख दी। सुनीता ने गुस्से से कहा, ''मैं भी दूसरों की तरह खुद अपने आप सामान ले सकती हूँ।''

उसे दुकानदार का व्यवहार बिल्कुल अच्छा नहीं लगा। चीनी लेकर सुनीता और अमित बाहर निकले।

''लोग मेरे साथ ऐसा व्यवहार करते हैं जैसे कि मैं कोई अजीबोगरीब लड़की हूँ।'' सुनीता ने कहा।

''शायद तुम्हारी पहिया कुर्सी के कारण ही वे ऐसा व्यवहार करते हैं।'' अमित ने कहा।

''पर इस कुर्सी में भला ऐसी क्या खास बात है, मैं तो बचपन से ही इस पर बैठकर इसे चलाती हूँ'', सुनीता ने कहा।

अमित ने पूछा, ''पर तुम इस पर क्यों बैठती हो?''

''मैं पैरों से चल ही नहीं सकती। इस

पहिया कुर्सी के पहियों को घुमाकर ही मैं चल-फिर पाती हूँ लेकिन फिर भी मैं दूसरे बच्चों से अलग नहीं हूँ। मैं वे सारे काम कर सकती हूँ जो दूसरे बच्चे कर सकते हैं'' सुनीता ने कहा।

अमित ने अपना सिर ना में हिलाया और कहा, ''मैं भी वे सारे काम कर सकता हूँ जो दूसरे बच्चे कर सकते हैं। पर मैं भी दूसरे बच्चों से अलग हूँ। इसी तरह तुम भी अलग हो।''

सुनीता ने कहा, ''नहीं! हम दोनों दूसरे बच्चों जैसे ही हैं।''

अमित ने दोबारा अपना सिर ना में हिलाया और कहा, ''देखो तुम पहिया कुर्सी पर बैठकर चलती हो। मेरा कद बहुत छोटा है। हम दोनों ही बाकी लोगों से कुछ अलग हैं।''

सुनीता कुछ सोचने लगी। उसने अपनी पहिया कुर्सी आगे की ओर खिसकाई। अमित भी उसके साथ-साथ चलने लगा।

सड़क पार करते समय सुनीता को फ़रीदा फिर नज़र आई। इस बार फ़रीदा ने कोई सवाल नहीं पूछा। अमित झट से सुनीता की पहिया कुर्सी के पीछे चढ़ गया। फिर दोनों पहिया-कुर्सी पर सवार होकर तेज़ी से सड़क पर आगे बढ़े। फ़रीदा भी उनके साथ-साथ दौड़ी। इस बार भी लोगों ने उन्हें घूरा परंतु अब सुनीता को उनकी परवाह नहीं थी।

प्यारी सुनीता

सुनीता के बारे में पढ़कर तुम्हारे मन में कई बातें आ रही होंगी। वे बातें सुनीता को चिट्ठी लिखकर बताइए-

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

ऊपर 'र'

कुर्सी, फुर्ती

इन दोनों शब्दों को पढ़कर इनमें र खोजिए। पहचाना? इन दोनों में र, स और त के ऊपर लगा है।

ऐसे ही ऊपरी र वाले पाँच शब्द और लिखिए-

आपके काम

आपने सुबह से लेकर अब तक कई काम कर लिए होंगे। कई काम आप अभी और करोगे। आज सुबह से लेकर सोने तक के अपने सभी कामों की सूची बनाइए। अच्छा रहेगा अगर आप काम के साथ-साथ उसका समय भी लिख दें।

पूरे करो

नीचे दिए गए वाक्य अपनी कल्पना से पूरे कीजिए-

(क) सोचते ही .....

(ख) आठ बजे तक .....

(ग) रास्ते में .....

(घ) खेल के मैदान में .....

(ङ) ..... नहीं लगा।

नाम

नीचे दिए गए चित्रों का अपने मन से कोई नाम रखिए-

.....

.....

अर्थ खोजो

नीचे लिखे शब्दों के अर्थ अक्षर जाल में से खोजिए-

ढंग	त	त	खा	दे	चो
झोला	री	र	स	खो	र
विशेष	का	बू	आ	थै	ला
धन्यवाद	ल	जी	व	न	म
ज़िंदगी	शु	क्रि	या	ल	थ

बनाओ

बताओ, नीचे दिए गए अक्षरों से कौन-सा शब्द बनेगा?

य च प रि	चाय	परी	परिचय	परचा
	रचना	चार पायी	रिचा	पाया

ये भी तो है दिल्ली में 12

आप जिस इमारत में रहते हैं, वह कितने साल पुरानी है? एक साल? दस साल? पचास साल? सौ साल? आपके घर और घर के आसपास की ज़्यादातर इमारतें इतनी ही पुरानी होंगी। इमारत जितनी ज़्यादा पुरानी होती जाएगी, उसकी मज़बूती उतनी ही घटती जायेगी। फिर एक दिन ऐसा भी आएगा कि वह इमारत बिल्कुल गायब हो जाएगी।

लेकिन अब जो बात हम आपको बताने जा रहे हैं, उसे जानकर आप हैरान रह जाएँगे। आपके घर या स्कूल के पास आज भी ऐसी कई इमारतें हैं जो एक सौ नहीं, दो सौ नहीं, बल्कि सैकड़ों-हज़ारों साल पुरानी हैं। आपको यह जानकर भी हैरानी होगी कि जिस ज़माने में ये इमारते बनी थीं, उस ज़माने में इमारतें बनाने के लिए लोहे या सीमेंट का इस्तेमाल नहीं किया जाता था। उस ज़माने में सभी इमारतें पत्थर और चूने के मसाले से बनाई जाती थीं। आज तो हम लोहे के सरियों और सीमेंट के बिना एक दीवार तक बनाने की बात सोच भी नहीं सकते लेकिन सैकड़ों साल पहले के लोग सिर्फ़ पत्थर और मसाले से पूरे-पूरे किले तक बना लिया करते थे। और वे इमारतें इतनी मज़बूत हैं कि आज भी हमारे आस-पास मौजूद हैं। है ना अनोखी बात?

दिल्ली में ऐसी पुरानी इमारतें चारों तरफ मिल जाती हैं। इनमें से कुछ इमारतें तो बहुत मशहूर हैं। दूर-दूर से लोग उन्हें देखने के लिए आते हैं। हो सकता है कि आपने भी उन्हें देखा हो। ऐसी ही कुछ मशहूर इमारतों के नाम हैं लाल किला, जंतर-मंतर, हुमायूँ का मकबरा, कुतुब मीनार आदि। लेकिन आज हम आपको कुछ ऐसी पुरानी इमारतें और चीज़ों के बारे में बताएँगे जिनके बारे में बहुत कम लोगों को पता है।

हस्तसाल मीनार

आपने कुतुबमीनार तो देखा ही होगा। कुतुबमीनार पत्थर से बनी हुई दुनिया की सबसे ऊँची मीनार है। यह इतनी सुंदर है कि देखने वाले बस देखते ही रह जाते हैं। कितनी अनोखी बात है कि दिल्ली में ही एक और मीनार भी है लेकिन उसके बारे में बहुत कम लोग जानते हैं। वह मीनार है हस्तसाल गाँव में। हस्तसाल गाँव नजफगढ़ के पास है। इस गाँव का नाम

पड़ा है सैकड़ों साल पुरानी एक इमारत के नाम पर। उस इमारत का नाम है हस्तसाल यानी हाथियों का घर। कहते हैं कि पुराने ज़माने में उस इमारत में हाथी रहते थे।

इसी गाँव में सैकड़ों साल पुरानी यह मीनार खड़ी है। गाँव के लोग इसे 'लाट' कहकर बुलाते हैं। यह मीनार देखने में कुतुबमीनार की तरह लगती है। यह मीनार किसने बनवाई, इसके बारे में किसी को नहीं पता। बस इतना पता है कि यह 500 साल पुरानी तो होगी ही। गाँव के बड़े-बुजुर्ग बताते हैं कि पहले इस मीनार में चार मंजिलें थीं। लेकिन पता नहीं कैसे और कब, एक मंजिल गिर गई। अब इस मीनार में सिर्फ़ तीन मंज़िल बची हैं।

यह मीनार 17 मीटर ऊँची है। इसे बनाने में लाल पत्थरों और संगमरमर का इस्तेमाल किया गया है। कुतुबमीनार के अंदर जाना तो मना है लेकिन आप इस मीनार के अंदर सीढ़ियाँ चढ़कर इसके ऊपर तक जा सकते हैं। इस मीनार में भी कुतुब मीनार की तरह के डिज़ाइन का इस्तेमाल किया गया है।

आजकल इस मीनार की हालत धीरे-धीरे अच्छी होने लगी है। स्कूल-कॉलेज के बच्चे इसे देखने जाते हैं और इसकी फोटो खींचते हैं।

मोठ की मस्जिद

आपने मोठ दाल ज़रूर खाई होगी। क्या मोठ की दाल का एक दाना पूरी इमारत बना सकता है? भाई, लोग तो ऐसा ही कहते हैं। कहते हैं कि मोठ की मस्जिद केवल एक दाने से हुई कमाई से बनवाई गई थी। किस्सा इस तरह से है:

आज से लगभग छह सौ साल पहले दिल्ली में सिकंदर लोधी नाम का राजा राज करता था। उसका एक मंत्री था मियाँ भुवा। एक बार राजा मस्जिद में गया। वहाँ एक चिड़िया ने एक मोठ का दाना गिरा दिया। राजा ने वह दाना उठाकर मंत्री भुवा को दे दिया। भुवा ने उस दाने को फेंकने के बजाय बो दिया। फिर जो दाने आए, उसने उन दानों को भी बो दिया.... धीरे-धीरे उस एक दाने से लाखों दाने बन गए। भुवा उन दानों को बेचता रहा और जो धन जमा किया, उससे यह मस्जिद बनवा दी। इसीलिए इस मस्जिद का नाम है मस्जिद मोठ। जिस गाँव में यह मस्जिद बनाई गई, उस गाँव का नाम भी इसी मस्जिद के नाम पर पड़ गया है।

यह मस्जिद एक ऊँचे चबूतरे पर बनी है। ऊपर जाने के लिए 10-15 सीढ़ियाँ चढ़नी पड़ती हैं। एक बड़ा-सा दरवाज़ा पार करके आप चारदीवारी के अंदर पहुँच जाते हैं। अंदर घुसते ही हरे-भरे पेड़ नज़र आते हैं। अंदर की इमारत में 3 गुंबद हैं। जगह-जगह सुंदर नक्काशी की गई है। चारदीवारी के कोनों पर सुंदर छतरियाँ बनी हुई हैं। सीढ़ियों से चढ़कर इसकी छत तक भी जा सकते हैं।

आजकल इस इमारत में केवल आस-पास के गाँव वाले धूप सेंकने आते हैं। गाँव के कुछ बच्चे यहाँ क्रिकेट खेलते

हुए भी मिल जाते हैं। दुख की बात यह है कि कुछ नासमझ लोगों ने दीवारों पर खुरच-खुरचकर इस इमारत को खराब कर दिया है। कुछ लोगों ने इस इमारत की चारदीवारी को तोड़फोड़ ही दिया है।

सम्राट अशोक का आदेश

आज से लगभग ढाई हज़ार साल पहले भारत में एक महान राजा राज करता था। उसका नाम था अशोक। अशोक के दादा का नाम आपने ज़रूर सुना होगा। अशोक के दादा थे प्रसिद्ध सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य। अशोक का राज पूरे भारत में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी फैला हुआ था। इतने बड़े राज को चलाने के लिए बहुत समझदारी की ज़रूरत थी। उस ज़माने में आजकल की तरह टेलीफोन, हवाई जहाज या कारें तो थी नहीं। एक जगह से दूसरी जगह जाने का सबसे तेज़ ज़रिया था- घोड़े। अशोक ने भारत के लोगों तक अपनी बातों को पहुँचाने के लिए एक अनोखा उपाय सोचा। उसने पूरे देश में जगह-जगह अपने आदेश और बातें खंभों, पत्थरों और चट्टानों पर खुदवा दीं। उसने ये बातें बड़े-बड़े शहरों और रास्तों के किनारों पर खुदवाई थीं ताकि ज़्यादा-से-ज़्यादा लोग उन्हें पढ़ सकें। ढाई हज़ार सालों के बाद भी अशोक की ये बातें हम पढ़ सकते हैं। है न अनोखी बात?

दिल्ली में गढ़ी नाम की जगह में एक पार्क है। आप उस पार्क में सम्राट अशोक का ढाई हज़ार साल पुराना चट्टान पर खुदा एक लेख देख सकते हैं। आप उसे पढ़ नहीं सकेंगे क्योंकि अशोक के समय में अलग भाषाएँ बोली जाती थीं। इस लेख में अशोक ने देश के लोगों से कहा है ''चाहे कोई अमीर हो या गरीब, कभी कोशिश करना बंद नहीं करना चाहिए क्योंकि लगातार कोशिश करने से ही सफलता मिलती है।''

अभ्यास

आपके आसपास

आपके घर के पास की किसी बहुत पुरानी इमारत को देखने जाइए। उसके बारे में नीचे लिखी बातें पता कीजिए–

(क) उसका नाम .....

(ख) कितनी पुरानी है .....

(ग) किसने बनवाई थी .....

(घ) किसलिए बनवाई थी .....

(ङ) उसका रंग क्या है? .....

(च) किन चीज़ों से बनवाया गया था .....

(छ) अब उसकी कैसी हालत है .....

उस इमारत का चित्र भी बनाइए–

रंग बिरंगा

इस पाठ में अलग-अलग रंगों की चीज़ों के नाम आए हैं। पाठ में से खोजकर ऐसी चीज़ों के नाम लिखिए जो–

- सफ़ेद रंग की हैं .....
- लाल रंग की हैं .....

मानचित्र

दिल्ली के मानचित्र में इन जगहों के नाम खोजकर उन पर घेरा लगाइए-

- कुतुबमीनार
- लालकिला
- हस्तसाल
- गढ़ी
- मस्जिद मोठ
- जंतर-मंतर

अंतर

इस पाठ के आधार पर अपने घर और पुराने समय के घरों में कोई दो अंतर बताइए।

नए शब्द

नीचे कुछ शब्द दिए गए हैं। इन शब्दों में कोई और शब्द भी छिपा है। उसे पहचानकर लिखिए-

इमारत	मार	जानकर	.....
पुरानी	.....	छतरी	.....
दीवार	.....	लगातार	.....
मीनार	.....	सफलता	.....

पहली बार

इस पाठ में से पाँच ऐसे शब्द खोजकर नीचे लिखिए जो आपने पहली बार सुने या पढ़े हैं।

.....

.....

.....

.....

.....

मिलते-जुलते वाक्य

नीचे दिए गए वाक्य की तरह के तीन वाक्य अपने मन से लिखिए। उनके अंत में 'ही होगा' आना चाहिए।

आपने ताज़महल तो देखा ही होगा।

'ही होगा' के अलावा आपने अपने वाक्यों में ऊपर के वाक्य के किसी और शब्द का प्रयोग नहीं करना है।

.....

.....

.....

आपके सवाल

इस पाठ के बारे में अपने मन से पाँच सवाल बनाकर लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

पूरा और पुराना

पूरा और पुराना शब्द में कौन-कौन से अंतर है? आपस में बातचीत करके पाँच अंतर खोजिए व नीचे लिखिए-

.....

.....

.....

.....

.....

विद्यार्थी प्रगति पत्रक

शिक्षक/शिक्षिका विगत पाठों में छात्र की प्रगति को निम्न तालिका में अंकित करें। सीखने के प्रतिफल लिखने के लिए पुस्तक के अंत में दी गई सूची से विवरण लें।

क्र. सं.	सीखने के प्रतिफल	3	2	1
		सक्षम है	सहायता से करता/ करती है	सुधार की आवश्यकता है
1.	.....			
2.	.....			
3.	.....			
4.	.....			
5.	.....			
6.	.....			
7.	.....			
8.	.....			
9.	.....			
10.	.....			

पानी रे पानी

13

कहाँ से आता है हमारा पानी और फिर कहाँ चला जाता है हमारा पानी? हमने कभी इस बारे में कुछ सोचा है? सोचा तो नहीं होगा शायद, पर इस बारे में पढ़ा ज़रूर है। भूगोल की किताब पढ़ते समय जल-चक्र जैसी बातें हमें बताई जाती हैं। एक सुंदर-सा चित्र भी होता है, इस पाठ के साथ। सूरज, समुद्र, बादल, हवा, धरती फिर बरसात की बूँदें और लो फिर बहती हुई एक नदी और उसके किनारे बसा तुम्हारा, हमारा घर, गाँव या शहर। चित्र के दूसरे भाग में यही नदी अपने चारों तरफ़ का पानी लेकर उसी समुद्र में मिलती दिखती है। चित्र में कुछ तीर भी बने रहते हैं। समुद्र से उठी भाप बादल बनकर पानी में बदलती है और फिर इन तीरों के सहारे जल की यात्रा एक तरफ़ से शुरू होकर समुद्र में वापिस मिल जाती है। जल-चक्र पूरा हो जाता है।

यह तो हुई चल-चक्र की किताबी बात। पर अब तो हम सबके घरों में, स्कूल में, माता-पिता के दफ़्तरों में, कारखानों और खेतों में पानी का कुछ अजीब-सा चक्कर सामने आने लगा है।

नलों में अब पूरे समय पानी नहीं आता। नल खोलो तो उससे पानी के बदले सूँ-सूँ की आवाज़ आने लगती है। पानी आता भी है तो बेवक्त। कभी देर रात को तो कभी भोर सबेरे। मीठी नींद छोड़कर घर भर की बाल्टियाँ, बर्तन और

घड़े भरते फिरो। पानी को लेकर कभी-कभी, कहीं-कहीं आपस में तू-तू मैं-मैं, भी होने लगती हैं।

रोज़-रोज़ के इन झगड़े-टंटों से बचने के लिए कई घरों में लोग नलों के पाईप में मोटर लगवा लेते हैं। इससे कई घरों का पानी खिंचकर एक ही घर में आ जाता है। यह तो अपने आस-पास का हक छीनने जैसा काम है। लेकिन मजबूरी मानकर इस काम को मोहल्ले में कोई एक घर कर बैठे तो फिर और कई घर यही करने लगते हैं। पानी की कमी और बढ़ जाती है। शहरों में तो अब कई चीज़ों की तरह पानी भी बिकने लगा है। यह कमी गाँव शहरों में ही नहीं बल्कि हमारे प्रदेशों की राजधानियों में और दिल्ली, मुंबई, कोलकाता, चेन्नई और बेंगलुरू जैसे बड़े शहरों में भी लोगों को भयानक कष्ट में डाल देती है। देश के कई हिस्सों में तो अकाल जैसी हालत बन जाती है। यह तो हुई गर्मी के मौसम की बात।

लेकिन बरसात के मौसत में क्या होता है? लो, सब तरफ़ पानी ही बहने लगता है। हमारे-तुम्हारे घर, स्कूल, सड़कों, रेल की पटरियों पर पानी भर जाता है। देश के कई भाग बाढ़ में डूब जाते हैं। यह बाढ़ न गाँवों को छोड़ती है और न मुंबई जैसे बड़े शहरों को। कुछ दिनों के लिए सब कुछ थम जाता है, सब कुछ बह जाता है।

ये हालात हमें बताते हैं कि पानी का बेहद कम हो जाना और पानी का बेहद ज़्यादा हो जाना, यानी अकाल और बाढ़ एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। यदि हम इन दोनों को ठीक से समझ सकें और सँभाल लें तो इन कई समस्याओं से छुटकारा मिल सकता है।

चलो, थोड़ी देर के लिए हम पानी के इस चक्कर को भूल जाएँ और याद करें अपनी गुल्लक को। जब भी हमें कोई पैसा देता है, हम खुश होकर, दौड़कर उसे झट-से अपनी गुल्लक में डाल देते हैं।

एक रुपया, दो रुपया, पाँच रुपया, कभी सिक्के, तो कभी छोटे-बड़े नोट-सब इसमें धीरे-धीरे जमा होते जाते हैं। फिर जब कभी हमें कुछ पैसों की ज़रूरत पड़ती है तो इस गुल्लक की बचत का उपयोग कर लेते हैं।

हमारी यह धरती भी इस तरह की खूब बड़ी गुल्लक है। मिट्टी की बनी इस विशाल गुल्लक में प्रकृति वर्षा के मौसम में खूब पानी बरसाती है। तब रुपयों से भी कई गुना कीमती इस वर्षा को हमें इस बड़ी गुल्लक में जमा कर लेना

चाहिए। हमारे गाँव में, शहर में जो छोटे-बड़े तालाब, झील आदि हैं वे धरती की गुल्लक में पानी भरने का काम करते हैं। इनमें जमा पानी ज़मीन के नीचे छिपे जल के भंडार में धीरे-धीरे रिसकर, छनकर जा मिलता है। इससे हमारा भूजल भंडार समृद्ध होता जाता है। पानी का यह खज़ाना हमें दिखता नहीं, लेकिन इसी खज़ाने से हम बरसात का मौसम बीत जाने के बाद पूरे साल भर तक अपने उपयोग के लिए घर में, खेतों में, पाठशाला में पानी निकाल सकते हैं।

लेकिन एक दौर ऐसा भी आया जब हम लोग इस छिपे खज़ाने का महत्व भूल गए और ज़मीन के लालच में हमने अपने तालाबों को कचरे से पाटकर, भरकर समतल बना दिया। देखते-ही-देखते इन पर तो कहीं मकान, कहीं बाज़ार, स्टेडियम और सिनेमा आदि खड़े हो गए।

इस बड़ी गलती की सज़ा अब हम सबको मिल रही है। गर्मी के दिनों में हमारे नल सूख जाते हैं और बरसात के दिनों में हमारी बस्तियाँ डूबने लगती हैं। इसलिए यदि हमें अकाल और बाढ़ से बचना है तो अपने आस-पास के जलस्रोतों की, तालाबों की और नदियों आदि की रखवाली अच्छे ढंग से करनी पड़ेगी। जल-चक्र हम ठीक से समझें, जब बरसात हो तो उसे थाम लें, अपना भूजल भंडार सुरक्षित रखें, अपनी गुल्लक भरते रहें तभी हमें ज़रूरत के समय पानी की कोई कमी नहीं आएगी। यदि हमने जल-चक्र का ठीक उपयोग नहीं किया तो हम पानी के चक्कर में फँसते चले जाएंगे।

अभ्यास

हमारा पानी

इस लेख की पहली पंक्ति फिर से पढ़ो। अब बताओं कि इस पंक्ति में दो बार 'हमारा' शब्द क्यों लिखा गया है? अगर 'हमारा' शब्द न होता तो इस वाक्य के मतलब में कोई अंतर आता?

.....

.....

इस लेख में जलचक्र के चित्र के बारे में लिखा है। उसे पढ़कर चलचक्र का एक चित्र बनाइए-

नारा

आप जल के बारे में अच्छे-से नारे या स्लोगन बनाकर लिखिए-

सिक्के के पहलू

एक सिक्का हाथ में लेकर उसके दोनों पहलू देखिए। बताइए आपने क्या-क्या देखा।

अंतर

सूखे और बाढ़ में अंतर बताइए-

सूखा बाढ़

इ और ई

किताब से

कुछ शब्दों इस में इ की मात्रा है और ई की भी।

ऐसे ही और शब्द लिखिए जिनमें ये दोनों मात्राएँ हों।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

तीरों से

नीचे दिए गए नामों में कुछ प्राणियों के नाम दिए गए हैं जो एक-दूसरे को खाते हैं। तीर बनाकर बताइए, कौन किसे खाता है।

चीता	बिल्ली	मोर	
शेर	खरगोश	इंसान	
मुरगी	हिरण	कुत्ता	साँप
घास	हाथी	बाघ	
कीड़ा	मेंढ़क		

घर के शब्द

कभी भोर-सबेरे।

कुछ लोग अपने घरों में सवेरे को भोर या सबेरे बोलते हैं।

(क) आप सवेरे को अपने घर में क्या बोलते हैं?

(ख) कुछ ऐसे शब्द लिखिए जो आप सिर्फ़ अपने घर में बोलते हैं, स्कूल में नहीं बोलते।

जोड़ों के पास

बाल्टियाँ मक्खियाँ रस्सियाँ

इन शब्दों में इ की मात्रा पर ध्यान दो। यह मात्रा अक्षरों के जोड़े अपने अंदर घेर लेती है। है न?

अब आप नीचे दिए गए शब्दों को इस तरह बदलो कि उनमें भी इ की मात्रा आ जाए।

पत्ती	बत्ती
बस्ती	नियुक्त
चक्की	भक्त

बाघ आया उस रात

14

''वो इधर से निकला
उधर चला गया ऽऽ''
वो आँखें फैलाकर
बतला रहा था–
''हाँ बाबा, बाघ आया उस रात
आप रात को बाहर न निकलो!
जाने कब बाघ फिर से आ जाए!''
''हाँ, वो ही! वो ही जो
उस झरने के पास रहता है
वहाँ आप दिन के वक्त
गए थे न एक रोज़?
बाघ उधर ही तो रहता है
बाबा, उसके दो बच्चे हैं
बाघिन सारा दिन पहरा देती है
बाघ या तो सोता है
या बच्चों से खेलता है...''
दूसरा बालक बोला–
''बाघ कहीं काम नहीं करता
न किसी दफ़्तर में
न कॉलेज में ऽऽ''
छोटू बोला–
''स्कूल में भी नहीं...''
पाँच-साला बेटू ने
हमें फिर से आगाह किया
''अब रात को बाहर होकर बाथरूम न जाना!''

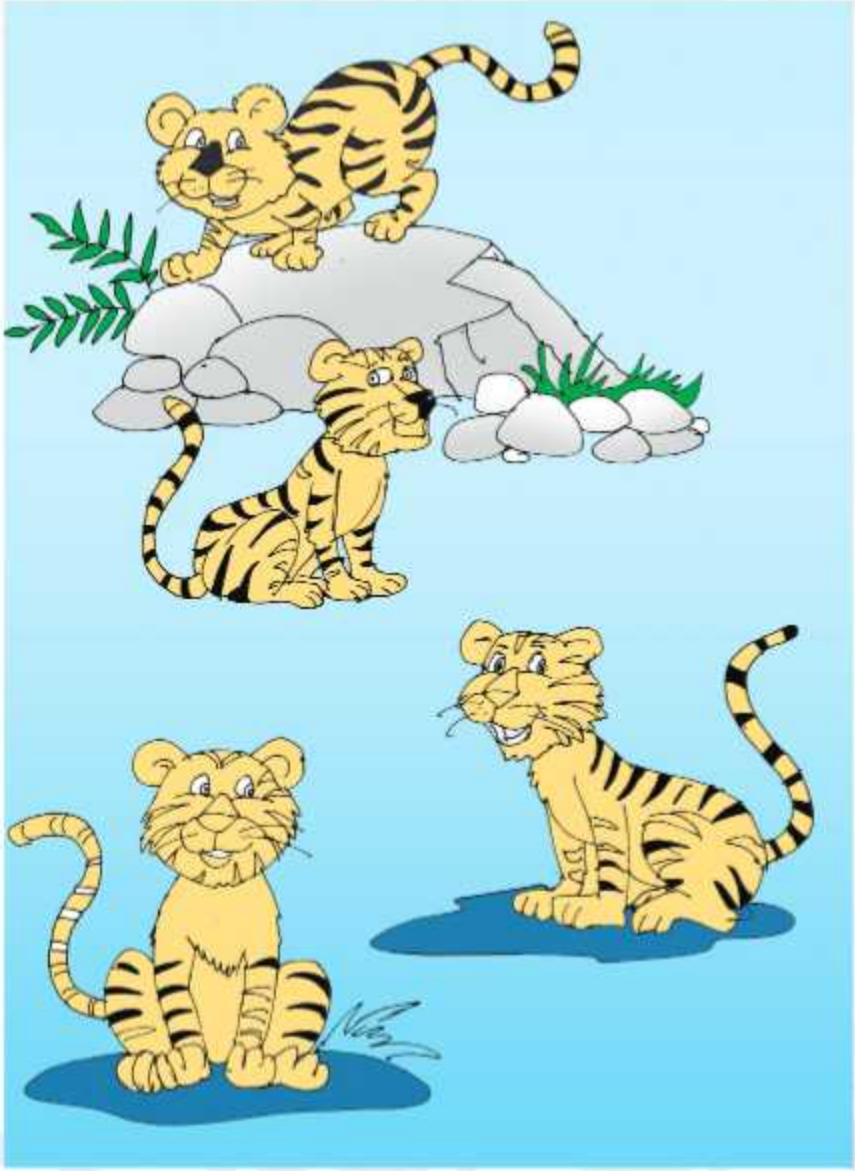

अभ्यास

सही/गलत

बताइए, नीचे दी गई बातें सही हैं या गलत?

(क) रात को बाघ आया था।

(ख) बाघ कॉलेज में आया था।

(ग) बाघिन कुछ काम नहीं करती।

(घ) एक बेटे की आयु पाँच साल थी।

(ङ) बाथरूम जाने के लिए घर से बाहर जाना पड़ता था।

आगाह

पाँच साल के बेटू ने हमें फिर से आगाह किया

आगाह का क्या मतलब हो सकता है? सही उत्तर चुनिए–

- खबरदार करना
- बताना
- समझाना
- डराना

मुहावरे

वो आँखें फैलाकर बतला रहा था।

नीचे आँखों से जुड़े कुछ, मुहावरे दिए गए हैं। इनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

- आँख लगना
- आँखें दिखाना
- आँखें भरना
- आँख बचाना

कविता में दिए गए चित्र को देखिए। इस चित्र में आपको कितने बाघ दिखाई दे रहे हैं? लिखिए-

.....

कॉलेज का कॉ

कॉलेज शब्द में का के ऊपर आधा चाँद जैसा बना है। इस निशान के कारण का की आवाज़ थोड़ी बदल जाती है। आप

निशान वाले कुछ शब्द लिखिए। याद रखिए यह निशान केवल अंग्रेज़ी के कुछ शब्दों में लगाते हैं।

आ की मात्रा

(क) नीचे दिए गए शब्दों में आ की मात्रा गलत जगह लगी है। इन्हें ठीक करके लिखिए-

रता बरा आगहा बलका बघारहात

(ख) कविता में से ऐसे दो शब्द चुनकर लिखो जिनमें यदि आ की मात्रा की जगह बदल दें तो एक नया शब्द बन जाता है। जैसे–रहता – राहत

.....

.....

.....

.....

.....

हैरानी

इस कविता में एक अनोखी बात का ज़िक्र किया गया है। उसे सुनकर हैरानी-सी होती है।

क्या आप कभी किसी बात पर हैरान हुए हैं? किस बात पर? बताइए।

जानवर

नीचे दिए गए अक्षर जाल में से जानवरों के नाम खोजकर लिखिए-

.....	बा	घ	गा	भे
.....	हा	ज़े	य	स
.....	थी	ब्रा	घो	क्र
.....	लो	म	ड़ी	त्ता

मिर्च का मज़ा

15

एक काबुलीवाले की कहते हैं लोग कहानी,
लाल मिर्च को देख गया भर उसके मुँह में पानी।
सोचा, क्या अच्छे दाने हैं, खाने से बल होगा,
यह ज़रूर इस मौसम का कोई मीठा फल होगा।
एक चवन्नी फेंक और झोली अपनी फैलाकर,
कुँजड़िन से बोला बेचारा ज्यों-त्यों कुछ समझाकर।
लाल-लाल, पतली छीमी हो चीज़ अगर खाने की,
तो हमको दो तोल छीमियाँ फ़कत चार आने की।
हाँ, यह तो सब खाते हैं–कुँजड़िन बेचारी बोली,
और सेर भर लाल मिर्च से भर दी उसकी झोली।
मगन हुआ काबुली फली का सौदा सस्ता पाके,
लगा चबाने मिर्च बैठकर नदी-किनारे जाके।
मगर, मिर्च ने तुरंत जीभ पर अपना ज़ोर दिखाया,
मुँह सारा जल उठा और आँखों में जल भर आया।
पर, काबुल का मर्द लाल छीमी से क्यों मुख मोड़े?
खर्च हुआ जिसपर उसको क्यों बिना सधाए छोड़े?
आँख पोंछते, दाँत पीसते, रोते और, रिसियाते,
वह खाता ही रहा मिर्च की छीमी को सिसियाते।
इतने में आ गया उधर से कोई एक सिपाही,
बोला–बेवकूफ़! क्या खाकर यों कर रहा तबाही?
कहा काबुली ने–मैं हूँ आदमी न ऐसा-वैसा।
जा तू अपनी राह सिपाही, मैं खाता हूँ पैसा!

अभ्यास

बातचीत के लिए

(क) काबुलीवाले ने मिर्च को स्वादिष्ट फल क्यों समझ लिया?

(ख) सारी मिर्चें खाने के बाद काबुलीवाले की क्या हालत हुई होगी?

(ग) सब्ज़ी बेचने वाली ने क्या सोचकर उसे झोली भर मिर्च दी होगी?

(घ) अगले दिन काबुलीवाले ने बाज़ार में टमाटर बिकते हुए देखे। क्या उसने टमाटर खाए होंगे?

नए शब्द

इस कविता में से वे शब्द चुनकर लिखो जिन्हें आज तक आपने किसी से नहीं कहा।

मुँह में पानी

लाल-लाल मिर्च देखकर काबुलीवाले के मुँह में पानी आ गया था। तुम्हारे मुँह में किन चीज़ों को देखकर या सोचकर पानी आ जाता है?

....

छाँटो

कविता की वे पंक्तियाँ चुनकर लिखो जिनसे पता चलता है कि–

(क) काबुलीवाला कुछ शब्द अलग तरीके से बोलता था।

(ख) काबुलीवाला कंजूस था।

(ग) मिर्च बहुत तीखी थी।

(घ) काबुलीवाले को मिर्च के बारे में नहीं पता था।

(ङ) काबुलीवाले को 25 पैसे की मिर्च चाहिए थी।

मतलब

जा तू अपनी राह सिपाही
मैं खाता हूँ पैसा!

क्या काबुलीवाला सचमुच पैसा खा रहा था? तुम्हें क्या लगता है? अपने मन की बात बताइए-

.....

.....

.....

.....

खाली स्थान

कविता पढ़कर नीचे दिए गए वाक्य पूर्ण कीजिए–

(क) काबुलीवाला जहाँ मिर्च खा रहा था, वहाँ एक ..... भी थी।

(ख) मिर्च खाते हुए काबुलीवाला ..... रहा था।

(ग) कुंजड़िन ..... थी।

(घ) लाल मिर्च को देखकर काबुलीवाले के मुँह में ..... आ गया।

(ङ) सस्ती मिर्च खरीदकर काबुलीवाला ..... हो गया।

कविता कैसे कही?

इस कविता की दो पंक्तियाँ बोलकर देखो। कविता की पंक्तियों को एक लय या ताल में बोलने के लिए बीच में रुकना भी पड़ता है और किसी शब्द को ज़ोर देकर बोलना होता है। बताइए, आप दो पंक्तियों में कहाँ रुके और किन शब्दों पर ज़ोर दिया?

ओ और औ

नीचे दिए गए शब्दों को पढ़िए–

और	बोली
सौदा	झोली
मौसम	तोल

आपने देखा होगा कि पहली पंक्ति के शब्दों में औ है और दूसरी पंक्ति के शब्दों में ओ है।

आप भी ओ और औ की मात्राओं वाले कुछ शब्द लिखिए–

ओ	औ
.....	.....
.....	.....
.....	.....

दो बैलों की कथा

16

झूरी के पास दो बैल थे–हीरा और मोती। दोनों में बहुत प्यार था। वे नाँद में एक साथ मुँह डालते और एक साथ हटाते। झूरी उनके चारे-पानी **का बड़ा ध्यान रखता था। वह कभी भूलकर भी उन्हें मारता-पीटता नहीं था। पशु भी प्यार का भूखा होता है। वे भी झूरी को बहुत चाहते थे।**

झूरी की पत्नी का भाई गया, एक बार हीरा और मोती को कुछ दिन के लिए अपने गाँव ले जाने लगा। बैलों को बड़ा आश्चर्य हुआ कि वह उन्हें क्यों और कहाँ लिए जा रहा है। रास्ते में उन्होंने उसे बहुत तंग किया। मोती बाएँ भागता तो हीरा दाएँ। इस पर गया ने उन्हें बहुत पीटा। घर पहुँचकर उसने उनके सामने रूखा-सूखा भूसा डाल दिया। पर उन्होंने उसे सूँघा तक नहीं।

रात होने पर दोनों बैलों ने वहाँ से भाग जाने का निश्चय किया। उन्होंने ज़ोर लगाकर रस्सियाँ तोड़ डालीं और भाग निकले। सुबह होने पर जब झूरी ने उन्हें थान पर खड़े देखा तो वह सब कुछ समझ गया और प्यार से उन पर हाथ फेरने लगा। परंतु झूरी की पत्नी उन्हें देखकर जल-भुन गई। उसने उनके सामने रुखा-सूखा भूसा डाल दिया, फिर भी वे खुश थे।

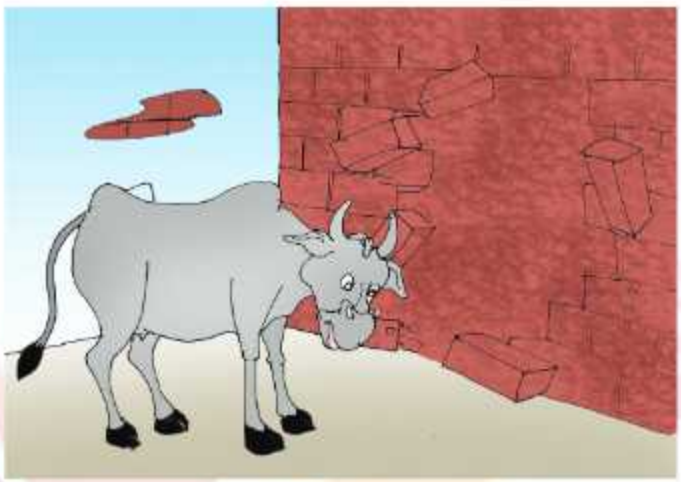

अगले दिन गया फिर आया। इस बार वह उन्हें गाड़ी में जोतकर ले चला। रास्तें में मोती ने चाहा कि गाड़ी गड्ढे में ढकेल दे। पर हीरा समझदार था। उसने गाड़ी सँभाल ली। जैसे-तैसे गया घर पहुँचा।

अब गया ने उनसे बड़ा सख्त काम लेना शुरू किया। वह उन्हें दिनभर हल में जोतता। जब-तब उन्हें मारता-पीटता। शाम को घर लाकर मोटे-मोटे रस्सों से बाँधकर उनके सामने रूखा-सूखा भूसा डाल देता। वे लाचार निगाहों से एक-दूसरे को देखते रहते।

गया के घर में एक छोटी-सी लड़की रहती थी। वह बैलों की दुर्दशा देखती तो उसे बुरा लगता। वह रात को चुपके से उन्हें रोटी खिलाती। दोनों बैल उसके प्यार के सामने

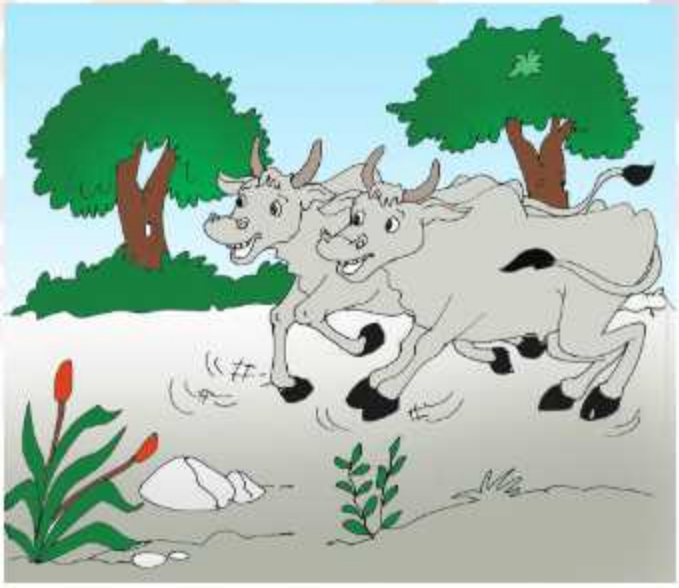

अपनी मार और अपमान भूल जाते। एक दिन मोती रस्से को चबाकर तोड़ने की कोशिश कर रहा था, वह लड़की आई और उसने दोनों बैलों को खोल दिया। दोनों वहाँ से भाग निकले। थोड़ी देर बाद जब गया को पता चला तो वह भी उनके पीछे दौड़ा पर उन्हें पकड़ न सका।

अब हीरा और मोती आज़ाद थे।

रास्ते में उन्हें एक साँड़ मिला। वह उनकी ओर लपका तो हीरा-मोती के होश उड़ गए। भागना बेकार था इसलिए दोनों ने साहस से काम लिया। साँड़ ने आकर हीरा पर वार किया तो मोती ने उस पर पीछे से सींगों से चोट की। साँड़ घबराया। वह किसी एक का तो मारकर कचूमर निकाल देता, पर यहाँ दो थे। मिलकर काम करने में बल है। दोनों ने मिलकर साँड़ को भगा दिया। मोती कुछ दूर उसके पीछे दौड़ा, पर हीरा ने उसे दूर तक न जाने दिया।

दोनों अब बड़े प्रसन्न थे। आगे चले तो रास्ते में मटर का खेत दिखाई दिया। भूख तो लग ही रही थी। हरी-हरी मटर देखकर उनकी भूख और भी तेज़ हो गई। वे खेत में घुस गए और लगे मटर खाने। अभी पेट भरा भी न था कि खेत के रखवालों ने उन्हें देख लिया। उन्होंने उन दोनों को चारों ओर से घेरकर पकड़ लिया और मवेशीखाना में बंद करवा दिया।

हीरा और मोती ने देखा कि मवेशीखाना में और भी कई जानवर थे–भैंसे, घोड़े, घोड़ियाँ, गधे–सबके सब कमज़ोर और दुबले-पतले। वहाँ किसी के लिए न चारे का प्रबंध था न पानी का। ''यहाँ कहाँ आ फँसे,'' उन्होंने सोचा।

रात हुई। मोती ने हीरा से कहा कि अगर दीवार तोड़ दी जाए तो बाहर निकला जा सकता है। उसने सींगों से दीवार गिराने का प्रयत्न किया। दो-चार चोटों में ही थोड़ी-सी दीवार गिर गई। उसका उत्साह बढ़ा तो उसने और ज़ोर से चोटें लगानी शुरू कीं।

दीवार में रास्ता बनते ही पहले तो घोड़ियाँ भागी, फिर भैंसे और बकरियाँ। मोती ने गधों को भी सींग मार-मारकर भगा दिया। उसने हीरा से ही भाग चलने को कहा, पर हीरा ने मना कर दिया।

सुबह होने पर मवेशीखाना वालों ने देखा तो उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ। उन्होंने हीरा और मोती को नीलाम कर दिया। नीलामी में सबसे ऊँची बोली बोलकर एक व्यापारी ने उन्हें खरीद लिया। वह दोनों को लेकर अपने गाँव की ओर चला। मार खाते-खाते और भूख सहते-सहते हीरा-मोती बहुत कमज़ोर हो गए थे। उनकी हड्डियाँ निकल आई थीं। भूख-प्यास से व्याकुल बैलों में कुछ भी दम बाकी नहीं रहा था। वे चुपचाप व्यापारी के साथ चलने लगे। रास्ता उन्हें जाना-पहचाना लगा तो न जाने कहाँ से दम आ गया। वे दोनों तेज़ी से भागे। आगे-आगे दोनों बैल, पीछे-पीछे व्यापारी। पर जब तक वह उन्हें पकड़े तब तक दोनों बैल अपने घर पहुँच चुके थे।

बैलों को देखकर झूरी को बड़ी खुशी हुई। वह उनसे लिपट गया। इतने में व्यापारी भी वहाँ आ पहुँचा और उन्हें माँगने लगा। मोती ने आव देखा न ताव, वह व्यापारी पर झपटा। व्यापारी जान बचाकर वहाँ से भागा। झूरी की पत्नी भी भीतर से दौड़ी-दौड़ी आई। उसने दोनों बैलों के माथे चूम लिए।

अभ्यास

क्या सही/क्या गलत

1. नीचे कुछ वाक्य दिए जा रहे हैं। बताइए कि कहानी के संबंध में कौन-सी बात सही है और कौन-सी गलत। वाक्य के सामने दिए गए स्थान में सही (√) या गलत (×) का निशान लगाइए-

(क) झूरी अपने बैलों से बहुत प्यार करता था। ☐

(ख) गया प्रसाद बैलों के सख्ती से काम लेता था। ☐

(ग) बैलों की दुर्दशा देख गया की लड़की को बहुत बुरा लगता। ☐

(घ) हीरा और मोती सरसों के खेत में घुसे। ☐

(ङ) काँजी हाउस में जानवरों के खाने का अच्छा प्रबंध था। ☐

(च) मोती गुस्सैल तथा हीरा शांत स्वभाव का था। ☐

(छ) रास्ते में साँड़ को देखकर दोनों बैल डर गए। ☐

(ज) गया प्रसाद झूरी का मामा था। ☐

(झ) पशु भी प्यार का भूखा होता है। ☐

(ञ) झूरी की पत्नी ने बैलों के लौटने पर उनका माथा चूम लिया। ☐

आपकी बात

1. क्या आपके घर या पास-पड़ोस में किसी के घर पालतू पशु या पक्षी है? यदि हाँ, तो उनके बारे में बताइए कि-
   - ❖ वह कौन है?
   - ❖ उसका नाम क्या है?
   - ❖ उसे खाने में क्या-क्या पसंद है?
   - ❖ उसका स्वभाव कैसा है?
   - ❖ उसकी दिनचर्या क्या रहती है?
2. गया प्रसाद के समान कुछ लोग जानवरों के साथ बुरा व्यवहार करते हैं। ऐसा करना क्या सही है? अपने उत्तर का कारण भी लिखिए-

.....

.....

.....

हीरा और मोती

1. झूरी और गया प्रसाद की बेटी बैलों से बहुत प्यार करते थे। बैल इन दोनों के प्रति प्यार कैसे दर्शाते होंगे।
2. गया प्रसाद की बेटी ने दोनों बैलों को अपने पिता के अत्याचार से छुटकारा दिलाने के लिए उन्हें खोल दिया। आप इस काम के लिए उसे क्या नाम देंगे और क्यों?
3. हीरा और मोती के स्वभाव तथा आदतों के बारे में कोई तीन बातें लिखिए-

   हीरा मोती

   .....

   .....

   .....

प्यार की बात

1. कहानी में से उन वाक्यों को छाँटकर लिखिए जिनसे पता चलता है कि–पशु भी प्यार का भूखा होता है।
2. आपको कौन-कौन प्यार करता है? यह भी बताइए कि आपको ऐसा क्यों लगता है?
3. आप किसको प्यार करते हैं और क्यों?

❖ दुर्दशा यानी बुरी दशा

'दशा' शब्द में 'दुर' शब्द लगाकर बना है शब्द दुर्दशा। इसी प्रकार के 'दुर' लगाते हुए कुछ और नए शब्द बनाइए।

❖ झूरी की पत्नी उन्हें देखकर जल-भुन गई।

जल-भुन जाना एक मुहावरा है। कहानी में और भी मुहावरे आए हैं। उन्हें छाँटकर लिखिए तथा उनसे वाक्य बनाइए।

❖ सुबह होने पर झूरी ने उन्हें थान पर खड़े देखा।

थान शब्द के दो अर्थ हैं–

थान–पशुओं के बाँधने की जगह

थान–बँधी हुई लम्बाई का कपड़े का टुकड़ा।

इसी प्रकार से कुछ और शब्द लिखिए जिनके दो-दो अर्थ हों।

मवेशीखाना

अर्थात् वह स्थान जहाँ आवारा मवेशियों (जानवरों) को बाँधकर रखा जाता है। यह शब्द मवेशी और खाना इन दो शब्दों से मिलकर बना है।

इसी तरह से 'खाना' शब्द से मिलकर बने कुछ अन्य शब्द लिखिए। इन शब्दों का अर्थ भी लिखिए।

आपकी बात

1. यदि आपको इस कहानी का शीर्षक रखना होता, तो आप क्या शीर्षक रखते? कारण भी बताइए।
2. आपको इस कहानी का कौन-सा पात्र सबसे अच्छा लगा और क्यों?

विद्यार्थी प्रगति पत्रक

शिक्षक/शिक्षिका विगत पाठों में छात्र की प्रगति को निम्न तालिका में अंकित करें। सीखने के प्रतिफल लिखने के लिए पुस्तक के अंत में दी गई सूची से विवरण लें।

क्र. सं.	सीखने के प्रतिफल	3	2	1
		सक्षम है	सहायता से करता/ करती है	सुधार की आवश्यकता है
1.	.....			
2.	.....			
3.	.....			
4.	.....			
5.	.....			
6.	.....			
7.	.....			
8.	.....			
9.	.....			
10.	.....			

जीव जन्तुओं का अद्भुत संसार

17

चूहे के सामने के दाँत कभी भी बढ़ना बंद नहीं करते। इसलिये चूहों को लगातार सख्त चीज़ों को कुतरना पड़ता है ताकि ये दाँत लगातार घिसते रहें। अगर वे नहीं कुतरें तो उनके दाँत इतने बड़े हो जाएँगे कि वे अपना मुँह भी बंद नहीं कर सकेंगे।

उआं! मेरे दाँत इतने लम्बे हो गए हैं कि मैं कुछ नहीं खा सकता।

जब कोई चूहा किसी चीज़ को कुतरता है तो उसके ऊपरी दाँत चीज़ में घुसकर कसके नीचे दबाते हैं। नीचे के दाँत ऊपर की ओर धक्का देते हैं और साथ ही खाने का कुछ हिस्सा छील भी लेते हैं।

चूहों के दाँत इतने ज़्यादा मज़बूत होते हैं कि वे सीमेंट और धातु जैसी चीजों को भी कुतर सकते हैं। इसलिए चूहों को सीमेंट के ज़रिए सुरंग बनाने से रोकने के लिए सीमेंट में काँच के तीखे टूटे हुए टुकड़े मिलाए जाते हैं।

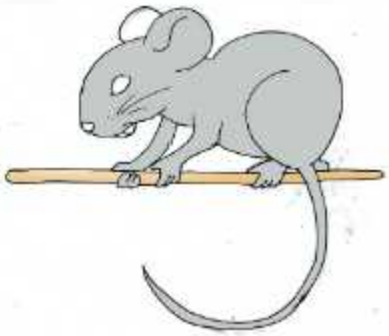

चूहे रस्सियों पर चल सकते हैं। संतुलन बनाने के लिए वे अपनी लंबी पूँछ का इस्तेमाल करते हैं।

चूहे संकरी से संकरी जगह में से रेंग कर जा सकते हैं। अगर वे किसी तरह अपना सिर घुसा लें, बाकी शरीर अंदर पहुँच ही जाता है।

जब वे अपनी पिछले पैरों पर खड़े होते हैं, वे अपने शरीर को पूँछ की मदद से सहारा देते हैं।

चूहों की आँखें कमज़ोर होती हैं। वे ढूँढ़ने के लिये दीवार जमीन को अपनी लंबी मूँछों से छूकर महसूस करते रहते हैं।

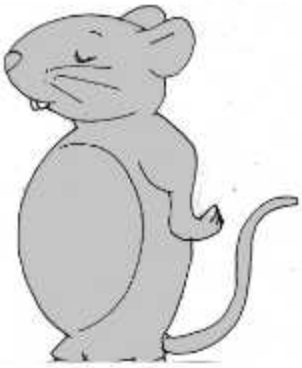

चूहे सड़ा हुआ खाना खाने पर बीमार नहीं पड़ते।

चूहों को ठंड से भी कोई फर्क नहीं पड़ता।

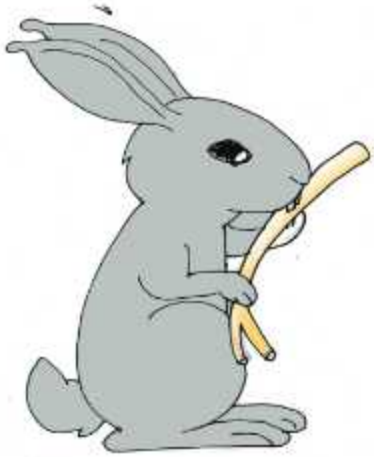

खरगोश और गिलहरियाँ भी दो ऐसे जीव (rodents) हैं जिनके दाँत हमेशा बढ़ते रहते हैं। इसीलिये ये भी चूहों की तरह हमेशा कुतरते रहते हैं ताकि इनके दाँत छोटे रहें।

जंगल में चूहों को कम ताकतवर खाना मिलता रहता है इसलिए वे लगातार कुछ-न-कुछ खाते रहते हैं। जब चूहे इंसानों के आस-पास रहते हैं तब उन्हें ताकतवर खाना मिलता रहता है, इसलिए वे कम खाते है। अगर वे लगातार अपने दाँतो से कुतरते नहीं हैं तो उन के दाँत बढ़ जाएँगें। इसलिए उन्हें जो कुछ भी मिलता है, वे हमेशा उसे कुतरते रहते हैं।

रावण के पुतले (तातारपुर) 18

'दशहरा' सुनते ही दिमाग में सबसे पहले क्या आता है? शायद लगभग सभी का जवाब होगा–'रावण का जलता हुआ पुतला'। पर क्या कभी सोचा है दशहरा पर जो इतने ऊँचे-ऊँचे रावण, मेघनाद और कुंभकरण के पुतले जलाए जाते हैं, उन्हें बनाते कैसे होंगे? क्या एक ही बार में बड़ी-सी मशीन में लकड़ी का ढ़ाँचा बनाकर उसे बड़े-बड़े कपड़े पहना देते होंगे? चलो पूछते हैं, सुभाष जी से, जो हर साल दशहरा पर ऐसे ढेरों पुतले बनाते हैं। सुभाष अपना पुतले बनाने का काम तातारपुर में करते हैं। सितंबर-अक्तूबर के महीनों में बस या ब्लू-लाइन मैट्रो से जाते हुए टैगोर गार्डन और सुभाष नगर के बीच आप सड़क-किनारे पुतलों की लंबी कतारे देख सकते हैं। यही है तातारपुर का इलाका, जो कई दशकों से रावण के पुतलों के लिए मशहूर है।

प्रश्न : सुभाष जी ये पुतले किस चीज़ से बनते हैं?

सुभाष : ये पुतले बनते हैं बाँस से। एक बाँस में से हम 8 पतली या 4 मोटी पत्तियाँ बनाते हैं। इन्हें छीलकर इकसार (एक जैसा) कर लेते हैं। फिर इन पत्तियों को तार से जोड़-जोड़कर जिस भी आकार में मोड़ना हो मोड़ लेते हैं। और ढाँचे के अलग-अलग हिस्से बनाते हैं।

प्रश्न : यानि, पूरा ढाँचा एक साथ नहीं बनता?

सुभाष : ना, पूरा तो ये दशहरा-मैदान में ले जाकर जोड़ा जाता है। यहाँ सिर, धड़, हाथ-पैर अलग अलग बनते हैं। मोटी पत्तियों से धड़ और पैर बनते हैं और पतली पत्तियों से सिर और हाथ। हम पैर सबसे पहले बनाते हैं।

प्रश्न : अच्छा आप ये बाँस कहाँ से लाते हैं?

सुभाष : दिल्ली में सारा बाँस असम से आता है। शाहबाद डेरी जो है ना, उसके पास गोदाम हैं बड़े-बड़े, वहीं लाकर रखा जाता है। हम भी वहीं से लाते हैं।

सुभाष बताते हैं कि वे अगस्त में ही गोदामों से बाँस लाकर रख लेते हैं लेकिन कई बार बारिश के कारण बने-बनाए पुतले खराब हो जाते हैं क्योंकि उनके पास यह काम करने के लिए कोई बंद या छत वाली जगह नहीं है। सुभाष और उनके जैसे अन्य कई कारीगर सड़क किनारे खुले में सुबह-शाम, दिन-रात, इस काम में लगे रहते हैं।

प्रश्न : यहाँ तो सिर्फ़ ढाँचे दिख रहे हैं, इनकी पोशाक, मुकुट वगैरह कहाँ से बनती है?

सुभाष : वो भी हम ही बनाते हैं। ढाँचा तैयार होने के बाद इसपर एक खास तरह का कागज़ चढ़ाया जाता है जो रूस, जापान से आता है। इसमें अरारोट और मैदा मिलाकर लुगदी बनाते हैं जिसे सही आकार देकर ढाँचे पर चिपका देते हैं। फिर इस पर रंग करते हैं।

प्रश्न : पूरा तैयार पुतला करीब कितने में बिक जाता है?

सुभाष : इसका रेट है जी 300 रु प्रति फुट के हिसाब से। यानि 40 फुट के पुतले के हमें 12000 रुपए मिल जाते हैं। हम करीब 25 बनाते हैं हर साल। वैसे तो यहाँ 10 से 50 फुट तक के पुतले होते हैं पर हम बड़े ही बनाते हैं।

प्रश्न : दशहरा के समय तो आप पुतले बनाते हैं लेकिन बाकी साल क्या करते हैं?

सुभाष : बाकी टाईम भी बाँस का ही काम करते हैं। सीढ़ी, घोड़ी (जिस पर चढ़कर सफ़ेदी की जाती है) वगैरह बनाते हैं। पिछली बार 26 जनवरी में हरियाणा की झाँकी में कल्पना चावला की मूर्ति बनाई थी, वो हमने ही बनाई थी, पूरे बाँस की। पहला इनाम मिला था।

सुभाष बताते हैं कि उनके बाप-दादा पुतले बनाने का ही काम करते रहे हैं यानि ये उनका पुश्तैनी पेशा है। उनके बनाए पुतले दिल्ली में नहीं उत्तर भारत के कई राज्यों में जाते हैं। उनके यहाँ रावण को पूजा जाता है क्योंकि रावण के पुतले ही उनकी कमाई का सबसे बड़ा साधन हैं। फिर सुभाष एक तस्वीर दिखाते हैं जिसमें उनका बेटा, जो कि कॉलेज में पढ़ता है, एक पुतले के साथ खड़ा है। वे बताते हैं कि उनका बेटा यह काम नहीं करना चाहता क्योंकि उसे लगता है कि इसमें ना तो पैसे है, ना इज़्ज़त और मेहनत भी अधिक है।

सुभाष यह बताते हुए थोड़े उदास हो जाते हैं कि यह कला धीरे-धीरे खत्म होने लगी है। जहाँ दो दशक पहले तक हज़ारों पुतले बनते थे वहीं अब करीब 500-600 बनते हैं। बनाने का खर्च काफ़ी है लेकिन सरकार की तरफ़ से उन्हें कोई आर्थिक सहायता नहीं मिलती।

सीगड़ी मछली सूखी क्यों नहीं?

19

समुद्र के किनारे एक गाँव था। गाँव में एक मछुआरिन का परिवार रहता था। उस परिवार में चार लोग थे–मछुआरिन, उसका पति, उनका एक बच्चा और मछुआरे की माँ। मछुआरा समुद्र से मछली पकड़कर लाता। मछुआरिन इन मछलियों को बाज़ार ले जाकर बेचती। जो मछलियाँ बच जाती उन्हें बूढ़ी अम्मा धूप में सुखाती थी।

एक दिन मछुआरा जाल लेकर नाव में जा बैठा। मछुआरिन मछलियाँ बेचने के लिए बाज़ार चली गई। घर पर बूढ़ी अम्मा बची मछलियों को धूप में सुखा रही थी। और बच्चा एक चटाई पर लेटा रो रहा था। बूढ़ी अम्मा चबूतरे पर बैठी थी। वह एक हाथ से बच्चे को सहला रही थी और दूसरे से कौओं को भगा रही थी।

शाम हो गई। समुद्र से मछुआरा और बाज़ार से उसकी बीवी लौटने ही वाले थे। बूढ़ी अम्मा ने सोचा, ''शाम हुई, अब मैं सीगड़ी मछलियों को समेटकर अंदर ले जाऊँ।'' उसने बरामदे में पड़ी मछलियों को छूकर देखा। मछलियाँ अभी भी सूखी नहीं थीं।

बूढ़ी अम्मा बोली,

''सीगड़ी, ओ सीगड़ी! तुम क्यों नहीं

सूखी?''

सीगड़ी बोली,

''बूढ़ी अम्मा, बूढ़ी अम्मा, घास बढ़ गई है। मुझे धूप ही नहीं मिली तो मैं कैसे सूखूँ? मुझसे क्यों पूछती हो, घास से पूछो।''

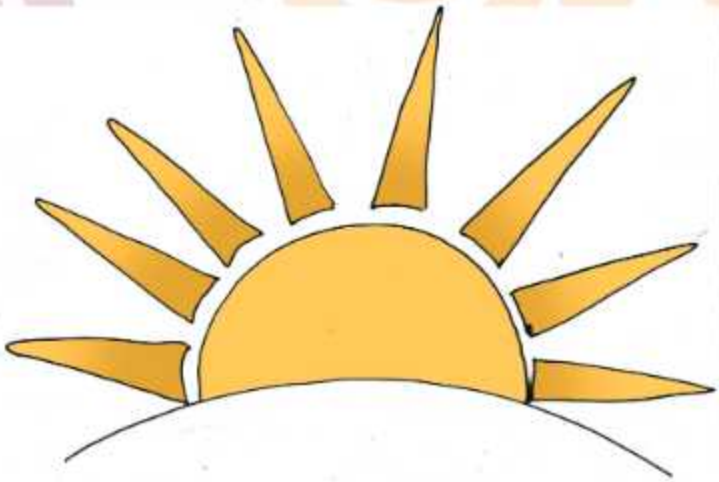

बूढ़ी अम्मा घास के पास गई, ''घास, ओ घास! बता ना, तू धूप के आड़े क्यों आई?''

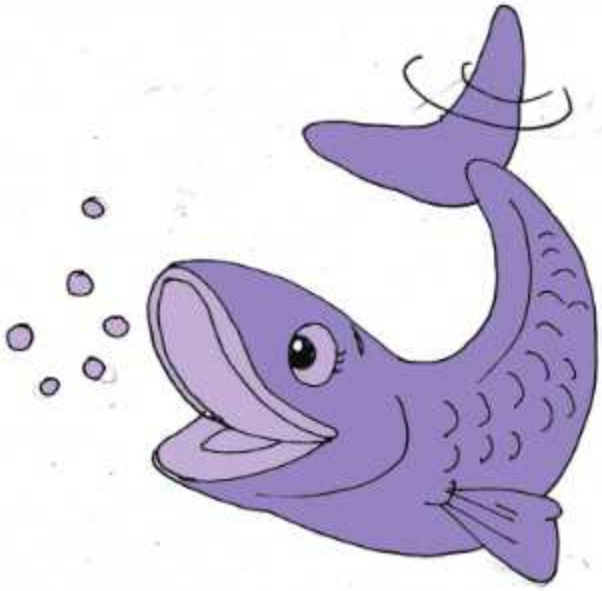

घास ने जवाब दिया, ''बूढ़ी अम्मा, बूढ़ी अम्मा, बछड़े ने मुझे नहीं खाया तो मैं क्या करूँ? मुझसे क्यों पूछती हो, बछड़े से पूछो!''

फिर बूढ़ी अम्मा बछड़े के पास गई। उसने पूछा, ''बछड़े, ओ बछड़े, तुमने घास क्यों नहीं खाई?'' बछड़े ने कहा, ''बूढ़ी, अम्मा, बूढ़ी अम्मा, मछुआरिन ने मेरी रस्सी नहीं खोली, तो मैं क्या करूँ? तुम उसी से पूछो।''

तब तक मछुआरे की बीबी घर लौट आई। बूढ़ी अम्मा उसके पास गई और उससे पूछा, ''तुमने बछड़े को क्यों नहीं छोड़ा?''

उस पर मछुआरे की बीवी ने कहा, ''बूढ़ी अम्मा, जब

बच्चे ने रोना ही बंद नहीं किया तो मैं बछड़े को कैसे छोड़ती? तुम मुझसे क्यों पूछती हो? बच्चे से पूछो।''

तब बूढ़ी अम्मा बच्चे के पास गई और पूछा, ''बच्चे, ओ बच्चे, बता तूने रोना बंद क्यों नहीं किया?''

बच्चे ने कहा, ''बूढ़ी अम्मा, बूढ़ी अम्मा, मुझे चींटी ने काटा था तो मैं क्या करूँ? चींटी से पूछो!''

बूढ़ी अम्मा चींटी के पास गई, ''चींटी, ओ चींटी बताओ तुमने बच्चे को क्यों काटा?''

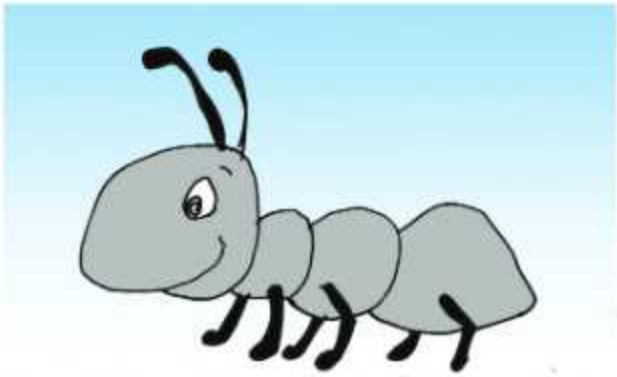

चींटी ने कहा, ''बूढ़ी अम्मा, बूढ़ी अम्मा, चटाई ने मेरी राह रोकी। तुम चटाई को लपेट लो और मुझे जाने दो तब मैं नहीं काटूँगी।''

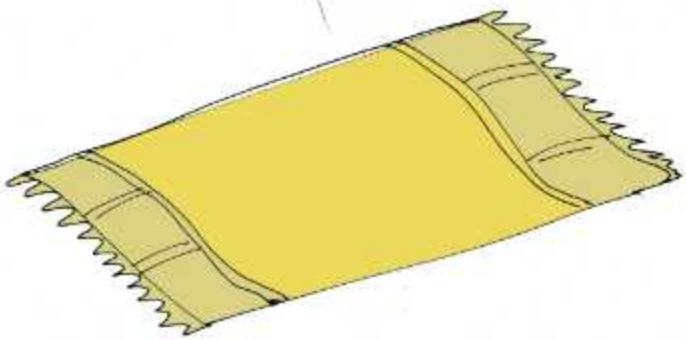

बूढ़ी अम्मा ने झट-से बच्चे को उठाया, चटाई को लपेट दिया। चींटी बच्चे को काटे बगैर निकल गई। बच्चे ने रोना बन्द कर दिया। बच्चे की माँ ने बछड़े को खोल दिया। बछड़े ने घास खा ली। और फिर धूप में मछली सूख गई। बूढ़ी अम्मा ने सीगड़ी मछलियाँ समेटी और अंदर ले गई।

यमुना 20

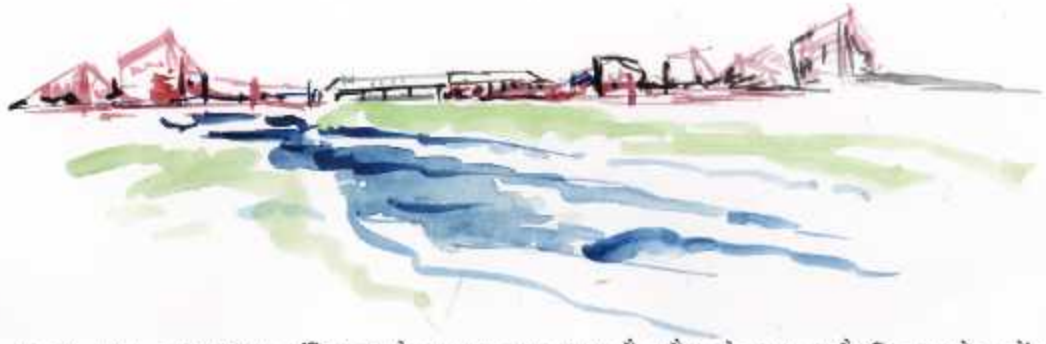

लाल किला, राजघाट, अक्षरधाम मंदिर हमने इनका नाम सुना है और हो सकता है कि हमने इन्हें देखा भी हो! यह सभी दिल्ली के ऐतिहासिक और पर्यटन के स्थल हैं। ऐसा ही एक विश्व प्रसिद्ध ऐतिहासिक पर्यटन स्थल ताजमहल भी है और हो सकता हैं कि आप इसके बारे में जानते भी हो। भारत के कुछ बड़े शहर भी हैं–आगरा, मथुरा, फिरोजाबाद, इलाहाबाद, नोएडा और दिल्ली, जहाँ हम रहते हैं। ये सभी शहर उत्तर भारत के प्रसिद्ध और बड़े शहर हैं। इन सभी पर्यटन स्थलों और शहरों में एक समानता है और पता है वह क्या है? हमारी यमुना नदी। हम जो मीठे-मीठे तरबूज़ और खरबूजे खाते हैं उन्हें भी यमुना नदी के किनारों पर गीली रेतीली ज़मीन में उगाया जाता है। और तो और हरे-हरे सिंघाड़े भी यमुना के पानी में ही बोए जाते हैं।

ताजमहल, राजघाट, अक्षरधाम मंदिर और दिल्ली के लाल किले को यमुना नदी के किनारे इसलिए बनाया गया था क्योंकि यहाँ से इनका नज़ारा खूबसूरत दिखता था और इसलिए भी कि ये हमेशा खुशहाल और आबाद रहे। आगरा, मथुरा, इलाहाबाद, नोएडा और दिल्ली जैसे बड़े शहरों के विकसित होने और बसने का कारण भी यमुना नदी और उसका पानी है। किसी भी नदी की एक खास बात होती है–उसका पानी। नदी के पानी को ही हम पीने के लिए और खेतों में फसलों की सिंचाई के लिए प्रयोग करते हैं। इसका एक कारण ये है कि नदी का पानी साफ़ और पीने योग्य होता है।

दिल्ली एक बड़ा शहर है और यमुना नदी के किनारे बसा हुआ सबसे प्राचीन शहर भी दिल्ली ही है जो सदियों से हमारे देश भारत की राजधानी है। दिल्ली में लगभग एक करोड़ लोग रहते हैं और लगभग इतने ही लोग काम करने के लिए रोज़ यहाँ आते है और शाम को वापस चले जाते हैं। हम सभी लोगों के लिए पीने का साफ़ पानी यमुना नदी से ही मिलता है। पीने के पानी के अलावा नहाने-धोने, शौचालय और कारखानों के लिए भी पानी यमुना नदी से ही मिलता है। हम कई बार देखते भी हैं कि पानी के कारण लोग आपस में लड़ाई भी करते हैं। ये सब इसलिए होता है क्योंकि पानी के बिना कोई काम नहीं हो सकता। इसलिए अगर यमुना नदी न हो तो दिल्ली में रहना मुश्किल हो सकता है।

ये तो हुई बात यमुना नदी और हमारे जीवन में उसके पानी की ज़रूरत की। पर क्या कभी हमने ये सोचा है कि यमुना में इतना सारा पानी कहाँ से आता होगा?

यमुना नदी हमारे लिए इतना कीमती पानी अपने उद्गम स्थल यमुनोत्री से लाती है। किसी भी नदी का उद्गम स्थल वह जगह होती है जहाँ से नदी शुरू होती है। यमुनोत्री ही यमुना नदी का उद्गम स्थल है जो उतराखंड के बंदर पूंछ चोटी नाम की जगह पर स्थित है। नदी के ये उद्गम स्थल ऊँचे-ऊँचे पहाड़, पानी के झरने, झीलें तथा हिम होते हैं। जब हिम मतलब बर्फ़ से बने पहाड़ी की बर्फ़ पिघलती है तो उनका पानी नदियों का रूप ले लेता है। यमुना नदी में भी पानी एक ऐसे ही ऊँचे स्थान पर बने हुए चंपासर नाम के हिम से आता है।

यमुनोत्री से शुरू होकर यमुना नदी इलाहाबाद के त्रिवेणी संगम पर जाकर मिल जाती है। यमुना नदी की कुल लंबाई लगभग 1376 किलोमीटर है। यमुना नदी के यमुनोत्री से संगम तक के रास्ते में सहारनुपर, गाजियाबाद, नोएडा, मथुरा, आगरा और दिल्ली जैसे बड़े शहर आते हैं। दिल्ली से पहले यमुना में मस्करा, हिंडन, कठ, सबी जैसी उपनदियों के मिलाने के कारण दिल्ली में यमुना नदी के पानी का बहाव तेज़ होता है। यमुना नदी जो इतना कीमती पानी हमारे लिए लाती है उसे हमने ओखला नाम की जगह के पास यमुना नदी पर बाँध बनाकर रोक लिया है। इसी बाँध से पानी को इकट्ठा करके पाइपलाइन के जरिए हमारे घरों तक पहुँचाया जाता है। यमुना नदी इतनी दूर से हमारे लिए साफ़ पानी लाती है और हमारी ज़रूरतों को पूरा करती है।

यह तो थी यमुना नदी से जुड़ी भूगोल की बात लेकिन एक बात और भी है जो हमें चिंतित करती है। हमें पानी पिलाने वाली यमुना नदी विश्व की सबसे अधिक प्रदूषित नदियों में से एक है। यमुना का पानी प्रदूषित होता जा रहा है।

ये बात चिंता करने वाली है कि हमने दिल्ली के सभी 15 छोटे-बड़े गंदे नालों के गंदे पानी को यमुना नदी में ही मिला दिया है। इन नालों में हमारे घरों से निकलने वाला सीवर का गंदा पानी और कारखानों से निकलने वाला ज़हरीला पानी इन नालों के ज़रिए यमुना में पहुँचता है। हम में से कुछ लोग पूजा पाठ की सामग्री तथा घर का कूड़ा प्लास्टिक की थैलियों में भरकर यमुना नदी में ही फेंकते हैं जिस कारण यमुना दिन-प्रतिदिन गंदी होती जा रही है।

दिल्ली में अगर यमुना पार किसी जगह जाना हो तो यमुना पर बने तीन बड़े पुलों से होकर जाया जा सकता है। ये पुल हैं–वजीरपुर का पुल, विवेकानंद बस अड्डे का पुल, अक्षरधाम मंदिर के पास बना पुल, इसके अलावा मेट्रो के पुल भी यमुना नदी पर बनाए गए हैं– जो शाहदरा-रिठाला लाइन, द्वारका-नोएड़ा-वैशाली लाइन आते-जाते देख सकते हैं। यमुना नदी पर एक अंग्रेज़ों के ज़माने का पुल भी है जिसे पुराना पुल भी कहते हैं। इस पुल को कई बार बरसात के मौसम में यमुना के जल स्तर बढ़ जाने और बाढ़ के खतरे के कारण इसे परिवहन के लिए बंद कर दिया जाता है। इसके अलावा यमुना पर एक पुंटून पुल भी हुआ करता था जो अब ज़माने की बात हो गया है।

इन सभी पुलों से दिल्ली का खूबसूरत नज़ारा देखा जा सकता है और यहाँ से हम यमुना की बदहाली को भी महसूस कर सकते हैं। यमुना के पास गुजरते हुए यमुना में से गंदी बदबू आती है और देखने में काले पानी से भरा हुआ नाले जैसा दिखाई देती है। यमुना को साफ़ रखने के लिए सरकार ने इन पुलों पर और यमुना नदी के घाटों पर यमुना को साफ़ रखने के सूचना पट लगाए लेकिन फिर भी हम यमुना में कूड़ा और गंद डालते हैं।

अब यमुना को साफ़ रखना हमारे लिए ज़रूरी हो गया है क्योंकि दिल्ली में हमें यमुना नदी के बिना पानी देने वाली कोई नदी नहीं है और न ही पानी का दूसरा स्रोत है जिससे हम अपनी प्यास बुझा सकें।

विद्यार्थी प्रगति पत्रक

शिक्षक/शिक्षिका विगत पाठों में छात्र की प्रगति को निम्न तालिका में अंकित करें। सीखने के प्रतिफल लिखने के लिए पुस्तक के अंत में दी गई सूची से विवरण लें।

क्र. सं.	सीखने के प्रतिफल	3	2	1
		सक्षम है	सहायता से करता/ करती है	सुधार की आवश्यकता है
1.	.....			
2.	.....			
3.	.....			
4.	.....			
5.	.....			
6.	.....			
7.	.....			
8.	.....			
9.	.....			
10.	.....			

इंसानियत 21

उत्तर प्रदेश जिला मुरादाबाद में एक छोटा-सा गाँव है–जारई। गाँव में दिग्विजय सिंह का परिवार रहता था। उनके तीन पुत्रियाँ और एक पुत्र था। तीनों बेटियाँ बड़ी थीं। उनका विवाह हो चुका था, किंतु बेटा छोटा था। उसकी ज़मीन का छोटा-सा टुकड़ा इतना उपजाऊ था कि सोना उगलता था। दिग्विजय की पत्नी को अचानक कैंसर रोग हो गया। जिले के सरकारी अस्पताल में उनका इलाज चला, किंतु पैसों की कमी के कारण, उचित इलाज न मिलने से दिग्विजय ज़मींदार का कर्ज़दार हो गया था। ब्याज़ पर ब्याज़ बढ़ता गया और ज़मींदार ने दिग्विजय की सारी ज़मीन और घर हड़प लिया।

दुखी होकर वह अपने पुत्र कुणालसिंह के साथ शहर चला गया। पर उसकी सेहत खराब हो चुकी थी। कुणाल को भी अपनी पढ़ाई छोड़नी पड़ी और वह अखबार बेचना, लिफाफे बनाना जैसे छोटे-मोटे काम करके अपना और पिता का पेट भरता था। खाली समय में अखबार पढ़ना उसका शौक था। अखबार में एक दिन उसने एक विज्ञापन पढ़ा कि ''गुर्दे के रोगी व्यक्ति को खून की आवश्यकता है। इच्छुक व्यक्ति संपर्क करें। उचित इनाम भी दिया जाएगा।'' कुणाल विज्ञापन पढ़कर उसी अस्पताल में पहुँचा और डॉक्टर से मिलकर कहा ''मैं रोगी को अपना खून देना चाहता हूँ।'' रोगी के प्रति दया का भाव उसके मन में जाग गया था।

डॉक्टर ने कुणाल के खून की जाँच की और कहा, ''तुम्हारा खून रोगी के खून से मेल खाता है। तुम खून दे सकते हो।'' कुणाल के रक्त देने से रोगी के द्वारा सेठ को जीवनदान मिल गया। उसकी पत्नी तथा पुत्री खुशी से नाचने लगे। डॉक्टर ने कुणाल को सेठ द्वारा दिए गए 5000 रुपए दिए। किंतु यह क्या? कुणाल के हाथों में कंपन होने लगा और रुपए ज़मीन पर गिर गए। डॉक्टर ने पुन: रुपए उसके काँपते हाथों में देने चाहे, लेकिन कुणाल की आँसू भरी आँखों में अपनी कैंसर और गरीबी से मरती माँ का चेहरा घूम रहा था। पैसों की कमी के कारण उसे माँ के प्यार से वंचित होना पड़ा तथा पढ़ाई छोड़कर छोटा-मोटा काम करना पड़ा। उसका किशोर मन दर्द से तड़प उठा और वह युवक डॉक्टर से बिना पैसे लिए ही वापस चला गया। युवक कुणाल का मन खुश था कि आज उसने एक ज़िंदगी बचा ली है।

प्रात:काल दरवाज़े पर दस्तक हुई। कुणाल ने जब दरवाज़ा खोला, तो अस्पताल का कर्मचारी खड़ा था। उसने कुणाल से कहा, ''आपको, डॉक्टर साहब ने अस्पताल बुलाया है।'' कुणाल को कुछ समझ नहीं आया। वह कर्मचारी के साथ अस्पताल पहुँचा। डॉक्टर के कमरे में द्वारका सेठ और उनका परिवार भी बैठा था। द्वारका सेठ की इच्छा थी कि नि:स्वार्थ जीवनदान देने वाले, इंसानियत को प्यार करने वाले तथा स्वार्थ की भावना से दूर रहने वाले युवक से मिलकर धन्यवाद करें। अजनबी जीवनदाता युवक को देखकर उनकी आँखें नम हो गई। उन्होंने युवक को गले लगाकर आशीर्वाद दिया और धन्यवाद भी।

सेठ ने कुणाल को अपने कार्यालय में काम देने का वादा किया। सेठ ने उसे सलाह दी, ''तुम पढ़ाई भी करो

क्योंकि शिक्षा से तुम्हारा भविष्य उज्ज्वल होगा।'' सच है, इंसानियत को प्यार करने का जज़्बा हमारी जीवन के रास्तों में आने वाली मुश्किलों को भी हल कर देता है।

शब्द	अर्थ
अभिरुचि	शौक, इच्छा
अनपढ़	बिना पढ़ा लिखा, जिसको भाषा का ज्ञान नहीं
लालच	लोभ
विज्ञापन	इश्तिहार
रोगी	बीमार
जीवनदाता	जीवन देने वाला
आँखें नम होना	आँसू आ जाना
स्वार्थ	मतलबी, अपने हित में लगा

पाठ की समझ

1. सही उत्तर पर सही (√) का निशान लगाइए-

(क) कुणाल ..... गाँव में रहता था।

(i) मुरादाबाद (ii) जारई

(iii) एटा (iv) गैनी

(ख) कुणाल के पिताजी ..... थे।

(i) किसान (ii) डॉक्टर

(iii) अध्यापक (iv) गायक

(ग) कुणाल की माता जी की मृत्यु ..... से हो गई।

(i) बुखार (ii) कैंसर

(iv) तपेदिक (iv) हैजा

(घ) ..... सेठ अपने जीवनदाता कुणाल से मिलना चाहता था।

(i) गरीबदा (ii) द्वारका

(iii) गोपालदा (iv) मानखनसिंह

2. एक-दो वाक्यों में उत्तर दीजिए-

(क) कुणाल की कितनी बहनें थीं?

(ख) कुणाल किस कक्षा तक गाँव में पढ़ा था?

(ग) कुणाल ने कौन-सा अच्छा काम किया?

(घ) कुणाल शहर में क्या काम करता था?

3. चार-पाँच वाक्यों में उत्तर दीजिए :

(क) द्वारका सेठ कुणाल से क्यों मिलना चाहते थे और उन्होंने कुणाल की क्या मदद की?

(ख) यदि कुणाल की जगह आप होते, तो विज्ञापन पढ़कर क्या करते?

(ग) कुणाल का चरित्र-चित्रण लिखिए।

मुख्य बिंदु : साहसी बालक, दयालु बालक, माता-पिता को प्रेम करने वाला

(घ) कुणाल के मन में डॉक्टर से पैसे लेते समय क्या-क्या विचार उठ रहे थे?

भाषा की समझ

विपरीतार्थक शब्दों को बाक्स से निकालकर सामने दिए डिब्बे में सुंदर अक्षरों में लिखिए।

शब्द		विलोम शब्द
इंसानियत	–	
लघु	–	
छोटा	–	
गाँव	–	
पुत्र	–	
गरीब	–	
सोना	–	
उगलना	–	
सरकारी	–	
रोगी	–	

हैवानियत, गैर सरकारी, अमीर, पुत्री, चाँदी, बड़ा, दीर्घ, निगलना, शहर, निरोग

उपसर्ग : किसी शब्द के शुरू में जुड़कर उसके अर्थ को प्रभावित करने वाले शब्दांश उपसर्ग कहलाते हैं, जैसे–सु+पुत्र = सुपुत्र।

छोटे-छोटे बाक्स में लिखे प्रत्येक उपसर्ग से बने शब्द नीचे दिए फूलों की पत्तियों में लिखें

आओ खेलें प्रत्यय का खेल

प्रत्यय : किसी शब्द के अंत में जुड़कर उसके अर्थ को प्रभावित करने वाले शब्दांश प्रत्यय कहलाते हैं, जैसे– मिठाई, सुनार, लघुत्व, कालिमा, सच्चाई, कोचवान, चायवाला, अड़ियल, सपेरा, लुटेरा, विषैला, बुद्धिमान, मौखिक, बिछौना, कृपालु, लुहार

नीचे लिखे प्रत्यय से ये शब्द बनाइए–

ई ....

ना ....

ऊ ....

दिए गए उपसर्ग से शब्द बनाइए–

1. अति ....
2. अधि ....
3. अनु ....
4. उप ....
5. अभि ....
6. आ ....
7. उत् ....
8. उप ....
9. अति ....
10. निः ....

यह भी जानिए

1. हमें जरूरत पड़ने पर अधिकृत ब्लड बैंकों से ही रक्त लेना चाहिए।
2. रोगी को रक्त देने से पूर्व रक्त की जाँच जरूरी है।
3. हमें रक्तदान किसी पंजीकृत संस्था के द्वारा लगाए गए कैंप अथवा सरकारी चिकित्सालय में ही करना चाहिए।
4. रक्त देते या लेते समय नई सुई (सैट) का प्रयोग होना चाहिए।

जीवन कौशल

मानव मन कोमल भावनाओं से भरा हुआ है। हमें हमेशा दूसरों पर दया करनी चाहिए। मानवता की सेवा करना हम सभी का धर्म है। शिक्षा हमारे संस्कारों को हम सभी में जीवित रखने का माध्यम है। शिक्षित व्यक्ति ही खुद तथा देश का भविष्य सुधार सकता है।

पढ़ने के लिए

एक दुनिया रचें
एक दुनिया रचें आओ हम प्यार की।
जिसमें खुशियाँ ही खुशियाँ हो संसार की।

चींटी और कबूतर

22

चित्र के आधार पर अपनी कल्पना के सहारे कहानी लिखिए :

संकेत : नदी किनारे पेड़, शहद से भरा मधुमक्खी का छत्ता, शहद वाली चीटियाँ, पेड़ पर बैठा कबूतर।

पानी में गिरती चीटी, पत्ता गिरा कर मदद करता कबूतर, चीटी की जान बची

शिकारी कबूतर पर निशाना, कबूतर अनजान, चीटियों की निगाह शिकारी पर।

शिकारी पर चीटियों का हमला, निशाना चूका, कबूतर उड़ गया, दोस्ती का हक अदा किया।

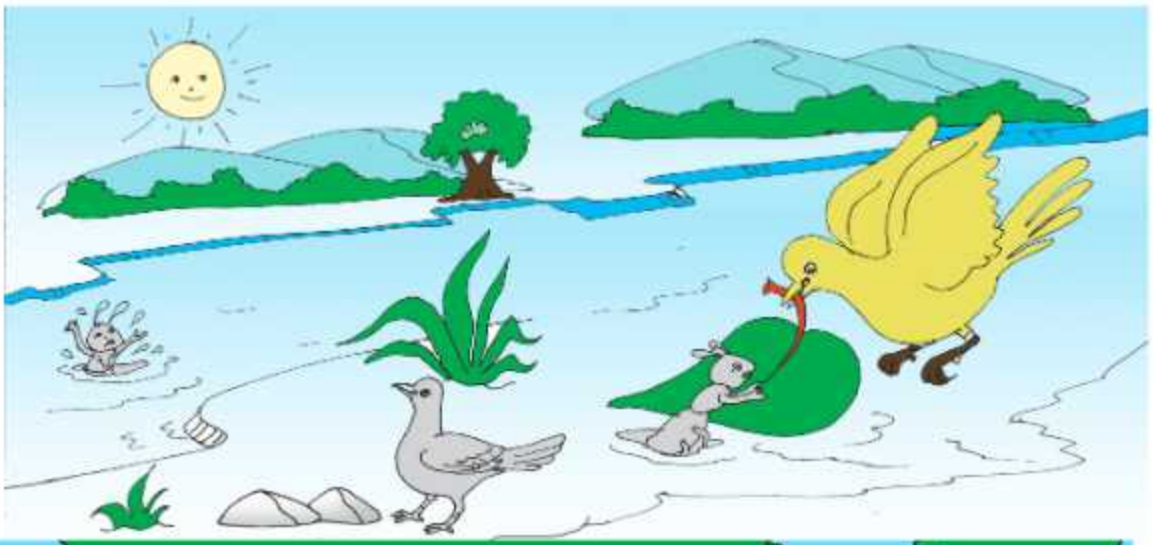

प्यारा हिन्दुस्तान 23

जग में न्यारा देश हमारा प्यारा हिन्दुस्तान।
देव ऋषि की तपस्थली यह,
वीर भूमि की माटी।
नहीं झुकाते सिर बलिदानी,
भारत की परिपाटी।
इसी भूमि पर पले बढ़े हैं, राम कृष्ण भगवान।
जग में न्यारा देश हमारा प्यारा हिन्दुस्तान।
इस धरती पर जनम लिया जो,
भाग्यवान कहलाते।
देव मुनि भी भारत भू पर,
आने को ललचाते।
तीन लोक में महिमा इसकी, गाते सब गुणगान।
जग में न्यारा देश हमारा प्यारा हिन्दुस्तान।

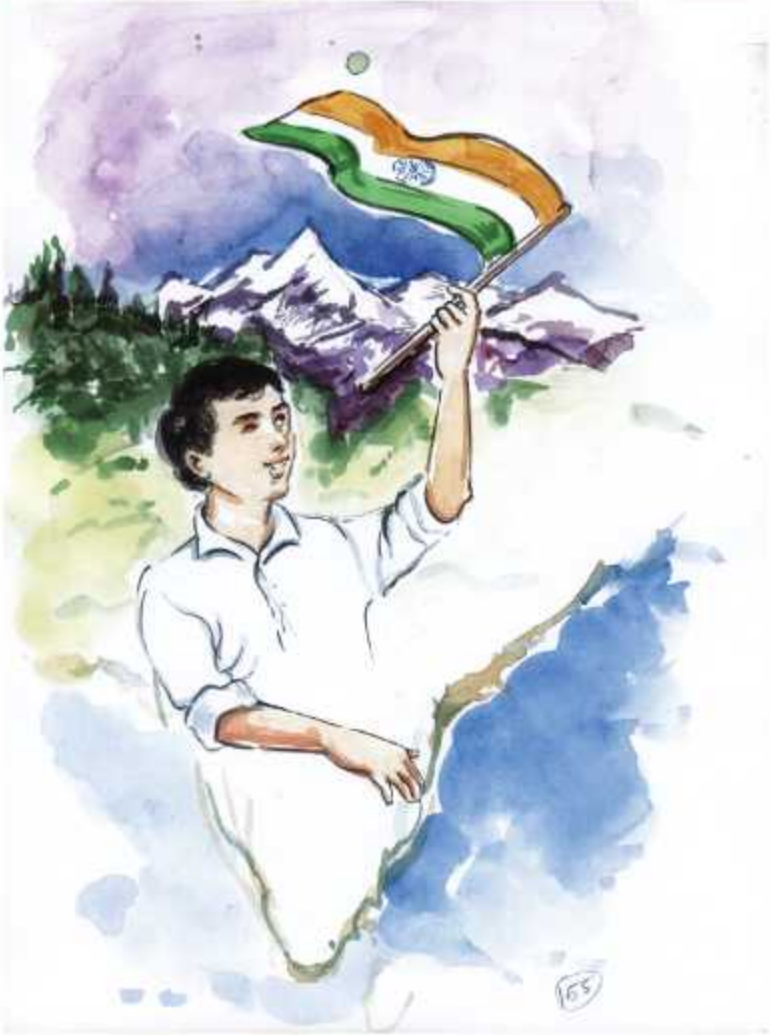

मुख्य भाव

शब्द	अर्थ
जग	संसार
न्यारा	अनोखा
भू	पृथ्वी
परिपाटी	रीति-रिवाज़, परम्परा

पाठ की समझ

1. सही उत्तर पर सही का निशान (√) लगाइए-

(क) भारत किसकी तपस्थली है?

(i) मान (ii) स्नेही

(iii) दानव (iv) मुनि

(ख) इस भूमि पर कौन आने को ललचाते हैं?

(i) ज्ञानी (ii) स्नेही

(iii) देव-मुनि (iv) वैरागी

(ग) इस धरती पर जन्म लेने वाले अपने-आप को क्या मानते हैं?

(i) भाग्यवान (ii) धनवान

(iii) ज्ञानवान (iv) प्रेरणावान

(घ) भारत की परिपाटी है :

(i) झूठ नहीं बोलते (ii) शत्रु के सामने नहीं झुकते

(iii) लालची नहीं होते (iv) मिलकर नहीं रहते

2. एक-दो वाक्यों में उत्तर दीजिए-

(क) ''नहीं झुकाते सिर बलिदानी'' इस पंक्ति से कवि क्या कहना चाहता है?

(ख) इस कविता से हमें क्या प्रेरणा मिलती है?

(ग) देव-मुनि भी इस भूमि पर आने को क्यों ललचाते हैं?

(घ) हिन्दुस्तान की क्या विशेषता है?

भाषा की समझ

1. समान अर्थ वाले शब्द समानार्थी या पर्यायवाची कहलाते हैं। जैसे–भू-भूमि।

नीचे स्तंभ 'अ' में कुछ शब्द हैं। उनके समानार्थी शब्द को पाठ के आधार पर स्तंभ 'ब' से मिलाइए-

स्तंभ-अ	स्तंभ-ब
(क) भू	(i) भारत
(ख) हिन्दुस्तान	(ii) धरती
(ग) मिट्टी	(iii) भूमि
(घ) पृथ्वी	(iv) माटी

2. कविता की पंक्तियों के कुछ शब्दों में एकरूपता है, जैसे–प्यारा-न्यारा।

इन शब्दों को तुकांत शब्द कहते हैं। कविता पढ़कर ऐसे ही तुकांत शब्द चुनकर लिखिए-

(क) हिन्दुस्तान–.....

(ख) ललचाते–.....

(ग) परिपाटी–.....

(घ) राम–.....

3. नीचे स्तंभ 'अ' में कुछ शब्द हैं। उनके विपरीत शब्द को स्तंभ 'ब' से मिलाइए-

स्तंभ-क	स्तंभ-ख
(क) वीर	(i) मरण
(ख) धरती	(ii) कायर
(ग) जनम	(iii) भाग्यहीन
(घ) भगवान	(iv) आकाश

यह भी जानिए

भारत भूमि पर महात्मा बुद्ध, महावीर, राम, कृष्ण आदि अनेक भगवान का जन्म हुआ है।

करके सीखिए

निम्नलिखित बलिदानियों को पहचानिए एवं इनके नाम लिखिए–

....

जीवन कौशल

मानव को जीवन में हमेशा ऐसा कार्य करना चाहिए, जिससे परिवार, समाज और देश का विकास हो, गर्व से ऊँचा रहे।

नई रोशनी 24

फ्रांस की राजधानी पेरिस में कौपत्रे नामक गाँव में एक छोटा-सा दुकानदार रहा करता था। वह चमड़े की वस्तुएँ बनाकर उन्हें अपनी दुकान में बेचता था। दुकान से होने वाली आमदनी में बड़ी कठिनाई से उसके परिवार का निर्वाह होता था। उसका घर बहुत छोटा था, जिसमें अपने छह पुत्रों के साथ वह रहता था। कुछ दिनों के बाद उसके घर में एक और पुत्र का जन्म हुआ, जिसका नाम उसने लुई रखा। लुई देखने में बहुत ही सुंदर था।

एक दिन की बात है। पिता किसी ग्राहक के साथ बातचीत में लगे थे तभी तीन वर्षीय लुई तथा उसकी बहन सेरेल दुकान में खेलते-खेलते आ गए। खेलते-खेलते लुई की नजर चमड़ा काटने वाली छुरी पर पड़ी। वह कुतूहल से उसे लेकर पिता की नकल करते हुए चमड़ा काटने लगा। पर दुर्भाग्यवश छुरी उसकी आँखों में लग गई। आँखों से खून बहने लगा।

लुई के ज़ोर से रोने की आवाज़ सुनकर ज्यों ही पिता ने नज़रें घुमाई-उसके होश उड़ गए। गाँव में जो नीम हकीम थे, उनके पास बच्चे को लेकर भागा, पर उसकी आँखों की रोशनी वापस न आ सकी। अंधे होने के कारण लुई को कदम-कदम पर कठिनाई का सामना करना पड़ता था। चलने के लिए भी उसे लाठी का सहारा लेना पड़ता था। पिता अपने पुत्र की यह दुर्दशा देख अत्यधिक चिंतित रहता था। एक दिन वह लुई को लेकर स्थानीय पादरी के पास पहुँचा तथा अपने बेटे की शिक्षा तथा उसकी आत्मनिर्भरता के विषय में अपनी चिंता से अवगत कराया। पादरी महोदय उसे कहानियाँ सुना-सुनाकर पढ़ाने लगे तथा साथ ही उसे संगीत की भी शिक्षा देनी शुरू कर दी।

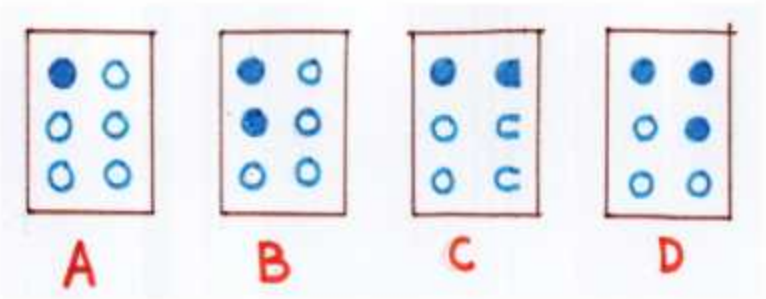

युवावस्था में लुई पेरिस आ गया था अंध-विद्यालय में उसका दाखिला हो गया। वहाँ उसने इतिहास, भूगोल आदि विषय फ्रेंच तथा लेटिन भाषा में संगीत की शिक्षा प्राप्त की। पर उसकी प्रबल इच्छा थी कि कोई ऐसा रास्ता निकालूँ, ताकि नेत्रहीन व्यक्ति भी बिना दूसरों की सहायता के पढ़-लिखकर अपने पैरों पर खड़े हो सकें। अपनी यह इच्छा पूरी करने के लिए उसने कठिन परिश्रम किया। आखिरकार उसने छह बिंदुओं की सहायता से एक लिपि का आविष्कार किया।

उस लिपि में पुस्तकें प्रकाशित होने लगीं। इस लिपि से नेत्रहीन केवल अंगुलियों की सहायता से अक्षरों को पहचान सकते थे। इसे ब्रेल लिपि कहते हैं। संसार में सभी दृष्टिहीनों के लिए यह लिपि वरदान स्वरूप है। इसलिए दुनिया लुई को सम्मानपूर्वक स्मरण करती है। वास्तव में, जो लोग कुछ करने की ठान लेते हैं, वे अवश्य सफल होते हैं।

मुख्य भाव

प्रस्तुत कहानी के मुख्य पात्र लुई ब्रेल का जीवन हम सभी के लिए प्रेरणा का स्रोत है। मनुष्य अगर कुछ करने की ठान ले, तो कोई भी बाधा रास्ता रोक नहीं सकती। किसी भी लक्ष्य को प्राप्त करने में बाधाएँ अवश्य आती हैं, किंतु उनसे डरकर या घबराकर लक्ष्य को छोड़ देना ठीक नहीं। साहस तथा दृढ़ निश्चय के साथ मुसीबतों का सामना करने से सफलता अवश्य प्राप्त होती है।

शब्दार्थ

शब्द	अर्थ
आमदनी	आय
निर्वाह	भरण-पोषण
ग्राहक	खरीददार
कुतूहल	उत्सुकता
नीम हकीम	बिना डिग्री का डॉक्टर
दुर्दशा	खराब हालत
प्रबल	बहुत अधिक, तीव्र
नेत्रहीन	आँखों की रोशनी से वंचित
दृष्टिहीन	आँखों की रोशनी से वंचित
आविष्कार	खोज
स्मरण	याद

पाठ की समझ

1. सही उत्तर पर सही का निशान (√) लगाइए-

(क) लुई रहने वाला था–

(i) इटली (ii) जर्मनी

(iii) फ्राँस (iv) इनमें से कोई नहीं

(ख) लुई को प्रारंभिक शिक्षा दी–

(i) पिता ने (ii) पादरी ने

(iii) माता ने (iv) इनमें से कोई नहीं

(ग) लुई के पिता की दुकान थी–

(i) कपड़े की (ii) खिलौनों की

(iii) चमड़े की वस्तुओं की (iv) दाल चावल की

(घ) खून कहाँ से बहने लगा–

(i) नाक (ii) कान

(iii) आँख (iv) सिर

2. कोष्ठक में दिए गए शब्दों से सही शब्द चुनकर खाली स्थान भरिए :

(क) फ्रांस की राजधानी ..... थी। (कौपत्रे/पेरिस)

(ख) उसका घर बहुत ..... था। (बड़ा/छोटा)

(ग) पिता पुत्र को देखकर ..... रहता था। (चिंतित/प्रसन्न)

(घ) दुनिया लुई को ..... याद करती है। (सम्मानपूर्वक/घृणापूर्वक)

3. पाठ के अनुसार नीचे लिखे वाक्यों को सही क्रम में लिखिए'

(क) लुई ने ब्रेल लिपि का आविष्कार किया।

(ख) दुकानदार के बेटे का नाम लुई था।

(ग) लुई की आँखों की रोशनी वापस नहीं आई।

(घ) बाद में लुई ने पेरिस में शिक्षा पाई।

(ङ) छुरी लगने से लुई की आँखों से खून बहने लगा।

(च) लुई ने नेत्रहीनों के लिए कोई रास्ता निकालने का निश्चय किया।

4. एक-दो वाक्यों में उत्तर दीजिए :

(क) लुई की प्रबल इच्छा क्या थी?

(ख) दुनिया लुई को क्यों याद करती है?

(ग) ब्रेल लिपि की विशेषताएँ लिखिए।

(घ) संसार में कौन सफल होते हैं?

5. चार-पाँच वाक्यों में उत्तर दीजिए–

(क) नेत्रहीन व्यक्ति को सामान्य व्यक्ति की तुलना में किन-किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है?

(ख) आप नेत्रहीन व्यक्ति की सहायता किस प्रकार कर सकते हैं?

भाषा की समझ

1. किसी वस्तु, व्यक्ति, स्थान या भाव का नाम बताने वाले शब्द को संज्ञा कहते हैं। जैसे–मेज़, लड़का, सुरेश, आगरा, दुख आदि। पाठ में से पाँच संज्ञा शब्द चुनकर लिखिए-

2. उदाहरण के अनुसार नीचे लिखे शब्दों के समानार्थक शब्द लिखिए : जैसे खरीददार–ग्राहक

(क) कुतूहल ..... (ख) मुश्किल .....

(ग) आदर ..... (घ) आय .....

3. नीचे लिखे गए चार शब्दों के समूह में से एक भिन्न अर्थ रखने वाले शब्द पर उदाहरण के अनुसार घेरा लगाइए :

4. जैसे– इटली, दिल्ली, पेरिस

(क) गाँव, शहर, नहर, देश (ख) पुत्र, पिता, माता, लता

(ग) कॉपी, किताब, कलम, थैला (घ) रोना, हँसना, थाना, गाना

5. नीचे लिखे शब्दों को उदाहरण के अनुसार वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

जैसे–कठिनाई-किसान कठिनाई से परिवार चलाता था।

(क) मेहनत (ख) छोटा

(ग) नकल (घ) सहारा

यह भी जानिए

लुई ब्रेल का जन्म फ्रांस के कौपत्रे में सन् 1809 ई. में हुआ। उन्होंने ब्रेल लिपि का आविष्कार कर दृष्टिहीनों के लिए अभूतपूर्व योगदान दिया। उन्होंने लिखने की एक अन्य विधि का भी आविष्कार किया जिसे रेपिग्राफी कहते हैं। इससे दृष्टिवान तथा नेत्रहीन दोनों ही इस्तेमाल कर सकते हैं। उन्होंने नेत्रहीनों के लिए एक मशीन का आविष्कार किया। जिससे टंकण का काम आसान हो गया। छह जनवरी 1852 को उनका देहांत हो गया।

करके सीखिए

अपने आसपास रहने वाले उन लोगों के बारे में पाँच वाक्य लिखिए जिन्हें आपने मेहनत के बल पर सफल होते देखा है।

जीवन कौशल

(क) इस पाठ से तनावों से जूझने तथा उस पर विजय पाने की क्षमता का विकास होता है।

(ख) समानुभूति तथा निर्णय लेने की क्षमता आती है।

विद्यार्थी प्रगति पत्रक

शिक्षक/शिक्षिका विगत पाठों में छात्र की प्रगति को निम्न तालिका में अंकित करें। सीखने के प्रतिफल लिखने के लिए पुस्तक के अंत में दी गई सूची से विवरण लें।

क्र. सं.	सीखने के प्रतिफल	3	2	1
		सक्षम है	सहायता से करता/ करती है	सुधार की आवश्यकता है
1.	.....			
2.	.....			
3.	.....			
4.	.....			
5.	.....			
6.	.....			
7.	.....			
8.	.....			
9.	.....			
10.	.....			

क्षितिज से आगे

25

सारे घर में प्रसन्नता का वातावरण था। अंजना के पाँव ज़मीन पर नहीं पड़ रहे थे। उसकी सास तो उससे विशेष रूप से प्रसन्न थी–पोता जो दिया था, उसकी सुशील, गुणवती बहू ने। अंजना को अब पता चला कि संतान, विवाह की सबसे बड़ी उपलब्धि है। घर में पहले लड़के के जन्म के कारण यह खुशी पूर्णिमा की रात्रि की चाँदनी-सी फैल गई थी। गली-मुहल्ले की औरतें आने लगीं। रिश्तेदार भी पहुँचने लगे। बड़ी-बड़ी आँखें, चौड़ा माथा, दूधिया रंग, छोटे-छोटे हाथों की बंद मुट्ठियाँ बरबस ही प्रत्येक को अपनी ओर आकर्षित कर लेतीं। देखने वाला सम्मोहित-सा उसे ऐसे देखता रह जाता, जैसे चकवा चाँद को। अंजना के पति जीवन भी खुशी में डूबे हुए थे। **मितभाषी,** संकोची भावुक जीवन और एक कलाकार थे। ब्रुश एवं रंगों के माध्यम से वे अपने विचारों एवं **अनुभूतियों** को मूर्त करने में सिद्धहस्त थे। जीवन ने अपने दफ़्तर में पुत्र-रत्न की प्राप्ति के सुअवसर पर एक पार्टी भी दे दी थी।

धीरे-धीरे बच्चा बड़ा होने लगा। उसके धीर-गंभीर तथा शांत स्वभाव के कारण उसका नाम रखा गया–प्रशांत।

मितभाषी = कम बोलने वाले, अनुभूतियाँ = मन के भाव, सिद्धहस्त = कुशल/निपुण, आह्लादित = प्रसन्न।
अठखेलियाँ = शरारतें/खेल, कुशाग्र बुद्धि = बुद्धिमान,

अंजना का सारा समय प्रशांत की देखरेख में बीतने लगा। कभी नहलाना, कभी दूध पिलाना और कभी उससे खेलना। माँ की ममता देश-काल के बंधन से परे होती है। प्रत्येक माँ अपने बच्चे से तोतली ज़ुबाँ में बातें करती है। उसके सुख-दुख को महसूस करती है तथा उसके लिए हर तरह का कष्ट सहने को तैयार रहती है, खुद गीले बिछौने पर सोकर भी, अपने बच्चे को सूखे बिस्तर पर सुलाती है। अंजना भी एक माँ थी, एक ममतामयी माँ।

प्रशांत अब बिस्तर पर उलटने-पलटने लगा। वह अपनी नन्हीं-नन्हीं लातें चलाता। हाथ हिला-हिलाकर खेलता। ऐसा लगता मानो पूरे घर में जान आ गई हो। उसकी बड़ी-बड़ी आँखें कुछ बोलती-सी प्रतीत होतीं, लेकिन कभी-कभी ऐसा लगता, जैसे वह आँखें खोले हुए भी देख नहीं रहा हो। आवाज़ को सुनकर वह तुरंत अपना चेहरा उधर घुमा लेता, परंतु दृश्य के अनुरूप वह तुरंत प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं करता। अंजना एवं जीवन उसकी हरकतों को देखकर आह्लादित होते। प्रशांत की दादी पूजा-पाठ से बचा, सारा समय प्रशांत के साथ ही बिताती। इसी प्रकार, दिन बीतते गए और प्रशांत एक वर्ष का हो गया।

उसे पहले जन्मदिन पर घर में दावत दी गई। एक वर्ष का प्रशांत अब धीरे-धीरे चलने लगा। जन्मदिन की दावत में प्रशांत ने जब अन्य बच्चों के पीछे चलने की कोशिश की, तो वह सोफ़े से टकराकर गिर गया। बच्चे का बचपन में गिरना कोई अनहोनी बात नहीं थी, परंतु सामने रखे सोफ़े से जिस प्रकार प्रशांत टकराया, उससे सभी उपस्थित लोग हैरान हुए, क्योंकि कोई भी बच्चा सामने दिखाई दे रही चीज़ से इस प्रकार नहीं टकराता। प्रशांत की ताई ने उसे झट गोद में उठाया और ध्यान से देखा। उसने पहली बार पाया कि प्रशांत की आँखें देखने में सामान्य लगती हैं, परंतु वे देखे गए दृश्य के

अनुरूप प्रतिक्रिया नहीं करतीं। उसने अंजना तथा जीवन को यह बात बताई। उन्होंने पहले भी महसूस किया था कि कभी-कभी प्रशांत ऐसे व्यवहार करता है, जैसे उसे ठीक से दिखाई न देता हो। मगर उन्होंने कभी इस पर ज़्यादा ध्यान नहीं दिया। खुशी की आँधी के सामने आशंका के बादल कहाँ टिक पाते हैं? जन्मदिन की दावत खत्म हुई। रात में अंजना ने जीवन से कहा, ''क्यों न हम प्रशांत की आँखों की जाँच करवा लें। मुझे तो बड़ा डर लग रहा है।'' चिंतित जीवन ने उसे धीरज बँधाते हुए कहा, ''तुम चिंता न करो, हम कल ही प्रशांत को डॉ. अंबानी के पास ले जाएँगे। वे आँखों के बहुत अच्छे डॉक्टर हैं।''

अगले दिन, जीवन ने दफ़्तर से छुट्टी ली। अंजना और प्रशांत को साथ लिए वे डॉ. अंबानी के यहाँ पहुँचे। डॉ. अंबानी जीवन के मित्र थे। उन्होंने सारी बात सुनी। वे प्रशांत की आँखों की जाँच करने लगे। जैसे-जैसे वे जाँच करते गए, उनके चेहरे की गंभीरता बढ़ती गई। अंजना चिंता-सागर में डूब-उतर रही थी। कभी ईश्वर से प्रार्थना करती, तो कभी उठकर उस कमरे में झाँकती, जहाँ डॉक्टर प्रशांत की जाँच कर रहे थे। जीवन भी बेचैनी में इधर-उधर टहलने लगते।

आशंका = डर

लगभग दो घंटे की जाँच के बाद डॉक्टर अंबानी बाहर आए। जीवन को एक ओर ले जाकर बोले, ''जीवन भाई, प्रशांत की आँखों की हालत मुझे कुछ ठीक नहीं लगती। वैसे तुम चिंता न करना। मैं डॉ. पाराशर को बुलवाकर दुबारा इसकी

अच्छी तरह जाँच करवाऊँगा। तभी कुछ कहा जा सकेगा। तुम इसे लेकर सोमवार को फिर आओ।'' यह सुनकर जीवन के पैरों तले से ज़मीन खिसक गई। उसके चेहरे को देखकर ही अंजना समझ गई कि मामला गंभीर है। जीवन ने अपने आप को संयत करके अंजना को दिलासा देने की भरसक कोशिश की, मगर उसकी ज़ुबान ने विद्रोह कर दिया। अंजना के आग्रह पर उसे डॉ. अंबानी द्वारा कही गई बात बतानी पड़ी। यह सुनकर तो अंजना फूट ही पड़ी। उसकी आँखों के सामने अँधेरा छाने लगा। उसके इकलौते बेटे की आँखें ठीक नहीं हैं, इस समाचार ने उसे भीतर तक हिला गया। घर में एक अजीब-सी खामोशी छा गई। प्रशांत की **अठखेलियाँ** पूर्ववत थीं, परंतु अब वे अंजना तथा जीवन के चेहरे पर छाए चिंता के बादलों को हटाने में असमर्थ थीं। दोनों एक-दूसरे को दिलासा देने की असफल कोशिश करते।

सोमवार को फिर से प्रशांत की आँखों की जाँच की गई। डॉक्टरों ने पाया कि उसकी आँखों का 'रैटिना' ठीक काम नहीं कर रहा। डॉ. अंबानी ने जीवन को कहा कि वे हिम्मत न हारें। और यहाँ से शुरू हुई अंजना और जीवन की तलाश। नई मंज़िल और नई राह की तलाश। एक डॉक्टर से दूसरा डॉक्टर, एक अस्पताल से दूसरा अस्पताल। विभिन्न टेस्ट, विभिन्न सुझाव, लेकिन सब निरर्थक। प्रशांत बहुत ही चुस्त एवं **कुशाग्र-बुद्धि** बालक था। वह आँखों से देख तो सकता था, परंतु अस्पष्ट। इस बीच, उसकी आँखों की चिकित्सा लगातार जारी रही। साथ ही, आँखों की दृष्टि भी निरंतर कम होती गई।

अंजना और जीवन की समझ में नहीं आ रहा था कि यह क्या हो रहा है। उसके खानदान में कभी किसी को

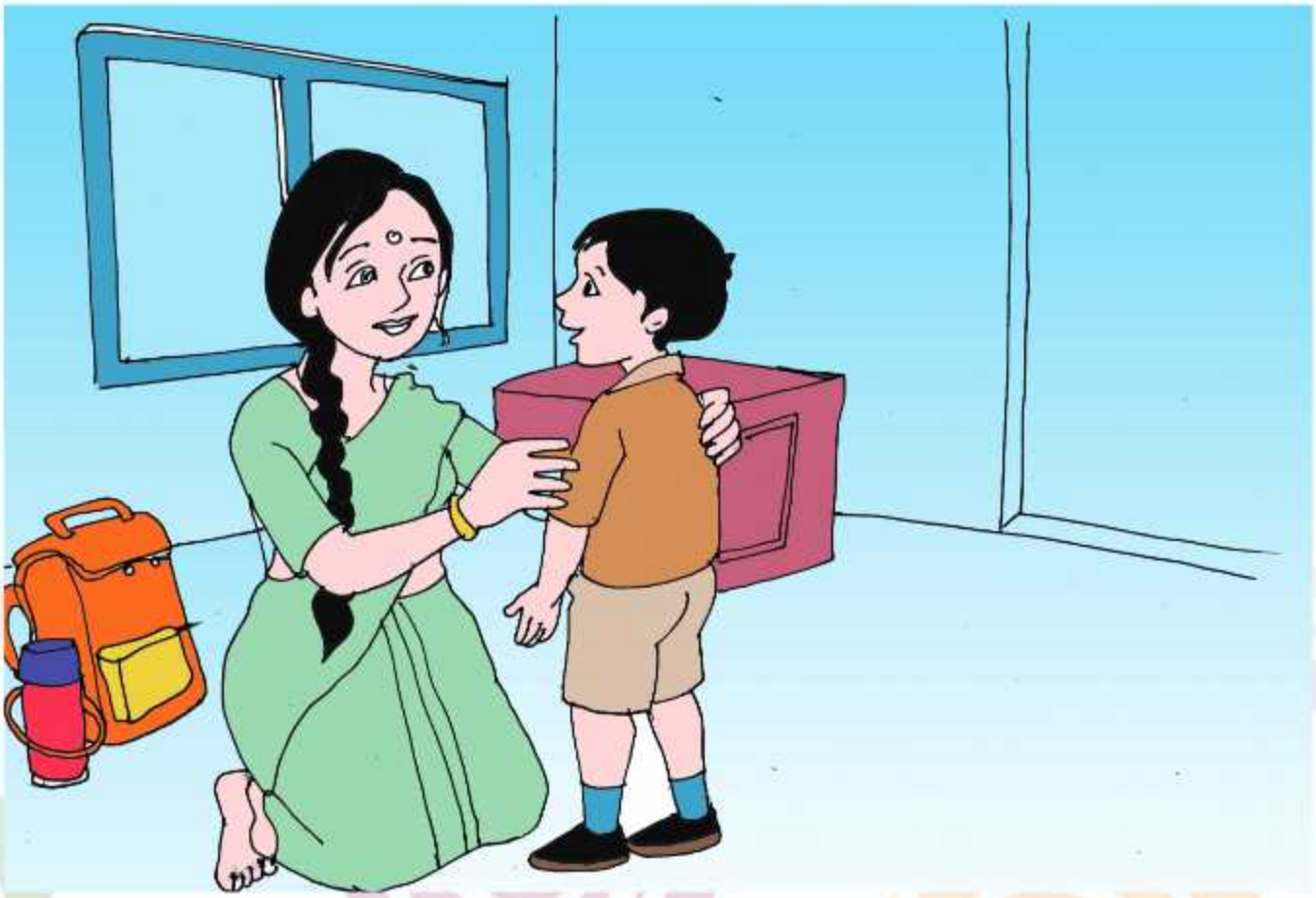

आँखों की तकलीफ नहीं हुई, फिर प्रशांत के साथ ही ऐसा क्यों हुआ? उनकी एक और समस्या थी कि वे परिवार को आगे बढ़ाएँ या नहीं। जीवन ने डॉ. अंबानी से भी इस संबंध में विचार-विमर्श किया। उन्होंने समझाया कि इसमें घबराने की कोई बात नहीं है। एक बच्चे के साथ हुआ है, तो इसका यह अर्थ नहीं है कि दूसरे को भी ऐसी ही परेशानी, हो; बाकी भगवान के भरोसे।

अंततः अंजना और जीवन ने इस दिशा में आगे बढ़ने का निश्चय कर ही लिया। एक-एक दिन उत्सुकता तथा चिंता को बढ़ाने वाला था। आखिर वह दिन भी आ गया। इस बार अंजना ने एक पुत्री को जन्म दिया। गोल-मटोल, हिरणी जैसी पानीदार आर्द्र, आँखों वाली प्यारी-सी बच्ची। लेकिन दूध का जला छाछ को भी फूँक-फूँक कर पीता है। सबसे पहले डॉक्टर से बच्ची की आँखों के बारे में ही पूछा गया। डॉ. अंबानी प्रकृति के इस चमत्कार को समझ नहीं पा रहे थे। वे फिर दुविधा में पड़ गए। परंतु उन्होंने उस समय वास्तविकता बताना ठीक न समझा। बोले, ''सब ठीक है, बस इसकी जाँच कराते रहना।'' धीरे-धीरे वास्तविकता प्रकट हो ही गई। वह हुआ, जिसका उन्हें डर था। इतनी प्यारी बच्ची और ऐसा भाग्य। मुसीबतें इंसान को मज़बूत बना देती हैं। अबकी बार अंजना एवं जीवन मानसिक रूप से तैयार थे। उन्होंने अपनी पुत्री का नाम रखा–'प्रिया'। प्रशांत और प्रिया। दोनों हँसमुख, दोनों मनमोहक, दोनों विशिष्ट।

अंजना और जीवन निराश नहीं हुए। आस्तिक अंजना ने इसे ईश्वर की लीला मानकर स्वीकार कर लिया। न कोई शिकवा, न शिकायत। केवल मौन साधना। इस बीच प्रशांत पाँच वर्ष का हो गया तथा प्रिया ढाई वर्ष की। प्रशांत को किस विद्यालय में प्रवेश दिलाया जाए, यह विचारणीय प्रश्न था। उसे दिखाई देता था, परंतु बहुत कम। अंजना और जीवन ने निर्णय लिया कि प्रशांत को सामान्य बच्चों के स्कूल में ही दाखिल करवाया जाए, न कि किसी अंध-विद्यालय में। काफी हिचकिचाहट के बाद प्रशांत को सामान्य विद्यालय में प्रवेश दे दिया गया। वह शीघ्र ही लिखना-पढ़ना सीख गया। उसकी स्मरण-शक्ति तो थी ही अद्‌भुत। प्रकृति जिसे कुछ अभाव देती है, उसे कुछ विशिष्टता भी देती है। वह अपनी कक्षा में प्रथम आया। उसके शिक्षकों को उसकी आँखों के बारे में पहले ही बता

दिया गया था, अतः उसकी परीक्षा मौखिक ही हुई। तीसरी कक्षा तक ऐसे ही चलता रहा। फिर यह निर्णय लिया गया कि वह प्रश्नों को सुनकर उसके उत्तर बोलता जाए तथा कोई अन्य बच्चा उत्तर लिखता जाए।

प्रिया भी जब पाँच वर्ष की हुई, तो उसे भी सामान्य लड़कियों के विद्यालयों में प्रवेश दिलाया गया। उसे प्रशांत की तुलना में अधिक दिखाई देता था। वह अपने उत्तर खुद लिखने की स्थिति में थीं, परंतु डॉक्टरों ने ऐसा करने से मना कर दिया, क्योंकि उससे आँखों पर अधिक ज़ोर पड़ता है। अंततः वह भी प्रशांत की ही भाँति पढ़ने तथा परीक्षा देने लगी। अंजना की ज़िंदगी तो मानो काँटों की सेज बन गई। वह दोनों बच्चों को तैयार करती, उन्हें स्कूल ले जाती तथा लाती। उनकी एक-एक ज़रूरत पूरी करती। उन्हें आँखों की कमी महसूस ही न होने देती। वह उनकी आँखें बन गई थी। उसके जीवन का एक ही लक्ष्य था–अपने असामान्य बच्चों को विशिष्ट बना देना। इसके लिए उस वीर माता ने अपने सारे सुख-सपने न्योछावर कर दिए। जीवन का उसे पूरा साथ मिल रहा था। पति का सहयोग पाकर नारी अबला से सबला बन जाती है। अंजना अपनी राह पर मज़बूती से बढ़ने लगी।

प्रशांत तथा प्रिया, न केवल अपनी कक्षा में अपितु पूरे विद्यालय और मुहल्ले में चर्चा का विषय बन गए। बहुत लोग अंजना के साथ सहानुभूति व्यक्त करते, परंतु अंजना कभी दिल छोटा न करती। प्रशांत तथा प्रिया ने अपनी प्रतिभा

विचार-विमर्श = बातचीत

आर्द्र = नम/गीली, अभाव = कमी।

से सबको प्रभावित कर लिया था। दसवीं की बोर्ड की परीक्षा हुई। प्रशांत अपने विद्यालय में प्रथम आया तथा पूरी दिल्ली में उसका स्थान छठा था। नेत्रहीन विद्यार्थियों में वह दूसरे स्थान पर था। अंजना एवं जीवन की प्रसन्नता का ओर-छोर न था। प्रिया ने भी दसवीं की परीक्षा में शानदार प्रदर्शन किया। वह अपने स्कूल में तथा दिल्ली के नेत्रहीन विद्यार्थियों में प्रथम आई। अंजना का देवी-सत्ता और कर्म-सिद्धांत में विश्वास दृढ़ हो गया।

कहते हैं 'ईश्वर के यहाँ देर है, अँधेर नहीं'। प्रशांत ने अच्छे अंकों से बारहवीं की परीक्षा पास की। कॉलेज जाने की तैयारी शुरू हुई। माँ का दिल नहीं मानता था। कॉलेज दूर होने से अब वह आशंकित थीं, किंतु प्रशांत का दृढ़-निश्चय, जीवन का आग्रह तथा बेटे के भविष्य के सामने माँ की ममता हार गई। प्रशांत के दो मित्रों के साथ वह उसे कॉलेज भेजने पर राज़ी हो गई। दिल्ली विश्वविद्यालय के एक प्रतिष्ठित कॉलेज में अपनी अनोखी शिक्षा तथा परीक्षा पद्धति का सहारा लेते हुए प्रशांत ने उच्च द्वितीय श्रेणी में बी.ए. तथा एम.ए. किया। एम.ए. के दौरान ही एक छात्रा से हुई मुलाकात ने प्रशांत तथा उसके परिवारजन को खुशियों से भर दिया। मोहिनी यथा नाम तथा गुण थी। सुंदर, सौम्य, सुसंस्कृत मोहिनी ने अपने माता-पिता तथा समाज का विरोध करते हुए, प्रशांत का जो हाथ थामा, तो मानो प्रशांत की सूनी बगिया महक उठी। अंजना तथा जीवन तो इस साहसी बाला के अद्‌भुत कृत्य से आनंद-विभोर हो उठे। मोहिनी के त्याग तथा दृढ़ता ने सीता, सावित्री, उर्मिला जैसी भारतीय ललनाओं की याद ताजा करा दी।

माँ के दु:ख-कष्टों के आँसुओं से सिंचा तथा पिता की सहिष्णुता और तपस्या की खाद से पुष्ट पौधा, मोहिनी के प्यार की ऊष्मा पीकर फूल-फल उठा। वर्षों बाद उस आँगन में एक नन्हीं किलकारी गूँजी। आशा तथा आशंका के झूले पर झूलते सभी परिवार तथा मित्र जन की आँखें, नवजात शिशु की आँखों का निरीक्षण करने लगीं। भगवान शायद उनकी

परीक्षा से संतुष्ट हो गया था। प्रशांत का पुत्र प्रसून बिलकुल पिता का प्रतिरूप था। अंतर था तो केवल आँखों का। एक दृष्टिविहीन तो दूसरी दृष्टियुक्त। इसी बीच प्रिया ने भी अपनी बी.ए. तथा एम.ए. की पढ़ाई पूरी की। प्रशांत, मोहिनी तथा प्रिया तीनों ने बी.एड. किया। तीनों ने विद्यालय में नौकरी प्राप्त की। प्रशांत तथा प्रिया ने इस बार भी लीक से हटकर कार्य किया। वे दोनों अध्यापक बने, किंतु किसी अंध-विद्यालय में नहीं, अपितु सामान्य विद्यालय में। शुरू में उनकी क्षमताओं पर अविश्वास व्यक्त किया गया परंतु जब एक बार उन्हें मौका दिया गया, तो उन्होंने प्रमाणित कर दिया कि वे किसी भी भाँति सामान्य शिक्षकों से कम नहीं हैं; अपितु कार्य के प्रति गंभीरता तथा लगन में अन्य शिक्षकों से इक्कीस ही हैं, उन्नीस नहीं।

मगर अंजना को अभी भी चैन कहाँ? जवानी की दहलीज़ पर खड़ी बेटी हर भारतीय माँ के सामने चिंताओं का द्वार खोल देती है। बेटे की गृहस्थी तो बस गई; परंतु बेटी का क्या होगा? यहीं चिंता अंजना को खाए जा रही थी। कौन करेगा ऐसा भीष्म त्याग? किंतु कर्त्तव्य को ही पूजा मानते हुए अंजना सतत आशा का दामन थामे रही। प्रयास जारी रहे। समाचार पत्र, पत्रिकाओं में विज्ञापन दिए गए। कई रिश्ते आए एक नौजवान का भावों से ओत-प्रोत, परिपक्व चिंतन का परिचय देता हुआ प्राप्त हुआ। बात आगे बढ़ी और बन गई। बैंक में मैनेजर, हृष्ट-पुष्ट, स्वस्थ, सामान्य युवक शिवप्रकाश ने शिव-सा कार्य कर दिखाया। असंभव संभव हो गया। बड़ी धूमधाम से दोनों का विवाह हुआ। सच है, जहाँ चाह, वहाँ राह।

प्रशांत था प्रिया की अनवरत साधना यहीं नहीं थमी। उन्हें पहुँचाना था क्षितिज के पार। दोनों ने हिंदी में पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त की। दोनों को कॉलेज में लेक्चरर की नौकरी मिल गई। प्रिया ने इसी बीच चाँद-सी एक बिटिया को जन्म दिया। नाम रखा गया कृति। विलक्षण माता-पिता की मनमोहक कृति। मोहिनी के भी एक प्यारी-सी बिटिया हुई। उसका नाम रखा–आस्था। मानव की अपने भाग्य और कर्म में आस्था। अंजना तथा जीवन की तपस्या रंग लाई। प्रशांत तथा प्रिया अपनी-अपनी संतान की आँखों से दुनिया देखते हुए आने वाली पीढ़ियों के प्रेरणा-स्रोत तथा मार्गदर्शक बने प्रशांत-मोहिनी तथा प्रिया-शिव के ये दो विलक्षण युगल नई राहें बनाते हुए अपनी मंजिलों की ओर चल दिए। उनके कदमों में दृढ़ता थी, मन में उत्साह और उमंगों का सागर लहरा रहा था।

पद 26

मैया मोरी मैं नहीं माखन खायो।
भोर भयो गय्यन के पीछे, मधुबन मोहि पठायो।
चार पहार बंशी वट भटकयो, साँझ परे घर आयो।
ये लो अपीन लकुटि कमरिया, बहुत ही नाच नचायो।
'सूरदास' तब बिहँसि जशोदा, ले उर कंठ लगायो।।

(सूरदास)

पायो जी मैंने राम रतन धन पायो।
वस्तु अमोलक दे मेरे सत्गुरु, किरपा कर अपनायो।
जनम-जनम की पूँजी पाई, जग में सभी खोवायो।
खर्चा न खूटे, वाको चोर ने लूटे, दिन-दिन बढ़त सवायो।
सत की नाव खेवटिया सतगुरु, भवसागर तर लायो।
'मीरा' के प्रभु गिरधर नागर, हरख-हरख जस गायो।

(मीरा बाई)

मुख्य भाव

पहले पद में श्रीकृष्ण जी के बाल रूप का वर्णन हुआ है, जिसमें वे अपनी गलतियों को छुपाने के लिए माँ यशोदा के सामने तर्क प्रस्तुत कर रहे हैं। उनके तर्कों को सुनकर यशोदा जी उन्हें अपने हृदय से लगा लेती हैं।

दूसरे पद में ईश्वर की महिमा का गुणगान किया गया है। मीराबाई ने राम रूपी धन को सबसे अमूल्य बताया है, जो खर्च करने से घटता नहीं, बल्कि बढ़ता जाता है। यही एक ऐसा धन है, जो इस संसार रूपी भवसागर से सबको पार लगाता है।

शब्द	अर्थ
मोरी	मैंने
गय्यन	गायों
लकुटि	लकड़ी

उर	हृदय
खेवटिया	नाविक, नाव चलाने वाला
अमोलक	अमूल्य, जिसका कोई मोल न हो
खुटे	कम होना
वाको	उसे
हरख-हरख	खुश हो-होकर
जस	यश

पद की समझ

1. सही उत्तर के सामने सही (√) का चिह्न लगाइए-

(क) श्री कृष्ण जी ने क्या नहीं खाया?

(i) रोटी (ii) घी

(iii) माखन (iv) दही

(ख) श्री कृष्ण को सुबह होते ही कहाँ भेज दिया जाता है?

(i) नदी के किनारे (ii) मधुबन में

(iii) यशोदा के पास (iv) इनमें से कहीं नहीं

(ग) मीरा ने किस रतन को पाने की बात कही है?

(i) श्याम (ii) मोती

(iii) ज्ञान (iv) राम

(घ) किस नाव से भवसागर को पार किया जा सकता है?

(i) सत रूपी नाव (ii) असत रूपी नाव

(iii) प्रेम रूपी नाव (iv) ज्ञान रूपी नाव

2. एक या दो वाक्यों में उत्तर दीजिए-

(क) श्री कृष्ण माँ यशोदा को किस बात की सफ़ाई दे रहे हैं?

(ख) श्री कृष्ण वन में क्या करने जाते हैं?

(ग) श्री कृष्ण माँ यशोदा को क्रोध में क्या कहते हैं?

(घ) मीरा को अमूल्य वस्तु किसने दी?

(ङ) मीरा इस पद में किसकी आराधना कर रही हैं?

चार या पाँच वाक्यों में उत्तर दीजिए-

(क) ''सूरदास तब बिहँसि जसोदा, ले उर कंठ लगायो।'' इस पंक्ति का भावार्थ अपने शब्दों में लिखिए।

(ख) श्री कृष्ण ने अपनी सफ़ाई में क्या-क्या तर्क प्रस्तुत किए है?

(ग) मीराबाई ने राम रूपी धन की किन विशेषताओं का उल्लेख किया है?

भाषा की समझ

निम्नलिखित शब्दों के तत्सम् रूप बॉक्स में से छाँटकर उनके सामने लिखिए-

माखन	.....	पहन	.....
कमरिया	.....	नाच	.....
अमोलक	.....	रतन	.....
किरपा	.....	जनम	.....

कंबल, नृत्य, अमूल्य, रत्न, कृपा, जन्म, मक्खन, प्रहर

यह भी जानिए

''सरस्वती के भंडार की बड़ी अपूरव बात।
ज्यों-ज्यों खर्चे त्यों बढ़े, ज्यों जोड़े घट जात।''

सरस्वती का भंडार अर्थात् ज्ञान एक ऐसी वस्तु है, जो बाँटने से बढ़ती है। इसलिए विद्या का दान हमेशा करते रहना चाहिए, नहीं तो यह धीरे-धीरे नष्ट हो जाती है।

करके सीखिए

ऊपर लिखे पद को अपने सहपाठियों के समक्ष पढ़कर सुनाइए।

फूल भी और फल भी 27

बात कई वर्ष पुरानी है। एक बड़े घर की है। घर में कई घने वृक्ष थे। उन्हें कभी भी काटा या छाँटा नहीं गया था। घर की मालकिन का कहना था कि पेड़ों की टहनियाँ तोड़ने से पेड़ों को ज़रूर दर्द होता होगा। किसी को पेड़ों की टहनियाँ तक तोड़ने की इज़ाज़त नहीं थी। असल में मालकिन बहुत ही संवेदनशील महिला थीं। उनके घर में रहने वाला हर प्राणी उनसे प्यार पाता था और प्यार करता था। घर में आने वालों के साथ उनका व्यवहार भी बहुत आत्मीय होता था। इसी से आने वाला सहज ही अपना संकोच और झिझक छोड़ देता था। लोग भी उन्हें बहुत प्यार करते थे।

एक बार उन्हीं के घर पर जाने का मौका मुझे भी मिला। मैं हिंदी के बहुत बड़े साहित्यकार स्व. जैनेंद्र जी के साथ उनके यहाँ गया था। साथ में प्रसिद्ध कवि डॉ. जगदीश गुप्त भी थे। वे अपने घर में हमारी प्रतीक्षा ही कर रहीं थीं। जैनेंद्र जी से तो वे ऐसे मिलीं, जैसे बरसों से बिछुड़े भाई से मिली हों। हम सबको वे अंदर कमरे में लिवा ले गईं। कमरें में अपने ही किस्म की छाप थी। हम लोग नीचे ही बैठे। वे हिंदी की बहुत ही जानी-मानी कवयित्री थीं, इसलिए मुझे तो थोड़ा संकोच हो रहा था, लेकिन जल्दी ही उन्होंने मेरे संकोच को दूर करते हुए अपने साथ घुला-मिला लिया। मुझे बातचीत के दौरान लगा कि वे बहुत ही मज़ाकिया महिला है। गंभीर बात भी करती है, उसे दिलचस्प बनाकर।

अब नाश्ते-पानी की बारी थी। कुछ मिठाइयाँ आईं। हमारी ओर से थोड़ी आनाकानी हुई। मुझे तो उन्होंने अधिकार सहित कह दिया कि अभी तुम उम्र में छोटे हो, सो खूब मिठाई खाओ। मैंने उनके आदेश का पालन किया। बाकी दोनों मेहमानों के लिए उन्होंने भीतर से एक खास मिठाई लाने को कहा। जब तक मिठाई आती उन्होंने बताया कि आज उन्होंने अपने हाथों से एक ऐसी मिठाई बनाई है, जो किसी भी तरह नुकसानदायक नहीं होती। वही मँगाई है। लेकिन जब उन्होंने यह कहा कि वह मिठाइयों में अकेली ऐसी मिठाई है जो फूल भी है और फल भी, तो मैं बुरी तरह चौंक गया। चौंक तो शायद दूसरे भी गए थे। मिठाई तो ठीक पर, यह फूल और फल का क्या रहस्य है मैं नहीं सोच पा रहा था। हाँ, इतनी बड़ी कवयित्री होते हुए भी वे जितनी आवभगत कर रही थीं और खासतौर पर मेरे प्रति जितना ध्यान दे रही थीं उससे मैं बहुत ही प्रभावित था। शायद मन ही मन यह भी सोच रहा था कि आगे से अपने मेहमानों के प्रति मैं भी ऐसा ही व्यवहार करूँगा।

खास मिठाई आई तो हैरानी का फिर एक दौर चल गया। मिठाई तो ऐसी नहीं थी जिससे हम परिचित न हों। बड़ी प्रसिद्ध मिठाई थी। भला गुलाब-जामुन किसने नहीं खाई होगी। वे हमारी स्थिति को भाँप गई थीं। सो मुस्कुरा कर बोलीं,

'अरे, इसमें इतना हैरान होने की क्या बात है। यही तो वह मिठाई है जो फूल भी है और फल भी। गुलाब हुआ फूल और जामुन हुई फल, फिर क्या था। हँसी का वह ठहाका लगा कि मज़ा आ गया और ऊपर से मिली गुलाब जामुन।

आज भी उन स्व. कवयित्री महादेवी वर्मा के साथ बिताए उन क्षणों की याद आती है तो आत्मीयता का रस भिगोने लगता है। उनके घर की याद एक मंदिर के रूप में ही आती है।

मुख्यभाव

यह एक छोटी-सी रोचक कहानी है, जिसमें लेखक ने कवयित्री महादेवी वर्मा की संवेदनशीलता को दिखाया है, जो अजनबी को भी आत्मीय बना लेती हैं। गंभीर-से-गंभीर बात को भी मज़ाकिया लहजे में कह देना उनकी सबसे बड़ी विशेषता है। गुलाब-जामुन जैसी प्रचलित मिठाई को भी उन्होंने फूल और फल का नाम देकर रोचक अंदाज़ में पेश किया है।

शब्द	अर्थ
इज़ाज़त	अनुमति
संवेदनशील	भावुक
आत्मीय	अपनापन
प्रतीक्षा	इंतज़ार
आवभगत	स्वागत-सत्कार
दिलचस्प	रूचिकर

पाठ की समझ

1. सही उत्तर के सामने सही का चिह्न (√) लगाइए-

(क) मालकिन कैसी महिला थी?

(i) निरंकुश (ii) संकोची

(iii) संवेदनशील (iv) इनमें से कोई नहीं

(ख) वे गंभीर बात को भी कैसे पेश करती है?

(i) बोझिल बनाकर (ii) मजाक बनाकर

(iii) आसान बनाकर (iv) दिलचस्प बनाकर

(ग) बात कितनी वर्ष पुरानी है?

(i) कई वर्ष (ii) पाँच वर्ष

(iii) बीस वर्ष (iv) दो वर्ष

(घ) लेखक एवं अन्य साहित्यकार कमरे में कहाँ बैठे?

(i) सोफे पर (ii) नीचे

(iii) कुर्सी पर (iv) चारपाई पर

2. एक या दो वाक्यों में उत्तर दीजिए–

(क) मालकिन के घर में किस कार्य की इज़ाज़त नहीं थी?

(ख) मेहमानों के साथ उनका व्यवहार कैसा होता था?

(ग) जैनेंद्र जी से वे कैसे मिलीं?

(घ) कवयित्री ने किस मिठाई की बात की है जो फूल भी है और फल भी?

(ङ) लेखक को महादेवी वर्मा जी के घर की याद किस रूप में आती है?

(च) पाठ के आधार पर महादेवी वर्मा जी के व्यक्तित्व की किन्हीं दो विशेषताओं को लिखिए।

3. चार-पाँच वाक्यों में उत्तर दीजिए :

महादेवी वर्मा जी के साथ बिताए उन क्षणों की याद लेखक को आत्मीयता के रस में भिगोने लगती है, क्यों?

भाषा की समझ

अव्यय–जिन शब्दों में लिंग, वचन, कारक, काल आदि के कारण कोई विकार न आए उन्हें 'अव्यय' या अविकारी शब्द कहते हैं। अव्यय मुख्यत: चार प्रकार के होते हैं : क्रिया-विशेषण, संबंधबोधक, समुच्चयबोधक, विस्मयादिबोधक।

यहाँ हम केवल समुच्चयबोधक अव्यय की बात करेंगे।

दो शब्दों या वाक्यों को जोड़ने वाले अव्यय को समुच्चय बोधक कहते हैं। जैसे–राम और श्याम में 'और' समुच्चय बोधक अव्यय है जो राम श्याम शब्दों को जोड़ता है। इस पाठ में ऐसे बहुत से प्रयोग हुए हैं। उन्हें छाँटिए और लिखिए। निपात–निपातों का प्रयोग प्राय: वाक्य के किसी पद पर बल प्रदान करने के लिए किया जाता है। वैसे तो निपात का प्रयोग प्रश्न करने में, अस्वीकृति प्रकट करने में एवं विस्मय प्रकट करने में किया जाता है। किंतु हम यहाँ केवल बल प्रदान करने वाले निपात पर चर्चा करेंगे। जैसे–दिनेश ही इस कार्य को कर सकता है। इस वाक्य में 'ही' निपात है जो दिनेश पर बल प्रदान कर रहा है। पाठ में प्रयुक्त हुए ऐसे प्रयोगों को छाँटकर लिखिए।

यह भी जानिए

महादेवी वर्मा जी का जन्म 1907 में उत्तर प्रदेश में हुआ था। छायावाद के चार प्रमुख स्तंभों जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' एवं महादेवी वर्मा में से वे एक थी। इनके बहुत से काव्य संग्रह प्रकाशित हुए जिनमें प्रमुख हैं : नीहार, नीरजा, यामा, सांध्यगीत, रश्मि आदि।

करके सीखिए

आपके घर में कई प्रकार के त्योहार मनाए जाते होंगे। इन त्योहारों पर बहुत-सी मिठाइयाँ भी बनती होंगी। इन मिठाइयों के नाम लिखिए एवं पता कीजिए कि ये किन सामग्रियों से बनती हैं?

जीवन-कौशल

इस कहानी में महादेवी वर्मा जी का अंत: वैयक्तिक संबंध कौशल प्रमुखता से उभर कर आया है। अजनबी लोगों से भी शीघ्रता से घनिष्ट संबंध स्थापित कर लेना तथा व्यक्ति के बारे में जान जाना उनके सामाजिक कौशल को दर्शाता है। आपको भी इससे सबक लेकर अपने सामाजिक कौशलों को विकसित करने का प्रयास करना चाहिए।

दो सौंवा गोल/हॉकी और ध्यानचंद

28

बात 1935 की है। भारतीय हॉकी टीम आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड के दौरे पर थी। इस दौरे का आखिरी यानि कि अड़तालीसवां मैच चल रहा था। दर्शकों की निगाहें उसकी ही स्टिक पर टिकी थीं मानो हॉकी की स्टिक न होकर कोई जादू की छड़ी हो। पूरे दौरे में यह छड़ी अब तक 199 गोल कर चुकी थी। अब आखिरी मैच के आखिरी पलों में शायद कोई और गोल करने वाली हो। आज भी वह उसके इशारे पर काम कर रही थी, पर पता नहीं क्या बात थी कि जब भी गेंद 'डी' के पास पहुंचती, कुछ न कुछ आड़े आ जाता। उसने भला कब हार मानी थी? कभी लाठी सी बल खाती तो कभी तलवार सी चमक उठती उसकी वह स्टिक फुरती से अपना काम कर रही थी। उसकी आंखे भले ही गेंद पर थी पर कान तो उस आखिरी सीटी को सुनने के लिए व्याकुल थे जो गोल होने की सूचना दे सके।

अचानक गेंद गोल पोस्ट के सामने पहुंची अब भला क्या सोचना? गोल हुआ ही समझिए। उसके बारे में यह मशहूर था कि एक बार गेंद 'डी' के सामने आई नहीं कि गोल हो गया। वास्तव में वह यह देखने के लिए कभी नहीं रूका कि गेंद गोल पोस्ट को पार कर गई या नहीं।

पर इस बार! घोर आश्चर्य! आवाज़े कुछ इस प्रकार आई 'गोल तो नहीं हुआ'। वह शायद यह मानने के लिए तैयार न था। वह मुड़ा, देखा गेंद गोल की लाईन के पास ही थी।

अफसोस, वह उसके पार न जा सकी थी। इस बात को मानने के लिए कोई भी तैयार न था। पर यह सच था। और जानते हैं कि इस सच की क्या वजह थी? बरसात के कारण मैदान गीला था गोल लाइन के पास इकट्ठी हुई दलदल। दरअसल मैच से पहले हलकी बारिश हो चुकी थी। जमीन गीली थी। गेंद जब भी गोल पोस्ट की तरफ रौंदी जाती, अपने साथ मिट्टी ले जाती। यह मिट्टी वहां कुछ ऐसे जमा हुई मानो दल-दल हो और यही गेंद को रोकने का कारण बनी।

पर उसकी जादुई छड़ी क्या इतने से हार मान लेती? अब खेल की तकनीक बदली गई। पिलक या पुश स्ट्रोक तो काम

करते नहीं दिख रहे थे। 'फ्रन्टल अटैक' की नीति अपनाई गई और सीधी रेखा में कम से कम दूरी तय करते हुए गेंद को 'डी' तक पहुंचा दिया। सबकी सांस जैसे थम सी गई हो। एकदम सन्नाटा और फिर गेंद के बोर्ड से टकराने की आवाज़। टैली बोर्ड पर दो सौ की संख्या उभर आई।

''लकड़ी पर चमड़े की धमक पहले कभी इतनी मीठी न लगी जितनी कि आज।'' यह उसके खुद के शब्द थे।

जी हां, मेजर ध्यानचंद 'हॉकी के जादूगर' अपना दो सौंवा गोल कर चुके थे। विश्व की महानतम खेल स्पर्धा ओलम्पिक में भारतीय हॉकी संघ के अनुरोध पर हॉकी को पुन: शामिल किया गया 1928 में। इस निर्णय के साथ ही भारतीय हॉकी टीम बड़ी व्यग्रता से 17 मई के उषाकाल की प्रतीक्षा करने लगी। जानते हैं, इस नवें ओलम्पिक के मेजबान कीवियों ने क्या किया? मैदान की कटाई-छंटाई ही नहीं करवाई। 'डी' के पास की घास तो साफ थी पर मैदान में लंबी-लंबी घास थी। शायद वे न्यूजीलैंड के दौरे (1925) में सनसनी फैलाने वाले ध्यानचंद की तकनीकों को भांप चुके थे। पर ध्यानचंद का खेल मैदान की व्यवस्था, नियमों की व्याख्या और विपक्षी टीम की मंशा की परिधि के बाहर था। स्टिक मैदान की स्थिति को भांप लेती और उसी के अनुसार अपने को ढाल लेती। यहां भी उसने वही किया। विपक्षी टीम के हिट के जवाब में पिलक और पुश प्रभावशाली नहीं दिखे तो ड्रिब्लिंग का सहारा लिया और पूरे छह गोलों से आस्ट्रिया की टीम को हराया। हॉकी के मैदान में हैरतअंगेज कारनामे दिखाने वाले इस बाजीगर का जन्म नाम ध्यानसिंह था। रेजीमेंट के साथियों ने इस सिंह का चंद बना दिया। दरअसल सिपाही ध्यानसिंह समयाभाव के कारण रात में भी हॉकी का अभ्यास करता। रातों की कालिमा तो न जाने कहां छिप गई पर उसकी चांदनी ध्यान के साथ जुड़ गई।

ध्यानचंद का जन्म 29 अगस्त 1905 को इलाहाबाद में एक फौजी परिवार में हुआ। यह परिवार बाद में झांसी में जा बसा। पिता फौज में, बड़े भाई भी फौज में, स्वाभाविक था कि इनका भी रूझान सेना की तरफ ही होता। सचमुच ही जब उम्र के 16वें बसंत में कदम रखा अल्हड़पन और मस्ती की भूल सेना में भर्ती हो गए। इस प्रकार एक सिपाही के रूप में दिल्ली में फर्स्ट ब्राह्मण रेजीमेंट से अपना सैनिक जीवन शुरू किया।

उस समय यह रेजीमेंट हॉकी के लिए विशेष रूप से जानी जाती थी। शायद यही एक ऐसा आउटडोर खेल था जिसपर रेजीमेंट का विशेष ध्यान था। इस रेजीमेंट में एक सूबेदार-मेजर थे बाले तिवारी जो हॉकी के बड़े अच्छे खिलाड़ी थे। उन्होंने न केवल ध्यानचंद को खेल के प्रति आकर्षित किया बल्कि इस खेल के बहुत से गुर भी सिखाए। यही गुर ध्यानचंद को हॉकी जगत का कालजयी खिलाड़ी बना गए।

अपने हॉकी जीवन की शुरुआत से ही ध्यानचंद को ड्रिब्लिंग के प्रति विशेष आकर्षण पैदा हुआ। पर गुरु बाले तिवारी उन्हें गेंद को बहुत देर तक ड्रिब्लिंग करने या गेंद को बहुत देर तक अपने पास नहीं रखने देते थे। उन्होंने ध्यानचंद के मस्तिष्क में यह बात कूट-कूट कर भर दी थी कि हॉकी टीम का खेल है और सही समय पर गेंद दूसरे खिलाड़ी को पास कर देनी चाहिए। दूसरी बात जो उन्होंने सिखाई, वह थी गोल करना। उनके अनुसार गोल तेज हिट के द्वारा नहीं बल्कि पुश स्ट्रोक और पास देकर किया जाना चाहिए। हॉकी की इन प्रारंभिक सीखों ने ध्यानचंद का बड़ा साथ दिया।

ध्यानचंद के लिए वे पल बड़े ही रोमांचकारी थे जब बाले तिवारी ने उन्हें बताया कि वे दिल्ली में होने वाले वार्षिक मिलिट्री टूर्नामेंट (192) के लिए चुन लिए गए हैं। यह उनका पहला बड़ा मैच था। इसे जीतने से भला वे कैसे-चूकते? खेल की बारीकियाँ जो अभी सीख ही रहे थे, उनका इस्तेमाल कर मैच में रोमांच भर दिया। इस जीत ने टीम में उनकी 'सैंटर फारवर्ड' की पोजीशन को पक्का कर दिया। झेलम में खेला गया आर्मी हॉकी टूर्नामेंट भी उनके लिए कम महत्वपूर्ण न

था। उनकी टीम दो गोल से हार रही थी। कमाडिंग आफीसर व सैनिक 'गोल करो- गोल करो' का शोर मचा रहे थे। ऐसे में खेल के अंतिम चार मिनटों में ध्यानचंद ने एक के बाद एक करके तीन चमत्कारिक गोलों की झड़ी लगा दी। टीम की जीत ने उन्हें 'हॉकी के जादूगर' का खिताब दिया। अब वे पंजाब रेजीमेंट के सिपाही थे और एक चर्चित खिलाड़ी बन चुके थे।

1922 और 1926 के मध्य पूर्ण रूप से ध्यानचंद की हॉकी सेना के टूर्नामेंटो तक ही सीमित रही। उनकी महत्वकांक्षा तो थी कि वे भारतीय हॉकी टीम में स्थान पा जाए पर अभी कैसे? वे रैंक में तो छोटे थे ही और शर्मीले इतने कि बस पूछो न। उन्होंने अपने गुरु से यह भी सीखा था कि जिंदगी के किसी भी पड़ाव पर किसी का भी अनुग्रह या कृपा मत माँगों। उनके चमत्कारिक खेल को किसी के अनुग्रह की जरूरत भी नहीं पड़ी। जीतों के चर्चे तो थे ही, खेल कौशल से वशीभूत कर देने वाले पल भी लोगों की स्मृति में थे और एक दिन कमाडिंग आफीसर ने उन्हें बुलाया, कहा- ''लड़के। तुम्हें न्यूजीलैंड के दौरे पर जाना है।'' वे पल ध्यानचंद के लिए कैसे होंगे? उन्हीं के शब्दों में- ''मैं तो एकदम शब्द विहीन हो गया। मुझे कोई उत्तर नहीं सूझ रहा था। अधिक से अधिक मैंने क्या किया, अपनी एड़ियों को चटखाया। एक शानदार सैल्यूट दिया और लौटने के लिए तेजी से पीछे मुड़ा। अफसर की निगाह से जो ओझल हुआ तो सरपट खरगोश की फुर्ती सा दौड़ा और सीधे बैरक में जाकर ही दम लिया। मैंने यह शुभ समाचार अपने सैनिक साथियों को सुनाया। क्या भव्य स्वागत उन्होंने मुझे दिया।''

खेल का वह दौर आज के दौर से सर्वथा भिन्न था। आजकल तो बड़ी-बड़ी कंपनियाँ खेल मैचों को प्रायोजित करती है। खिलाड़ियों को प्रशिक्षण की सुविधा के साथ-साथ उनकी पोशाक, खेल सामग्री की व्यवस्था भी करती हैं। पर ध्यानचंद के समय ऐसे तामझाम कहाँ?

अप्रैल 1926 को कोलंबो से न्यूजीलैंड के लिए जलयान से उनकी पहली अंतर्राष्ट्रीय यात्रा आरंभ हुई फिर तो पीछे कभी मुड़कर न देखा। इस पहले दौरे ने ही उन्हें ख्याति के उच्चतम शिखर पर पहुंचा दिया। विदेशी धरती पर अंतर्राष्ट्रीय स्पध ाओं में 590 गोल दागने का श्रेय जाता है ध्यानचंद को। 1928 एमस्टरडम ओलंपिक 1932 लांस एंजेल्स और 1936 बर्लिन ओलांपिक सभी में ध्यानचंद की चमत्कारी स्टिक खिलाड़ियों और दर्शकों को चमत्कृत करती रही। लगातार तीनों बार ओलंपिक विजय का गौरव भारतीय हॉकी टीम को मिला।

15 अगस्त 1936 का फाइनल मैच तो सभी खेल प्रेमियों के लिए यादगार का दिन रहेगा। जर्मनी के विरूध मध्यावकाश तक टीम 1-0 के आगे थी। मध्यान्तर के बाद तो भारत ने चारों तरफ से धावा बोल दिया। जर्मनी की टीम इस दबाव को सहन न कर पाई और जल्दी ही धराशायी हो गई। जर्मन खिलाड़ियों ने जीत निश्चित करने के लिए 'अंडर कट' का सहारा लिया। पर ध्यानचंद ने हॉफ वुलीइंग और लंबे शाटो का सहारा लिया। उन्होंने अपने नुकीले जुते ओर मोजे उतार फेंके और नंगे पैर तेज गति से खेलने लगे। उनके अद्‌भुत गेंद नियंत्रण, सटीक पास, गोल रक्षक की स्थिति के अनुरूप पुश, फ्लिक स्कूप और हिट से गोल मारने के विलक्षण कौशल को सभी अचंभित से देख रहे थे। टीम के दूसरे खिलाड़ी तापसेल, एलेन, दारा, जफर सभी आपसी तालमेल और विश्वसनीयता का परिचय दे रहे थे।

खेल के समापन समारोह के बाद ड्यूश हॉल में आयोजित विशाल भोज में स्वयं हिटलर भी उपस्थित थे। यहाँ जर्मन सैन्य खिलाड़ियों का सम्मान देखकर एक पल तो उनके मन में यह ख्याल आया कि अगर वे नाजी सेना की ओर से खेलते तो फील्ड मार्शल के पद से रिटायर होते पर अपने वतन के प्रति प्यार और सम्मान ने इस ख्याल को तुरंत ही कुचल दिया।

ध्यानचंद को अंतर्राष्ट्रीय स्पर्धाओं से जब भी समय मिलता वे अपने रेजीमेंट और 'झांसी हीरोज़' की तरफ से राष्ट्रीय स्पध ाओं में खेलते। 'झांसी हीरोज़' को वे अपना ही क्लब कहते। इसमें झांसी के स्थानीय खिलाड़ी ही शामिल थे और ध्यानचंद के अनुसार यह कोई सशक्त टीम न थी। इसी वजह से वह बहुचर्चित आगा खां हॉकी टूर्नामेंट में खेलने के लिए बेमन से राजी हुए पर यहां भी वे एक शानदार जीत के हकदार बने।

विश्व विजयी और जादूगर कहलाने वाले ध्यानचंद एक अच्छे खिलाड़ी ही नहीं बड़े सरल और शांतिप्रिय इंसान थे। सभी लोग उन्हें आदर और स्नेह से दद्दा कहते थे। उनके उत्कृष्ट खेल के लिए उन्हें 'पद्म श्री' का सम्मान दिया गया। उनका जन्मदिवस 29 अगस्त राष्ट्रीय खेल दिवस के रूप में मनाया जाता है।

दो दशकों तक निरन्तर भारतवर्ष को विश्व के मानचित्र की सर्वोच्च बुलन्दियों पर पहुंचाने के बाद मेजर ध्यानचंद बुंदेलखंड की धरती में विलीन हो गए। भारतीय हॉकी टीम का गौरवशाली इतिहास अपने इस महानायक को कभी न भूल सकेगा। आज उन्हीं की यादों से हॉकी की जड़ों को ऊर्जा मिलती है।

संक्षिप्त जीवन परिचय

जन्म	–	29 अगस्त, 1905 इलाहाबाद में।
स्थायी निवास	–	सिपरी बाजार, झांसी।
पिता का नाम	–	सूबेदार सोमेश्वर दत्त सिंह
प्रथम प्रशिक्षक	–	सुबेदार-मेजर बाले तिवारी
परिवार *भाई रूपसिंह जो स्वयं ओलिम्पियन रहे। बर्लिन के मैच में पहला गोल उसी ने किया था जो मध्यांतर से पहले का एकमात्र गोल था।	–	पत्नी श्रीमती जानकी देवी। सात बेटे व चार बेटियां। पुत्र अशोक कुमार सिंह भारतीय हॉकी टीम में 'राइट इन स्कीमर' ओलम्पिक खिलाड़ी। 1975 के कुआलालम्पुर विश्व कप के फाइनल में पाकिस्तान के विरूद्ध विजयी गोल दागने का श्रेय।
व्यवसाय	–	1922 में ब्राह्मण रेजीमेंट में सिपाही के रूप में भरती। 1928 की जीत के बाद लांसनायक, 1932 की जीत के बाद नायक 1936 में जीत की हैटट्रिक के बाद आफीसर के ओहदे पर पदोन्नति। 1943 में लेफ्टिनेंट और 1947 को मेजर
मृत्यु	–	3 दिसंबर 1979 दिल्ली में। पंजाब रेजीमेंट द्वारा सर्वोच्च सैनिक सम्मान के साथ झांसी में अंतिम विदाई।

विद्यार्थी प्रगति पत्रक

शिक्षक/शिक्षिका विगत पाठों में छात्र की प्रगति को निम्न तालिका में अंकित करें। सीखने के प्रतिफल लिखने के लिए पुस्तक के अंत में दी गई सूची से विवरण लें।

क्र. सं.	सीखने के प्रतिफल	3	2	1
		सक्षम है	सहायता से करता/ करती है	सुधार की आवश्यकता है
1.	.....			
2.	.....			
3.	.....			
4.	.....			
5.	.....			
6.	.....			
7.	.....			
8.	.....			
9.	.....			
10.	.....			

सीखने के प्रतिफल

हिंदी

1. पढ़ी, सुनी, देखी घटनाओं, कहानियों, कविताओं, समाचारों आदि के विषय में सवाल पूछते और बातचीत करते हैं, अपनी राय देते हैं व प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं।

2. लगभग 2-3 वाक्यों के लेखन में संज्ञा, सर्वनाम, विलोम, लिंग वचन, विराम चिह्न (पूर्ण विराम/अल्प विराम/प्रश्न वाचक आदि) का सचेत इस्तेमाल करते हैं।

3. पढ़ने के लिए विविध युक्तियों का इस्तेमाल करते हैं। जैसे-प्रिंट और चित्रों की मदद से अनुमान लाना, शब्दों को पहचानना, पूर्वअनुभवों व जानकारी का इस्तेमाल करते हुए अनुमान लगाना।

सीखने के प्रतिफल

हिंदी

बच्चे :-

1. पढ़ी, सुनी, देखी घटनाओं, कहानियों, कविताओं, समाचारों आदि के विषय में सवाल पूछते और बातचीत करते हैं, अपनी राय देते हैं व प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं

2. लगभग 2-3 वाक्यों के लेखन में संज्ञा, सर्वनाम, विलोम, लिंग वचन, विराम चिह्न (पूर्ण विराम/अल्प विराम/प्रश्न वाचक आदि) का सचेत इस्तेमाल करते हैं।

3. पढ़ने के लिए विविध युक्तियों का इस्तेमाल करते हैं। जैसे-प्रिंट और चित्रों की मदद से अनुमान लाना, शब्दों को पहचानना, पूर्वअनुभवों व जानकारी का इस्तेमाल करते हुए अनुमान लगाना।